చిలకమల్తి పుష్కరార్పన - గంగానది పుష్కరాలు గూల్ప

ABOUT GANGA RIVER PUSHKARAS BOOK

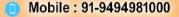
This book gives you information about basics of Ganga River Pushkaras, story behind Pushkaras, about 2023 Ganga River Pushkaras etc. This book explain about Ganga River Pushkaras in Telugu English Languages and Sri Chilakamarthi Prabhakara Chakravarthy Sarma also requested the Readers to support Swachh Ganga Pushkaras through this book.

పుష్కర ప్రాశస్వము ఏమిటి? పుష్కరాలలో ఏమి చేయాలి? గంగానది పుష్కర వైశిష్ట్రము ఏమిటి? గంగా స్వాన మహిమ ఏమిటి? పుష్మరాలలో ఏరోజు ఏమి దానం చేయాలి? తర్మణాలు ఎలా వదలాలి? పిండ ప్రదాన తీర్థ విధి మరియు పుష్కర కథ వంటి సమగ్ర విషయాలతో నేటి తరానికి సులభముగా అర్థం అవ్వడం కోసం ఆంగ్లము మలియు తెలుగు భాషలో చిలకమర్తి పుష్కరార్చన పుస్తకము ఇవ్వబడినది. ఈ పుస్తకము గంగా నది పుష్కర యాత్రికులకు అన్ని విధాలుగా ఉపయోగపడాలని **Sේරාජාර්තා...**

సుబీజన విదేయుడు

చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శ<u>ర</u>్త

CHILAKAMARTHI PRABHAKAR CHAKRAVARTHY SARMA



Whatsapp: 91-9494981000

CHILAKAMARTHIPRABHAKARCHAKRAVARTHY

Email: chilakamarthi@ymail.com

Visit us: www.chilakamarthi.com www.southindianastrology.org

పుసకములు కొరకు:

me හුරුමේ නිපාත්තු**නා බ**්බ්

ఆధ్యాత్మిక పుస్తక నిలయం, కోటగుమ్మం, రాజమహేంద్రవరం - 533101. పేశన్: 0883-2465253

<u>PUSHKARAARGHANA</u> RIVER GANGA **ತ್ರಿತ್ಕು ರಾಧ್ಯನಿ** OT TO SE

చిలకమల్తి పుష్కరార్చన

CHILAKAMARTHI PUSHKARAARCHANA

త్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్య

ఎం.టెక్, ఏం.జి.ఏ, జ్యోతిష్మ మార్వాండ, కాస్తు విద్యా విశారద

Chilakamarthi Prabhakar Chakravarthy Sarma

M. TECH, M.B.A, JYOTHISHYA MAARTHANDA, VAASTU VIDYA VISARADA

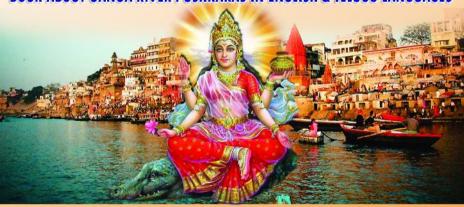




శుభమస్తు !!!

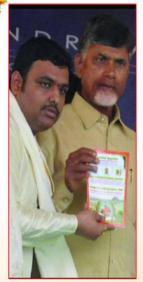
త్రీ -పెబ్లేకృత్ నామ్ సంవత్సర్ గంగాన్**బ పుష్మరాలు 202**3

BOOK ABOUT GANGA RIVER PUSHKARAS IN ENGLISH & TELUGU LANGUAGES



































यवाओं को ज्योतिष विज्ञान से जोड़ने के लिए अंग्रेजी भाषा में की रचना



సీఎంను కలసిన 'చిలకమర్తి'

వరం కల్పరల్: 🔊 తాలి ఆంగ్ల పం ಪಾಂಗತಕ್ಷ, ಮಂ దపల్లి, అన్నవ ರಂ, ಹಿಜ್ಞಯನಿ దేవస్తానాల అస్తాన పందాం గకర్త, జిల్లాకు



చెందన చీలర సీఎం జగనేకు పండాంగం ప్రభావం అందుక్తున్న ప్రకాశిక చక్రన్న శిష్ట్ ముగోవారం ఢిల్లీకి వచ్చిన సీఎం జగన్ మోహన దేశ్రమ మ్యాచట్లాగ్రకంగా కరిశాడు. శార్యవాము సంవర్గర సుధాంగాన్ని అందశాగు, తీయులలో ట్రహ్మాస్త్రూలాకు వేళుకున్న సీఎంకు అధీనందనలు శెలిసి, ఏమ కొండలూడి ఆశ్వుంతో రాష్ట్రం మరిం త్ర మైగకని సొధిందగలన్ను జాబావాన్ని ప్రక్షల మార్గం జీస్తున్న సంవర్ణలో ప్రశాసం మేరం సంవరం ్ట్లై వేశారు. జ్యోతిష రంగంలో విలకమర్తి వేస్తున్న కృషికి సీఎం అభినందనలు తెలిపారు.



সূত্র কর্মার ক্রমানার কর্মানার ক্রমানার ক্রমান

सार्थका र गयाना अर्था वर्षे राज्ये ब्रह्म र वर्षेत्र अर्थ प्रदेश के स्टार र वर्षेत्र अर्थ प्रदेश के स्टार वर्षेत्र र प्रदेश के स्टार वर्षेत्र

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने नहाता



















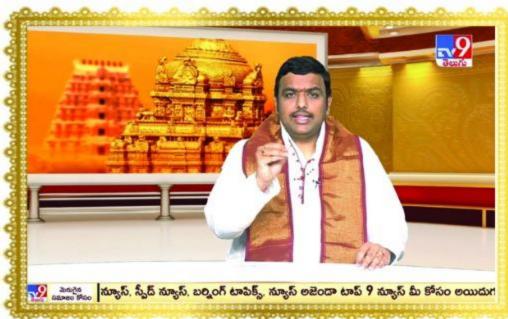










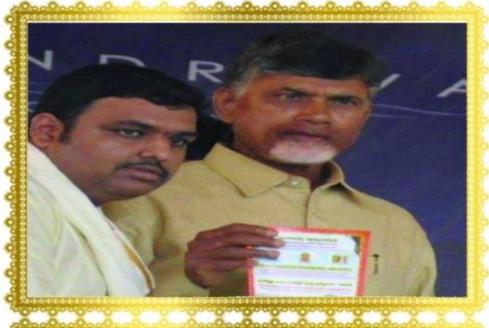


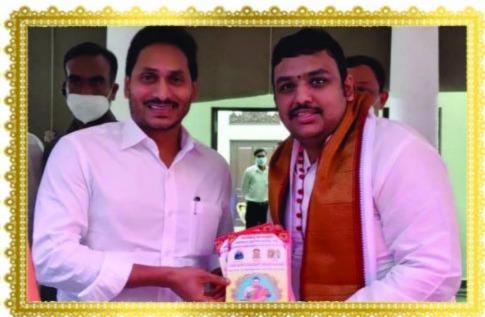




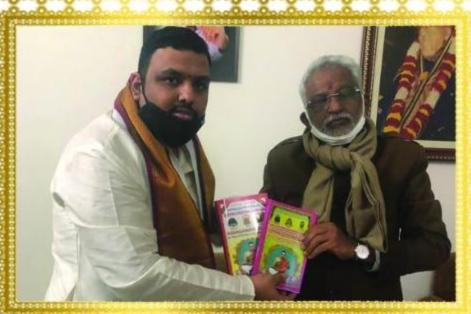


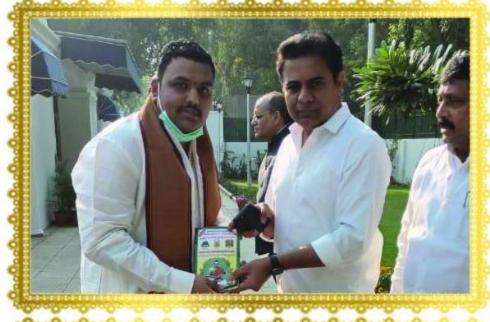








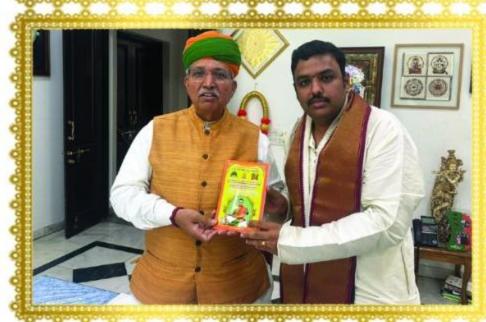














प्रकृति से जुड़ी हुई है गणेशजी की पूजा, मिट्टी से बनी गणेश मूर्ति की पूजा कर विसर्जन करने से मिलता है पुण्य : पंडित प्रभाकर चक्रवर्ती शर्मा

बई दिल्ली (अमृत इंडिया)। र्राज्याका में भारतर वाग एक विशेष कम है, यह महिन परवान तिम और भारतन किया का जिस सम् भो है। प्रमुख आधारिमक्षीवर् अञ्चलम् महित् व पंचांकर्ता पीता प्रशासर चलवती शर्मा ने बतते हैं कि चंद्रपर ग्रम में हरित्रतिका दत गरेश चतुर्वे, ऋषि पंचमी, परिवर्तन एकादंशी और अनंत पद्मवान चल वा पूजन किया जात है। भाइपद माम के तुकत पध की चतुर्वें को रागेश चतुर्वे या रागेश कर चारा जाता है। सन्तान धर्म में रणेताने की पूजा को अत्यंत पवित्र और प्रधान्य दिख एका है। रणेतानी की पूजा प्रकृति से जुड़े हुई है। इस्टेन्स् गणेताजी की मिट्टे से करी हां मृति को हो पूजा करने चहिए। टर ऑफ फींस इस्तेमल करन शानों के बिरुद्ध है। गरेतानी की पूजा में पिट्टी, फार्च या रहेना ही सर्वजेश है। पीडर प्रधावन कराते हैं कि रपोराजी की पूर्ति अपने हाथ से ज्याद बारो नहीं होनी प्रतिका जिलनी रवे पूर्त लगरी उसे बद



अनुष्ठ, जनन यत्र-शेम और जनन चोष चढ़न पड़न है। गर्गकानी की पूजा पूरव, पर्ती, पाम से की जाती है। ये सारे प्रकृति के स्वस्प ही हैं। रपेतजी की पूजा तीन, पांच, स्वत, नी, प्यतर, इस्रोस धर्म के अनुसार करते हैं। ये पूजा तोने के ब्यद केवल

विद्वी के बने हुए गणेश को चनी में जिसतीन करते हैं। इसका अर्थ यह है कि सृष्टि में हर चीत सिद्धी से उत्का होता है और वह व्यक्ति मिट्टी में ही वित जाता है इस्तीनर हा आठवे

प्रकृति से जुड़कर पर्याकरण के हित करते हुए घरखान की गोबा करते हुए

विद्यों नेप जो हो जो केश किया है। विद्यों नेप जो हो जो केश वन्त्र पत्र हैं। पर्याण चनुर्धी के दिन पूजा करने से पूर वर्ष विपन दूर होकर विकास हैं। चंद्रता है।व्यवस्थ_ चंद्रत प्रचावर चक्रवाती ने यह भी बताया कि भगवान गणेश को

एपाध्यक्ष, विध्यसम् जनायः जाता गरोग चनुधी के दिन करते हैं उनको सात भर में जितने भी कार्य में विच्न होते हैं विच्न दूर होकर विजय प्रम होती है। रूपेश जो की पूजा गरेता चतुर्थी के दिन करने से विद्यार्थी को विद्या, व्यवस्त्री को व्यापार में और शादीशुद्ध व्यक्ति को उनके संस्थार के जीवन में जो भी हमाग् है ने सभी पूर्व होती है। जिल्लाची को जिल्ला मिलने के जिल्ला गरेत जो की पून करना अलंत सुध मान गया है। पॉडरा प्रधाकर पत्रवर्ती पर भी बतते हैं ज्योतिप राहत के अनुबार गंगेश कुथ, मंत्रत और केंग्रु के स्वामी है इसलिए गरेताची की पूजा से सिद्धि, बृद्धि, ज्ञान और मोख जिल्ला है। गरेत चतुर्वी के दिन पुरागों के अनुसार गर्नेश जो का जन्म हुआ है, गर्मेत जों के बात, पूजा, कथा के अनुसार जिलानी ने अग्रम गर्गम जी का फिर बरकं तीन प्रतिशत करते हैं। इस काटना और उस सिर को राजी का नित लाकर उनको पून प्राण देन और नपोतानी की पूना को जिप्स हटाने जली पूना और सार देखताओं से पारने सरोजाओं स्टिक्टरे हैं। यह सब देशकर कर्तिक अपनी हार को स्वीकार कर लेते हैं और यणेशजी की पूजा में पहला पूजा गणेत का होना सभी एक दिन हुआ है। गणेत को गर्माधर्यत बनाकर हर पृज्य में गर्मेजनी का पूजा होना धन लेते हैं।

पूजा में आकृष्ण के रागतावाध्यान को कथा और रागेशाजी की गणाध्यांकी मिलने की कथा विशेष रुप में बताय जात है। ये कथ सुनकर बच्चों में भगवान के प्रति ग्रेम और विश्वास बहुता है। इस कथा के अनुसार जब कार्तिक और गणेत के बीच में देवलाओं में तीर्थ क्षेत्रों में जो पहले नहाके आपने सबसे पहले कर्तिक अपने पहल लेकर गणेशाजी से पहले हर वीर्थ में नहाने के लिए पहुंचते हैं। गणेशाजी अपने आकार और बाहन ना होने मोचकर, अपने मता-पित की संब ही मलंतीची का पुग्य मिलेश का संस्थार शिव-पार्वती को नमस्कार

नईदुनिया इंतर, वृज्ञार 10 अक्टूबर 2018

अब अंग्रेजी में भी धर्मधानी उज्जयिनी का पंचांग

उज्जैन। नईदुनिया प्रतिनिध

जल्दही उर्जनसे ओर्जी भाषा में पंचांग का प्रकारन होगा। दक्षिण भारतीय विद्वन प्रधावस चक्रवर्ती उन्तेन सेपहला जीजी भाषा का पंचीम प्रकाशित करने जा को है। इसका उद्देश्य देश विदेश में उन्तरिमी के जीरो रेखांश की गणना का पहल्य समझना है। वर्तपान में उन्जेन से हिंदी भाषा के अनेक पंचांग प्रकाशित हो

जेरे रेखांत पर अवस्थित उन्जविनी अमारिकाल सेकाल गणना का केंद्र रही 🛮 कर रहे हैं। वकील प्रधावन चीत्र शुक्त 🖟 उनका दुस्ता पंचांग हो ग, जो औरवी में 🛮 अलग पंचांगों में धिन होती है।

दक्षिण भारतीय विद्वान कालगणना की नगरी पर कर रहे शोध है। स्थानीय विद्वान करीब 100 वर्षों से प्रतिषदा पर शहर का पहला आंगर भाषा विश्वा आएग।

गरे हैं। यह पहला मीका है जब टक्षिण धारतीय विद्वान पं.चिलकमर्नि प्रधाकर

चक्रवर्त उन्जेंग से

अंग्रेजी में पंचांग

वीते कुछ महीनों से वे जीगे रेखांश.

विभिन्न पंचारों का प्रकारन करते आ का पंचार प्रकाशितहोगः।

एमटेक किया, नौकरों के माथ शायोंका अध्ययन एमटेक तक शिक्षित प्रधावर अविनिद्या

रेस लिमटेड में सीनेज प्रोडेक्ट का प्रकाशन करेंगे। मैनेजर के पट पर कार्यरत हैं। वें अब तक वस्तु, न्येतिय, कुंध मेला तथा नटियों पर नी प्रतके लिख चके हैं। पूर्व इहर के मध्य से में प्रधानर देश का पहला उसीची पंचांग मुक्तने वाले कर्क रेख आदियर अध्ययन । चना चुके हैं। उन्हेंन से प्रकाशित यह । है। इसलिए तिथि की यह वह अलग-

तिथियों पर मनांतर बना रहेगा इंद्रीर आने के बाद उन्होंने उन्तेन की काल गगन पर शोध की शुरुआत की। उसेने बताया पंचागें में तिथियाँ का भेट कभी खत्म नहीं हो सकता है। क्येंकि सूर्य की उटकालीन रणना से पंचान में तिथि का निर्धारण होता है। भारत विशाल देश है, वहां विभिन स्थानों पर सूर्य के उदयका समय अलग

Engineer-cum-astrologer scripts 'panchangam' in English

Prabhakar Sharma says his almanac will help the younger generation a lot

ప్రపంచములోనే..

RATULAPUDI SRINIVAS

Call it science or a mere be Call it science or a mere belief, many people believe in
consulting an almanac (panchangam) before taking up
any important work, and go
to meet astrologers to fix
'muhurtam'. Due to heavy
demand, astrologers have
become so busy that sometimes people don't get appointment for months.

Many people make
Many people make
to the astrologer,
vedic pundits and priests,

vedic pundits and priests, who fix 'muhurtams' after

going through the 'panchangam'. Chilakamarti Prabhakar Chakravarthy Sarma, an en-

इज्जैन। नईदुनिया प्रतिनिध

विज्ञान में भी बुनाओं की क्लिन्समी

वेद्धी जा रही हैं। कालरणना की नगरी उन्तयिनी इसकी सक्षी वनी है। बहा

32 स्वलंके युवा विक्रम भारतीय विद्वान ने उन्नेय की रामना से अंग्रेनी धामा में पहला पंचीर चनवा है। 15 ननवरी

को मकर संस्थाति का इसकी पहली प्रति जावा महाकाल को समर्थित को जाएती।

क्रमके बाद शहर के चुनिंदा एक स्टोर पर



Prabhakar Chakravarthy

gineer-cum-astrologer, has gineer-cum-astrologer, has written 'panchangam' in En-glish for people to go through it easily. He was the first persons to have written South Indian English Pan-

changam a few years ago. Chief Minister Y.S. Jagan Mohan Reddy recently re-leased the English panchan-gam. Union Minister of Tou-rism and Culture G. Kishen

युवाओं को ज्योतिष विज्ञान से जोड़ने के लिए अंग्रेजी भाषा में की रचना

दक्षिण भारतीय युवा ने उज्जैन की गणना

Reddy recently presented an award to Mr. Sarma for his literary works on tourism, astrology, panchangam, vaastu and pushkarams.

"Astrologers and purohits fix the muhurtam after going through the date of birth, thithi, horoscope, positions of the planets and give predictions. My English 'panchangam' will help the people, particularly the younger changam will help the peo-ple, particularly the younger generations a lot," said Mr. Sarma, who is presently working with an MNC in New Delhi.

"Reading Panchangam is an art. The south Indian En-glish almanac will be helpful to the software professionals to fix 'muhurtams' to join in jobs, go abroad and find aus-picious days for gruhapravesams. My works are available www.chilakarmarthiwww.southindianas .org," Mr. Sarma, a trology.org," Mr. Sarma, a native of Rajahmundry, told The Hindu.

Book on Godavari Pushkarams released

tajahmundry: A book highlightng the significance of Godavari ushkarams, Chilakamarthi ushkara Archana," written by hilakamarthi Prabhakar hakravarthy, was released here n Monday.

Godavari Maha Pushkarams rill be held between July 14 and 5 (As per Chilakamarthi Pan-

The book, Chilakamarthi ushkam Archana, covered all imortant aspects of Godavari ushkarams and Pushkara Pooja idhanam, Chilakamarthi has repared and given a simple chart in this Pushkara Archana book hich specifies the importance of ushkara Snana as per the Gakshatrabased on the Sloka Praana taken from Brahma Pu anam and Godavari Vishistyam.

Highlights significance of 'Puskara Snanam'



Chilakamarthi Prabhakar Chakravarthy releasing 'Chilakamarthi Pushkara Archana' book in Bajahmundry on Monday

According to the Pushkara chart, people who take both in the river during Pushkarams, will get Vishesha Phala from their ances tors and their sins will be completely vanished. The people taking holy dip in the river will get

Vishesha Phala. Chilakamarthi is a Panchanga Kartha. He had written Pan-chanagam in English. It has received awards as it is the first English Panchangam with Samagra Muhurtha Vidharam, He had also written a book on Vaastu. He is currently working aspipeline en-gineer in Dodsal Company, Dubai.

In Dubai, people from Gujarat, Kerala, Telangana, Andhra Pradesh, Mahurashtra and Delhi approach him for predictions based on astrology.

Tue, 07 July 2015 HANS@INDIA epaper thehansindia.com/c/5799789

से बनाया अंग्रेजी भाषा का पहला पंचांग आत का युवा केवल खेल, अञ्चपुनिक तकरीक, अधिनय, फैजन आदि के तकनाक, अवस्त्रप, पञान आद क क्षेत्र में ही समालता के मापदंड स्थापित नहीं कर नहां। धर्म-अध्यानम व ज्योतिष

प्रशासिक प्रधान के सम्बद्धभाकर राक्त वर्षे यह उपानका होगा। नगरक्रमी विना मोई शुक्क दिए ऑनलाइन भी इस पंचाय को

पंचानकर्ता चित्तकराधी क्रथाकर पक्रवर्ती ने बताया दक्षिण भारत में बीते स्वतं स्वरूपें से उनका पंचांग प्रकाशित सी रक्षा से। लेकिन जनर ध्वरत में यह क्ट उनका प्रदान पंचांग है। 'श्री उन्हेंन क्टाकड़न पंचांग' नाम से प्रकाशित क्षर पंचांत पुरी तहर अंग्रेजी भाषा में ही यक्र कर्ती ने इस पंचार की रचना युवाओं के लिए की हैं। उनका कहना है कि युवा धर्म प्रत्या से जिला होते जा रहे हैं।

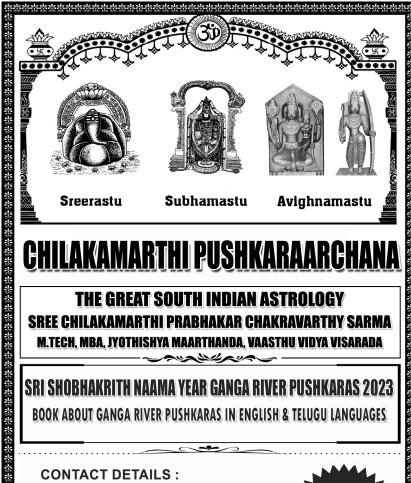
उन्हें परेश्वमी होती हैं। इसलिए प्रहों की राजन को सरल रूप में अंग्रेजी धाषा में प्रकारित किया है। अधिक संख्या में दवा इस पंचाग को देख व पड़ सके इसलिए निशुल्क ऑनल्वान सुविधा धी उपलब्ध कर्माई है। इसे chilakmarthi.com

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय

संस्थाओं ने नवाजा अवित्रकारीस निविध्ये उउन्हरीत में सीनियर मैनेजर के घटचर कार्यस इभाकर चक्रवर्जी तमरोक तक शिक्षित है । तिरुपति तेव स्थानम् के संस्कृत सरभान से उन्होंने धर्मशास्त्र, ज्योजिय तथा सिद्धात की ग्रिक्त प्राप्त की । इसके बढ़ वचान का वकारान शुरू क्रिया । वर्मकारम व ज्योतिय के संख में इतनी कम आयु में काम करने के निर उन्हें वडर बुक औक रिकॉडर्स जीनियस बुक औक रिकॉडर्स आदि







<u>akamarthi Pushkaraa</u>i

THE GREAT SOUTH INDIAN ASTROLOGY **SREE CHILAKAMARTHI PRABHAKAR CHAKRAVARTHY SARMA**

SRI SHOBHAKRITH NAAMA YEAR GANGA RIVER PUSHKARAS 2023

BOOK ABOUT GANGA RIVER PUSHKARAS IN ENGLISH & TELUGU LANGUAGES

CONTACT DETAILS:

- **©** 9494981000
- chilakamarthi@ymail.com
- www.chilakamarthi.com
- f chilakamarthiprabhakarchakravarthy
- 9494981000

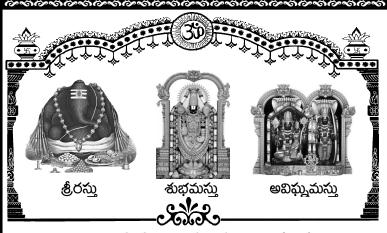


QUALIFIED ASTROLOGER IN DHARMA SHASTRAM & JYOTHISYA SHASTRAM

FROM

SREE SITA RAMACHANDRA SWAMI DEVASTHANAM SANSKRITA PATHASALA, BHADRACHALAM, TELANGANA STATE.

(AFFILIATED TO SANSKRITA BHASHA PRACHARINI SABHA, CHITTOOR)



- జ్యోతిష్మ మార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద - తిరుమల పీఠం, స్టార్ వరల్డ్ లికార్డ్, తెలుగు బుక్ ఆఫ్ లికార్డ్క మలియు వండర్ బుక్ ఆఫ్ లికార్డ్స్

త్రీ శాేభకృత్ నామ సంవత్యర గంగా నదీ పుష్కరాలు- 2023

పుస్త^{క్ర}ముల కొరకు గొల్లపూడి వీరాస్వామి సన్ పజ్లషర్మ్ అండ్ బుక్ సెలర్స్ కోటగుమ్మం, రాజమండ్రి - 533101. ಫ್8್ : 0883-2465253



బ్రహ్హాత్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త, M.Tech., M.B.A., ఆధ్యాత్తిక వేత్త మరియు జ్యోతిష్య శాస్త్రవేత్త

పుస్తకముల కొంరకు :

9494981000

chilakamarthi@ymail.com

www.chilakamarthi.com

chilakamarthiprabhakarchakravarthy

9494981000

H.No.: 4-47, බ්කාෆීව. ರాజమండ్రి.







CHILAKAMARTHI.COM. ABOUT SWACHH BHARAT AND SWACHH PUSHKARAS

Dear Readers.

"YATRA SUCHI TATRA LAKSHMIHI" The law of Vedas regulates the Social, Legal, Domestic and Religious customs of Hindus to the present day. One of the strata depicts the importance of cleanliness. Where there is suchi (cleanliness) there will be money. The same should be applied to modern scenario. Cleanliness is portraying image of the country. Puranas/SanathanaDharmas (Hinduism) havegiven top most priority to cleaning (Swachhtha). People from the past used to construct houses without effecting environment. People used to construct houses as per vaastu. Here vaastu means planning their lives and constructing house with proper usage of all five elements of nature and not effecting the environment. In olden days particularly in villages of India, people used to plant trees in their house and premises. Plants like Tulasi (Queen of herbs) are used to be found in almost every house earlier. Tulasi has healing property of the mind, body and spirit which is regarded in Ayurveda as an "elixir of Life", which is well known to promotelongitivity. Also there are some of the plants people plant in their houses and villages like Neem, pomegranate (Anaar), Lime, Orchid Trees etc. People used to plant Asoka trees, banyan, amla (gooseberry), coconut and other big trees in village. Ashoka tree has very significant medical properties particularly related to gynec problems. Some of the plants are worshiped as a goddess in India. All these trees possess Ayurvedic properties and help in keeping the environment clean. In olden days' people in India used to clean their houses every day early morning. They used to visit temple or do puja in house. Particularly in grahanas (eclipse) time people used to clean their house and other premises 2 to 3 times a day. People in India have got cleanliness in their blood. Now a day, being in rat race situations, particularly young generation, they are unable to manage or do the minimum cleaning which they need to do in their own premises. I am not saying all the young generation is like that, but mo

I, Chilakamarthi Prabhakar Chakravarthy Sharma, Panchanga Kartha, give my complete support through my books, websites www.chilakamarthi.com&www.southindianastrology.org to PM of India Sree Narendra Modi Ji Swachh Bharat Mission. On behalf of this, I extend my complete support to Mission Swachh Bharat. On behalf of this event in particular I would like to suggest my readers to make it A Swachh Ganga River Pushkaras in year 2023-24.

MISSION SWACHH GANGA RIVER Pushkaras BY CHILAKAMARTHI PRABHAKAR CHAKRAVARTHY SARMA:

KINDLY FOLLOW THESE THINGS AT THE TIME OF GANGA RIVER PUSHKARAS IN 2023-24

- Pushkaras is meant for an auspicious time and people should go for PushkaraSnana. They
 have to go for removing their sins and to pray for the Devatas and Pitrudevatas blessings, but
 not just for bathing in river with soap/shampoo. So never carry soaps/shampoo for bathing in
 river for pushkarsnana. (Instead plan to bath with natural products as prescribed in SnanVidhi
 of Pushkaras with Turmeric (Haldhi), Gandha and Neem leaves which are very good for
 human body and environment)
- 2) Don't throw any waste in river like papers, plastic, covers etc. Throwing of the materials used for worship or rituals in the river is a sin.
- 3) Urinating in river is a sin. Stop doing that kind of activity.
- 4) Do not wash your clothes on the river banks. This should be avoided.
- 5) Use dustbins to throw Garbage.
- 6) While keeping or floating deepas you should float them in deep made by leaves (banana leaves).
- "Keep clean, let us create Swachh Bharat-good environment to future generation" The best time to start this is today and the clock strives hours to follow the above.

Thanks for reading and I will be very happy if you follow this.



SARWE JANAHA SUKHINO BHAWANTU

CHILAKAMARTHI PRABHAKAR CHAKRAVARTHY SARMA

M.Tech, M.B.A, JYOTISHYA KOVIDA,

DHARMASHASTRA KOVIDA, VIDYA BHUSHANA
SENIOR ENGINEER, PANCHANGA KARTHA

WWW.CHILAKAMARTHI.COM

WWW.SOUTHINDIANASTROLOGY.ORG



₻₲₻₲₻₲₻₲₻₲₻₲₻₲₻₲₻₲₻₲₻₲



చిలకమల్తి



స్వచ్ఛ భారత్



"యుత్ర స్వచ్ఛః త్వత లక్ష్మీక" ఎక్కడయితే స్వచ్ఛత అనగా శుథ్రత ఉందునో అక్కడే లక్ష్మీదేవి నివసించును. మన యొక్క వేదములలో మరియు శాస్త్రములలో స్వచ్ఛతకు చాలా ప్రాధాన్యత తెలిపినారు. మన పురాణాలలో మరియు ఇతిహాసాలలో స్వచ్ఛతకు మన పూర్వీకులు ప్రాధాన్యతనివ్వడం గమనించవచ్చు. ముఖ్యముగా మన సనాతన ధర్మములో పందుగల యందు, వివాహాదీ పోడశ కర్ముల యందు మన పూర్వీకులు మరియు అయుర్వేరమందు స్వచ్ఛతకు ప్రాధాన్యతనివ్వినారు. భారతీయులు వాస్తు శాస్త్రమందు మరియు అయుర్వేరమందు స్వచ్ఛతకు ప్రాధాన్యత కెలిపినారు. ఇదేతాకుందా మనకు ఎక్కదో భూమికి దూరంగా సంభవించేటువంటి గ్రహణ సమయములలో, గ్రహణముల వలన మనయోక్కు పరిసర వాతావరణములలో మార్పు సంభవించునని వాటీ వలన ఎన్నో అనారోగ్య సమస్యులు ఏర్చటునని తెలిపిన మన పూర్వీకులు ఆ గ్రహణ సమయం తరువాత ఇంటి మరియు పరిసర ప్రాంతములను తుద్రపరచటం ప్రతి ఒక్కరికి తెలిసిన విషయం. దీనినిబట్టి గమనించగా భారతీయుల రక్తములో స్వచ్ఛత అనేది ఉన్నది. అయితే కలియగములో ముఖ్యముగా మన యువతలో కొంతకాలముగా నేదీ అధునికత వలన మరియు ఉద్యోగరీత్యా కూడా స్వచ్ఛత యొక్క ప్రాధాన్యత తగ్గముఖం పట్టడం జరిగింది. దీనిని పున్ఫర్మిల్ఫంచడం కొరకై మన భారతదేశ ప్రధాని అయినటువంటి త్రీ నరేంద్రమెదీ స్వచ్ఛ భారత్ అనే అంశాన్ని ప్రారంభించడం నేను ఒక శుభపరిణాముముగా భావించుచున్నాను. అందువలన స్వచ్ఛ భారత్ యొక్క కృష్టిలో నా వంతు పాత్రగా నా పాఠకులకు నా పుస్తకముల ద్వారా స్వచ్ఛ భారత్ యొక్క ప్రాధాన్యతన తెలియజేయుచున్నాను. దీనిలో ప్రతి ఒక్కరు వారి యొక్క పారు పోషించవలసిందిగా కోరుచున్నాను.

2023-24 శ్రీ శోభకృత్ నామ సంవత్సరము నందు నా పాఠకులందరు స్వచ్ఛ గంగా నదీ పుష్కరాలు ఆచరించవలసినదిగా కోరుచున్నాడు. స్వచ్ఛ గంగానది పుష్కరాలనగా మీరు వెళ్ళి గంగా నదిని శుక్రం చేయనక్వర్లేదు. గంగా నదికి పుష్కరాలు జరిగే సమయములో యీ క్రింది విషయములను (పరి ఒక్కరు పాటించినచో వారు స్వచ్ఛ గంగా నది పుష్కరాలను ఆచరించినవారగుదురు.

స్పచ్చ గంగా నది పుష్కరాలకు పాటించవలసిన విషయములు

- 1. పుష్కర న్నానం పుష్కరాలలో అక్యంత ప్రాధాన్యతతో కూడిన అంశం పుష్కరస్నానం. ఈ పుష్కర స్వానమందు ప్రతి ఒక్కరు పుష్కరములు జరుగు నదియందు స్వానమాచరించవలెను. పుష్కరాలలో పుష్కర స్వానమందు పిత్పదేవతలను మరియు దేవతలను స్మరించి వారికి అర్హములు విడిచిపెట్టటవంటి గొప్ప సమయము. మీరు స్వానమాచరించనప్పుడు పసుపు, గంధం, నదీడ్రవాహం క్రింద నున్న మట్టితో లేదా వేపాకులతో మాత్రమే పుష్కర స్వానం చేయవలెను. ఇలా చేసే స్నానం ఆరోగ్యకరం మరియు శాస్త్ర సమ్మతి. అంతేకాని కేవలం సబ్బు మరియు షాంపూలతో స్నానం చేయదం పుష్కర స్వానం కాదు.
- 2. పుష్కరస్నానానంతరం అక్కడ నదిలో బట్టలు ఉతకవద్దు.
- 3. పూజాది కార్యక్రమములలో మిగిలిపోయిన వస్తువులను చెత్త బుట్టలలో మాత్రమే పారవెయ్యండి.
- 4. దీపాలను నదిలో విడిచి పెట్టేటప్పుడు అరిటాకులలో ముఖ్యముగా బియ్యపుపిండితో చేసిన దీపాలను మాత్రమే విడిచిపెట్టవలెను. కొబ్బరి చిప్పలలో దీపాలు వదలరాదు. బియ్యపుపిండి ప్రమిద ఆ నదిలోని జీవరాశులకు ఆహారముగా ఉపయోగపడును.
- 5. పుష్కర స్నానమందు నదిలో మలమూత్ర విసర్జన మహాపాపము.

పైన చెప్పిన విషయములను పాటించుట వలన గంగా నది కాలుష్యానికి లోనవదు. గంగా నదిని కాలుష్యరహితముగా చేసి మన తరతరాల వారందరికీ స్వచ్ఛ గంగా నదిని అందజేయాలని, మరియు యీ శ్రీ శోభకృత్ నామ సంవత్సర మందు స్వచ్ఛ గంగా నది పుష్కరాలు పాటించవలసిందిగా కోరుకుంటూ......



మీ... సుభీజన విధేయుడు చిలకొమేల్తి ప్రోభాకొరో చేక్రోవేల్తి తే<u>ర్త</u> www.chilakamarthi.com



ঽ৽৾৾৽৻৵৻ড়য়ড়য়ড়ড়ড়ড়ড়ড়ড়ড়ড়ড়ড়ড়ড়ড়ড়ড়৾৾৽

(ABOUT AUTHOR)



CHILAKAMARTHI PRABHAKAR CHAKRAVARTHY SARMA Senior Engineer by profession, born on 07th Sept 1986 at Rajahmundry, AndraPradesh is the author of the book "The great South Indian Panchangam-Chilakamarthi Panchangam" (Almanac). He has written The world's first English Panchangam with Samagra Muhurtha Vidhana (means an easy way of fixing Muhurtha for all occasions). He has written the same Panchangam in Telugu version with Samagra Muhurtha Vidhanam.

Prabhakar Chakravarthy qualified B.Tech in **Mechanical Engineering** from Bhadrachalam, Telangana and M.Tech in University of Petroleum and Energy studies, Dehradun .In Bhadrachalam while studying Engineering simultaneously he did **Dharma Shastra Kovidha**,

Jyotisya Kovidha and Vidya Bushana from Sree Seetha Ramachandra Swami Vaari Devastanam Sanskrit Paatasala, Bhadrachalam. He studied these from his Guru Sree S.T G. Sreeman Narayana Charyulu (Sanskrit Pandit, Bhadrachala Devastanam). He has written exams of Dharma Shastra Kovida, Jyotisya Kovida and Vidyabushana from Chittoor Sanskrit Baasha Pracharani Sabha. Chilakamarthi is currently working as Vice presodent in Oil and Gas sector.

Prabhakar Chakravarthy Sarma explored Bharth Yatra. Sarma Visited 12 Jyotirlinga, 18 Shakti Pheetas, 7 Vaishnava Kshetra and 7 Moksha kshetra by the age of 25. These Yatras kindled him the thought to write Panchangam in English. While doing yatra he observed lot of foreigners getting attracted to Indian cultures, Traditions and Shastra. To attract younger generation of India, English being the common language, Chilakamarthi had written the English Panchangam with Samagra Muhurtha Vidhanam in year 2012.

People have appreciated his astrological predictions which added "Feather to his CAP". He says that, all these accomplishment is possible because of the blessings of Almighty, Guidance of Guru and Support of Parents. Chilakamarthi Prabhakar Chakravarthy Sarma says that, our old sages have done lot of research and gave us in depth knowledge of Veda, Shastra's and Puranas. Without knowing it completely no one should comment on them. These concepts reveal the best ways to live or plan our lives, so that it will be benefiting both human life and nature. In year 2013, at Rajahmundry Local newspapers he had predicted that Mr. Narendra Modi will be the future PM of India and also predicted few names, who will become CM for the states. All his predictions have come true. With the guidance of his Guru Sree S.T.G Sreeman Narayana Charyulu he has written the Panchangam with Samagra Muhurtha Vidhanam in Telugu version in 2013. He released his first Panchangam at the age of 25. Being a Engineering Manager he could eke out time in writing books on Panchangam (Almanac), Vaastu,pushkaras,rivers and Yatras.

ACHIEVEMENTS / AWARDS:

- \checkmark Received Samskritika shaka award in 2022 from Shree Kishan reddy for his works
- ✓ Received Ugadi Puraskar from Govt of Andhra Pradesh in 2023 at AP Bhawan,New delhi.
- ✓ Received Wonder Book of World Records award for English Panchangam.
- Received Star World Records certificate for his English Panchangam.
- ✓ Received Jyotishya Marthanda award from Tirumala Pheetam.
- Received the best student of Bhadrachala Devasthana Sanskrit Paatasala.

He had also written and launched "The Great Indian Vaastu Shastra for a Common Man", book on Vaastu. Chilakamarthi books are available for free download in website www.chilakamarthi.com.

త్రీరస్తు !

శుభమస్తు !!

అవిఘ్నమస్తు !!!



శ్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్మ అంధ్రప్రదేశ్**లో** రాజమండ్రి నందు జన్మించారు. ఆయన వైస్ (పెసిడెంట్గా ఆయిల్ అండ్ గ్యాస్ సెక్టారులో ఢిల్లీలో పనిచేస్తున్నారు



ఆయన బి.టెక్, ఎమ్.టెక్, ఎం.బి.ఏ. చేశారు. ఆయన ఇంజనీరింగ్ భదాచలంలో చదువుతున్న సమయమందు త్రీ సీతారామచంద్రస్వామి దేవస్థానం వారి సంస్కృత పాఠశాల భద్రాచలం నందు ఆయన గురువుగారు శ్రీ ఎస్.బి.జి. శ్రీమన్నారాయణాచార్యులు గారి వద్ద సంస్కృతం, ధర్మశాస్త్రం, కోవిద, జ్యోతిష కోవిద మరియు విద్యాభూషణ (ముహూర్త భాగము) వరకు అధ్యయనం చేసినారు. చిత్తూరు సంస్కృత భాషా ప్రచారిణీ సభ వారి పరీక్షలు వ్రాసి ధర్మశాస్త్రం మరియు జ్యోతిషము నందు ఉత్తీర్లత పొందినారు. అయన దెడ్రూడూన్లో ఎమ్.టెక్, చేసినప్పుడు మరియు ఉద్యోగ కాలమందు (2007–14) భారత యాత్రలు చేశారు. ఆ యాత్ర సమయం నందు ఇతర దేశస్థులు పాశ్చాత్య సంస్కృతి, సంప్రదాయం పట్ల మక్కువ చూపించడం మరియు మన దేశస్థులు పాశ్చాత్య సంస్కృతి వైపు వెళ్ళడం గమనించి, శ్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్మ మన శాస్త్రం యొక్క ప్రాధాన్యత డ్రపితి ఒక్కరికి తెలియాలి. ముఖ్యంగా మన భారతీయ యువతకు మరియు పాశ్చాత్య దేశస్థులకు మన సంస్కృతి సాంప్రదాయం యొక్క విశిష్టత అవగతం కావాలనే దృక్పథంలో పంచాఙ్గము మరియు వాస్తు శాస్త్రమును ఆంగ్లములో బ్రాయదం జరిగింది.

త్రీ చిలకమర్తి [పభాకర చ(్రకవర్తి శర్మను 2013 సంవత్సరము నందు భ(దాచల దేవస్థానం సంస్కృత పాఠశాలవారు ఉత్తమ విద్యార్థిగా సత్కరించడం జరిగింది. అయన కృషికి శ్రీ భగవత్ రామానుజాచార్యులు వారు స్థాపించిన 74 పీఠములలో ఒక్కటైనటువంటి తిరుమల పీఠం తరపున జ్యోతిష్య మార్తాండ అనే బిరుదుతో ఆయనకి భద్రాచలం నందు తిరుమల పీఠం అధ్యక్షులు అయినటువంటి శ్రీ ఎస్.టి.జి. శ్రీమన్నారాయణాచార్యులు గారు సత్మరించడం జరిగింది. ఈయన కృషికి గాను 2014 నందు స్టార్ బుక్ ఆఫ్ వరల్డ్ రికార్స్, తెలుగు బుక్ ఆఫ్ రికార్ట్స్ మరియు వందర్ బుక్ ఆఫ్ రికార్డ్స్ ఆయన పంచాఙ్డమునకు దక్కినవి. 2014 అక్టోబర్ నందు చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్మ "ది (గేట్ ఇండియన్ వాస్తు శాస్త్ర ఫర్ ఎ కామన్ మెన్" అనే శీర్వికతో వాస్తు పుస్తకమును చ్రాశారు. 2022లో చిలకమర్తికి కేంద్ర ప్రభుత్వం సాంస్కృతిక శాఖ ద్వారా అవార్డు లభించినది. 2023లో ఆంధ్ర్రపదేశ్ స్రాభుత్వం ద్వారా ఢిల్లీలోని ఏపి భవన్లో ఉగాది పురస్మారం లభించినది. చిలకమర్తి వారి పుస్తకములు ఇంటర్ నెట్ నందు Website: www.chilakamarthi.com ద్వారా ఉచితముగా డౌన్లోడ్ చేసుకొనవచ్చును.

෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯

I also thank my grandfather Sree Chetanananda Bharathi Swami (Sree Chilakamarthi Subbarao) for his blessings.



SREE CHETANANANDA BHARATHI SWAMI (MY GRAND FATHER)



SREE S.T.G. SREEMANNARAYANA CHARYULU (MY GURU)

I sincerely thank
My Guru for His constant support
in completing this Panchangam.
Because of my Guru Moral Support
I have completed Panchangam

SPECIAL THANKS TO MY WIFE (C.POORNIMA) FOR HER SUPPORT.

෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯෯

డిం శ్రీ గురుభ్యోన్నమః హలః ఓం। శ్రీ చేతనానంద భారతీ స్వామి నేన్నమః॥ యదానంద రూపమ్ ప్రకాశస్వరూపమ్ నిరంత ః ప్రపంచం పలిచ్చేద శూన్యమ్। అహం బ్రహ్మవృత్త్యెక గమ్యం తులీయమ్ పరబ్రహ్మనిత్యం తదై వాహమస్కి॥



నారాయణ సమారంభామ్ శంకరాచార్య మధ్యమామ్ । అస్త్రదాచార్య పర్యంతామ్ వందే గురు పరంపరామ్ ॥



ල් ఎస్.టి.සి. ල්කාබ් ලංගාණ සංජ්යා ලංගා (කා හරාකු ලංගා)

మా గురువు గాలి యొక్క మలియు మా తల్లిదండ్రుల యొక్క ఆశీస్కులతో యీ పంచాజ్గమ్ పూల్తి చేయబడినది. భద్రాచల శ్రీరామచంద్రుల వాలి పాద పద్షములకు యీ పంచాజ్గమ్ అంకితమీయబడినది.

Sri Chilakamarthi Prabhakar Chakravarthy Sarma M.Tech, M.B.A, Jyothishya Maarthanda, Vaastu Vidya Visarada

PUSHKARS OR PUSHKARAM

Pushkaram is word derived from pushapustho dhato. Pushkaram means twelve years pushkaram also means holy water. Pushkaram is known for the punya snan. The Pushkaram for each river come once every twelve years and lasts so long as the Jupiter remains in the corresponding Zodiac sign (generally, for one year). The first twelve days of guru entering a raasi are known as Pushkaram for that particular river. It is believed that during the above period of twelve days, "Pushkar" the person, who is imbued with the power to make any river holy, will travel with Jupiter. As Jupiter moves from one Zodiac house to another this pushkar travels in each river as mentioned in below chart.

RAASI:Meena (Pisces) RIVER:Pranhita (Parineeta) HOLY PLACE:Xalleshwaram, Vemannapalli(T.S))	RAASI: MESHA[Aries) RIVER:Ganga HOLY PLACE:Gangotri (U.A), Prayaga(U.P)	RAASI:Mithuna(Gemini) RIVER:Saraswati HOLY PLACE:Prayaga (U.P)		
RAASI:Kumbha (Aquarius) RIVER:Sindhu (Indus) HOLY PLACE:Ladhak	PUSHKARAS FOR EACH	RIVER AS PER RAASI BY	RAASI:Karka(Cancer) RIVER:Yamuna HOLY PLACE:Yamunotri (U.A) Brundhavan(U.P)	
RAASI:Makara (Capricorn) RIVER:Tungabhadra (Pampa) HOLY PLACE:Hampi, Mantralayam(KA)	CHILAKAMARTHI PRABHAKAR CHAKRAVARTHY SARMA		RAASI:Simha(Leo) RIVER:Godavari. HOLY PLACE:Naasik(MH) Rajahmundry (A.P)	
RAASI: Dhanus(Sagittarius) RIVER:Tapti (Pushkaravahini) HOLY PLACE:Multal & Burhanpur (M.P)	RAASI:Vrishchika (Scorpio) RIVER:Bhima. HOLY PLACE:Bhima shankar(MH), Pandarpur (MH)	RAASI:Tula (Libra) RIVER:Kaveri HOLY PLACE:Talakaveri,Sriranga patnam(KA) & Srirangam(TN)	RAASI:Kanya[Virgo] RIVER:Krishna. HOLY PLACE:Mahabaleswar[MH] Vijayayawada[A.P]	

Legends speak that Brihaspathi - the Devaguru enters into each of the twelve raasis and lives in it for one full year. Just at this auspicious moment, Pushkar along with his three and half crore thirthas, and Maharshis join him and make the water holy. The Ganga Pushkaram begins with the advent of Brihaspathi in the Mesha raasi and he lives there for one full year. Likewise when he enters in Vrishabharaasi Narmada Pushkaram; Saraswathi Pushkaram when in Mithinaraasi; Yamuna Pushkaram when in Karkatak raasi, Godavari Pushkaram when in Simharaasi, Krishna Pushkaram when in Kanyaraasi; Kaveri Pushkaram when in Tularaasi; Bheema Pushkaram when in Vrischika raasi; Brahma Putra Pushkaram when in Dhanuraasi; Tungabhadra Pushkaram when in Makararaasi; Sindhu Pushkaram when in Kumbharaasi and Pranahitha Pushkaram when in Meenaraasi are celebrated with all pomp and splendour due. The first twelve days of the year of his entering are held very sacred. Then the thirtha raj Pushkar and his horde of three and half of crore thirthas dwell making the water

Sri Chilakamarthi Prabhakar Chakravarthy Sarma M.Tech, M.B.A, Jyothishya Maarthanda, Vaastu Vidya Visarada

sacred. Along with the first 12 days of his entering, and twelve days before his leaving are deemed very auspicious and so people in crores, undergoing all hardships go to the rivers and follow scriptural injections, like bathing, gifting, feeding etc.

MEANING OF WORD PUSHKARA

Pushkara is a Sanskrit word derived from the element of Push (Pushti) meaning nourishment and Kara means one who does it. Pushkara is the energy that nourishes. With reference to the sacred rivers, Pushkara means the one who energize the rivers and provide spiritual purification. Pushkara also means Lotus, sanctified water, Swan, Sword, Sky, Lake Etc... In Sri Vishnu Sahasranama Stothram we find a reference to the word Pushkara where Lord Sri Maha Vishnu is referred to as Pushkaraakshah meaning the one who has lotus eyes, the one who provides nourishment to the entire Universe and the one who is always present in sacred Theerthas. Pushkara also indicates the 12 years' time factor in Vedic terms. Pushkara or Pushkaram is a festival of a particular river celebrated once in twelve years based on the transit of Jupiter (Brihaspathi) in the zodiac.

Religious Storyabout Pushkaras and Its Significance: About Pushkara

As per scripts it is said that Pushkara is the son of Lord Varuna the Presiding Deity of all the rivers. As per the legend behind, it is said that, once Pushkara prayed Lord Brahma and asked Him for a boon to live in the sacred waters (emanated from the foot of Primordial Lord Sri Maha Vishnu) of His Kamandalu with the intention of providing purity to all the Theerthas (Rivers). Looking at the selfless desire expressed by Pushkara, Lord Brahma granted him the boon to live in the waters of His Kamandalu. Later, Pushkara also performed penance and acquired the Jala Tattva Siddhi from Lord Shiva as a boon. By virtue of the boons acquired from Lord Brahma and Lord Shiva, Pushkara became the King of all Theerthas and was regarded as the Theerthapalaka.

Puranas about Pushkara & Brihaspathi (Jupiter)

At that time when Pushkara acquired the boons, Brihaspathi (Jupiter) the Devaguru also performed penance and pleased Lord Brahma. Looking at the perpetual sacredness of Pushkara, Brihaspathi wanted Lord Brahma to spare Pushkara to be with him permanently. But Pushkara was not prepared to go along with Brihaspathi. Then, Lord Brahma resolved the situation by asking Pushkara to be associated with

Sri Chilakamarthi Prabhakar Chakravarthy Sarma

M.Tech, M.B.A, Jyothishya Maarthanda, Vaastu Vidya Visarada

Brihaspathi (Jupiter) for 12 days in the beginning and 12 days at the end of his sojourn in a particular raasi (house) in the zodiac, the transit of which generally happens once in a year. Accordingly, twelve sacred rivers have been identified in which Pushkara enters each River once in twelve years coinciding with the transit period of Jupiter in twelve zodiac signs. It has become a custom and tradition since time immemorial to celebrate the transit of Jupiter in a particular house in the zodiac as the Pushkara festival of a particular river. The schedule is as follows. Pushkara schedule starts with Ganga River when Jupiter enters into Mesha Raasi which is the first sign in the zodiac. Incidentally this year it is the turn of Ganga Pushkara that has started from 8th of May, 2011 when Jupiter entered Mesha Raasi. Pushkara schedule for a particular river will be for one year, however, the first twelve days known as Aadi Pushkara and the last twelve days known as Anthya Pushkara are held to be highly sacred.

Significance of Pushkara Bath:

Astrologically Jupiter (Brihaspathi) the Devaguru is the most benevolent planet symbolizing the wealth, fortune, learning, knowledge, divinity, progeny, domestic peace, auspiciousness and above all the karaka for occurrence of Pushkaram. Pushkara the Theertharaja always resides in the Kamandalu of Lord Brahma in the sanctified waters that has emerged out from the foot of Lord Sri ManNarayana. Entry of Pushkara into a particular river signifies the Pushkara festival when, all the Brahmaadi Devathas, all the Sages, all the Pithru Devathas, all the Theerthas in this Bhoomandala including Ganga (Ganges) enters into that particular river along with Brihaspathi and Pushkara. This time of their entry into a particular river is considered as highly sacred and celestial that has the power to diminish the ghastly and dreadful sins committed. Having darshan, taking bath, touching Pushkara waters, drinking the sacred waters of Pushkara is considered to be highly meritorious and soul cleansing. It is considered as the most sacred time to perform rites to forefathers on the banks of Pushkara River that will help them to attain salvation.

Pushkara Snana Vidhi Vidhanam as per Shastras (what to do in pushkara)

Our ancient seers have prescribed certain austerities to be observed during Pushkara time known as Pushkara Vidhi. Most important and every one should do is Pushkara Nadi Snana (taking bath in river), Pushkara Vaasa (staying), Pushkara Darshana, Siro Mundana (tonsuring of head), Fasting, Pushkara Pithru Karma-(This is to be performed whos parents are died), and Pushkara Daana (charity).

Sri Chilakamarthi Prabhakar Chakravarthy Sarma M.Tech, M.B.A, Jyothishya Maarthanda, Vaastu Vidya Visarada

A) Pushkara Snana

In Hindu philosophy lot of significance has been given for taking bath which is Nithya karma and that too in a flowing river is considered as the paramount. It is said that during Pushkara all the Brahmaadi Devathas, Sages and Pithru Devathas will be residing in that Theertha (River) along with Brihaspathi and Pushkara. During Pushkara all the theerthas in the Universe will be entering into that particular river and will be flowing as Antarvahini. Taking bath in a Pushkara river will help to cleanse the inner selves, wash out the evil tendencies and open up a path for a righteous living. This bath should be taken early in the morning before Sunrise during Brahmi Muhurtham which is highly meritorious time. It is believed that Pushkara Snana also has curative properties from chronic ill health. After Pushkara Snana one has to pray and give Arghya to the concerned Pushkara Theertha (River), Theertha Raja (Pushkara), Brihaspathi, Lord Vishnu who is eternally present in all the Theerthas, Brahmaadi Devathas, Vasishtaadi Sages, Gangaadi Rivers and the Sun God (Sri Surya Narayana).

B) Pushkara - Pithru Karma

Pithru Yagna like performing Pithru Shraaddha, Tharpana have been prescribed to get discharged from Pithru Runa. This has been in vogue since time immemorial and even Avathara Purushas like Sri Ramachandra (Lord Sri Rama), Lord Parashurama have performed Pithru karma. We, the human beings are no exception to this dictum. Performing Pithru Karma during Pushkara days also forms part of the Pithru Yagna which is considered as highly sacred and meritorious. Only those who have lost their parents are eligible to perform the sacred rites to their fore-fathers. Pithru karma during Pushkara days has to be performed for all the deceased (Sarva Pithru). It has to be performed on the banks of the sacred Pushkara River like a Theertha Shraaddha.

This has to be performed preferably in the form of Anna Shraaddha with Pinda Pradhana and Brahmana Bhojana. Hiranya Shraaddha is also in vogue where instead of rice, wheat flour is used for making Pindas and instead of Brahmana Bhojana they will be offered Dakshina. Pushkara shraaddha can be performed on any day during the 12 day period of Pushkaram, or on the 9th day or on the Pithru thithi day if it coincides except on the day of Ekadasi. It is said and believed that Pithrus (fore-fathers) will descend on Earth during Pushkara days and will reside on the banks of Pushkara River longing for their off-spring to perform Pithru Shraaddha. Performing Pushkara shraaddha, one will be bestowed with blessings from fore-fathers, peace and prosperity to

Sri Chilakamarthi Prabhakar Chakravarthy Sarma

M.Tech, M.B.A, Jyothishya Maarthanda, Vaastu Vidya Visarada

the family. It will also work as remedy for various mundane problems one is facing in life related to marriage, progeny, health, poverty etc.

C) Pushkara Daana (Charity)

During Pushkara period Snana, Shraaddha and Dana are considered to be highly meritorious that gives eternal results. This charity (Dana) can be given to Brahmins in the form of Dasa Dana (10 in number) or Shodasa Dana (16 in number). Some of the charities prescribed are as follows. Anna Dana, Gold, Silver, Bhoo-Dana, Rice, Ghee, Jaggery, Honey, Grandha (sacred text), Vasthra, PaadaRaksha (Chappals), Umbrella, Hand Stick, Fan, Sayya (Bedding), Phala (Fruits), Bell (Ghanta), Paathra (brass/silver vessel), Asana (Mat), Nava Dhanya, Milk, Cow, Salagrama, Pinda Daana.

3) Pushkara bath in River Ganga:

Ganga Pushkaram is a festival of River Ganga which normally occurs once in 12 years. This Pushkaram is observed for a period of 12 days from the time of entry of Jupiter into Ashwini nakshatra Mesha rasi. The 2,704 km (1,680 mi) river rises in the western Himalayas in the Indian state of Uttarakhand. The main stem of the Ganges begins at the town of Devprayag, at the confluence of the Alaknanda. Ganga River flows in the state of Uttaranchal, Uttar Pradesh, Bihar, West Bengal & Bangladesh. Having pushkar bath in Ganga river is treated to be highly auspicious.

Important place to take bath in Pranihita River in India are-

- 1) Gangotri-Gomukh in Uttharakhand state- The Bhagirathi rises at the foot of Gangotri Glacier, at Gomukh River.
- 2) Rishikesh & Haridwar in Uttharakhand
- 3) Brij Ghat available 60 Km near Delhi
- 4) Allahabad in Uttar Pradesh
- 5) Varanasi In Uttar Pradesh

In 2023-24 GANGA RIVER PUSHKARAS start On 22-04-2023 and ends on 03-05-2023.

On 22-04-2023 at early morning 05:14 AM Jupiter enters in to Aries Zodiac (Mesha Raasi). Hence forth on 22-04-2023 onwards Pushkaras will be started for river Ganga & Ends on 3-5-2023.

It is suggested to have ganga pushkar snan at following locations Devaprayg, Rishikesh, Haridwar, Allahabad & Varanasi are the highly auspicious places where Ganga pushkar snaan.

Sri Chilakamarthi Prabhakar Chakravarthy Sarma M.Tech, M.B.A, Jyothishya Maarthanda, Vaastu Vidya Visarada

Religious Story About Pushkaras and Its Significance: About Pushkara

As per scripts it is said that Pushkara is the son of Lord Varuna the Presiding Deity of all the rivers. As per the legend behind, it is said that, once Pushkara prayed Lord Brahma and asked Him for a boon to live in the sacred waters (emanated from the foot of Primordial Lord Sri Maha Vishnu) of His Kamandalu with the intention of providing purity to all the Theerthas (Rivers). Looking at the selfless desire expressed by Pushkara, Lord Brahma granted him the boon to live in the waters of His Kamandalu. Later, Pushkara also performed penance and acquired the Jala Tattva Siddhi from Lord Shiva as a boon. By virtue of the boons acquired from Lord Brahma and Lord Shiva, Pushkara became the King of all Theerthas and was regarded as the Theerthapalaka.

Puranas About Pushkara & Brihaspathi (Jupiter)

At that time when Pushkara acquired the boons, Brihaspathi (Jupiter) the Devaguru also performed penance and pleased Lord Brahma. Looking at the perpetual sacredness of Pushkara, Brihaspathi wanted Lord Brahma to spare Pushkara to be with him permanently. But Pushkara was not prepared to go along with Brihaspathi. Then, Lord Brahma resolved the situation by asking Pushkara to be associated with Brihaspathi (Jupiter) for 12 days in the beginning and 12 days at the end of his sojourn in a particular raasi (house) in the zodiac, the transit of which generally happens once in a year. Accordingly, twelve sacred rivers have been identified in which Pushkara enters each River once in twelve years coinciding with the transit period of Jupiter in twelve zodiac signs.It has become a custom and tradition since time immemorial to celebrate the transit of Jupiter in a particular house in the zodiac as the Pushkara festival of a particular river. The schedule is as follows. Pushkara schedule starts with Ganga River when Jupiter enters into Mesha Raasi which is the first sign in the zodiac. Incidentally this year it is the turn of Ganga Pushkara that has started from 8th of May, 2011 when Jupiter entered Mesha Raasi. Pushkara schedule for a particular river will be for one year, however, the first twelve days known as Aadi Pushkara and the last twelve days known as Anthya Pushkara are held to be highly sacred.

Significance of Pushkara Bath:

Astrologically Jupiter (Brihaspathi) the Devaguru is the most benevolent planet symbolizing the wealth, fortune, learning, knowledge, divinity, progeny, domestic peace, auspiciousness and above all the karaka for occurrence of Pushkaram. Pushkara the Theertharaja always resides in the Kamandalu of Lord Brahma in the sanctified waters that has emerged out from the foot of Lord Sri ManNarayana. Entry of Pushkara into a particular river signifies the Pushkara festival when, all the Brahmaadi Devathas, all the Sages, all the Pithru Devathas, all the

Sri Chilakamarthi Prabhakar Chakravarthy Sarma

M.Tech, M.B.A, Jyothishya Maarthanda, Vaastu Vidya Visarada

Theerthas in this Bhoomandala including Ganga (Ganges) enters into that particular river along with Brihaspathi and Pushkara. This time of their entry into a particular river is considered as highly sacred and celestial that has the power to diminish the ghastly and dreadful sins committed. Having darshan, taking bath, touching Pushkara waters, drinking the sacred waters of Pushkara is considered to be highly meritorious and soul cleansing. It is considered as the most sacred time to perform rites to forefathers on the banks of Pushkara River that will help them to attain salvation.

Pushkara Snana Vidhi Vidhanam as per Shastras (what to do in pushkara)

Our ancient seers have prescribed certain austerities to be observed during Pushkara time known as Pushkara Vidhi.

Most important and every one should do is Pushkara Nadi Snana (taking bath in river), Pushkara Vaasa (staying), Pushkara Darshana, Siro Mundana (tonsuring of head), Fasting, Pushkara Pithru Karma-(This is to be performed whos parents are died), and Pushkara Daana (charity).

1) Pushkara Snana

In Hindu philosophy lot of significance has been given for taking bath which is Nithya karma and that too in a flowing river is considered as the paramount. It is said that during Pushkara all the Brahmaadi Devathas, Sages and Pithru Devathas will be residing in that Theertha (River) along with Brihaspathi and Pushkara. During Pushkara all the theerthas in the Universe will be entering into that particular river and will be flowing as Antarvahini. Taking bath in a Pushkara river will help to cleanse the inner selves, wash out the evil tendencies and open up a path for a righteous living. This bath should be taken early in the morning before Sunrise during Brahmi Muhurtham which is highly meritorious time. It is believed that Pushkara Snana also has curative properties from chronic ill health. After Pushkara Snana one has to pray and give Arghya to the concerned Pushkara Theertha (River), Theertha Raja (Pushkara), Brihaspathi, Lord Vishnu who is eternally present in all the Theerthas, Brahmaadi Devathas, Vasishtaadi Sages, Gangaadi Rivers and the Sun God (Sri Surya Narayana).

2) Pushkara – Pithru Karma

Pithru Yagna like performing Pithru Shraaddha, Tharpana have been prescribed to get discharged from Pithru Runa. This has been in vogue since time immemorial and even Avathara Purushas like Sri Ramachandra (Lord Sri Rama), Lord Parashurama have performed Pithru karma. We, the human beings are no exception to this dictum. Performing Pithru Karma during Pushkara days also forms part of the Pithru Yagna which is considered as highly sacred and meritorious. Only those who have lost their parents are eligible to perform the sacred rites

Sri Chilakamarthi Prabhakar Chakravarthy Sarma

M.Tech, M.B.A, Jyothishya Maarthanda, Vaastu Vidya Visarada

to their fore-fathers. Pithru karma during Pushkara days has to be performed for all the deceased (Sarva Pithru). It has to be performed on the banks of the sacred Pushkara River like a Theertha Shraaddha.

This has to be performed preferably in the form of Anna Shraaddha with Pinda Pradhana and Brahmana Bhojana. Hiranya Shraaddha is also in vogue where instead of rice, wheat flour is used for making Pindas and instead of Brahmana Bhojana they will be offered Dakshina. Pushkara shraaddha can be performed on any day during the 12 day period of Pushkaram, or on the 9th day or on the Pithru thithi day if it coincides except on the day of Ekadasi. It is said and believed that Pithrus (fore-fathers) will descend on Earth during Pushkara days and will reside on the banks of Pushkara River longing for their off-spring to perform Pithru Shraaddha. Performing Pushkara shraaddha, one will be bestowed with blessings from fore-fathers, peace and prosperity to the family. It will also work as remedy for various mundane problems one is facing in life related to marriage, progeny, health, poverty etc.

3) Pushkara Daana (Charity)

During Pushkara period Snana, Shraaddha and Dana are considered to be highly meritorious that gives eternal results. This charity (Dana) can be given to Brahmins in the form of Dasa Dana (10 in number) or Shodasa Dana (16 in number). Some of the charities prescribed are as follows.

Anna Dana, Gold, Silver, Bhoo-Dana, Rice, Ghee, Jaggery, Honey, Grandha (sacred text), Vasthra, Paada Raksha (Chappals), Umbrella, Hand Stick, Fan, Sayya (Bedding), Phala (Fruits), Bell (Ghanta), Paathra (brass/silver vessel), Asana (Mat), Nava Dhanya, Milk, Cow, Salagrama, Pinda Daana.

It is also prescribed in the relics the donations to holy people to be done at this time:

1st Day All cereals Gold, Land, Silver

2nd Day Clothes, Salt, Cows

3rd Day Fruits, Jagree, Horse

4th Day Oil, Ghee, sweets

5th Day Plough, Cow

6th Day Stools, Chairs, medicine, chamfer

7th Day Cereals, house, stool, wood furniture

8th Day Holy utensils, Bangles, Flowers, Turmeric, Kumkum, Sarees

9th Day Things to be used in Yagas Rudrakha, Money

10th Day Book, Leaf Vegitables, Cow

11th Day Elephant, Horse, Servent

12th DAY TIL

If all these are followed by someone all his sins will be cleared and gets the blessings of all the gods.

Sri Chilakamarthi Prabhakar Chakravarthy Sarma M.Tech, M.B.A, Jyothishya Maarthanda, Vaastu Vidya Visarada



ස පෙන්න කුරු පැරුත්

న్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త, (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద



බුඛූර් ලුලේస్త్వం



ఒకప్పుడు నారదుడు బ్రహ్మవద్దకు వెళ్ళి 'పుష్కర మనగానేమి? పుష్కరునికి తండి యెవరు? పుష్కరుడు తీర్థరాజెట్లయ్యెను? చెప్పమని కోరెను. అప్పుడు బ్రహ్మ 'నారదా సార్థ త్రికోటి తీర్థము లెక్కడ ఉండునో ఆ తీర్థమునకు పుష్కరమని పేరు. పూర్వము తుందిలకుడనెడి పరమ ధార్మికుడైన మునియుండెను. అతడు రేయింబవళ్ళు శివుని అర్చించి, ఆయన అనుగ్రహము వలన పుష్కరుడయ్యెను. శివానుగ్రహమును శివుని అష్టమూర్తులలో ఒకటైన జలరూపమును పొందియుండెను. తరువాత నేను తపస్సు చేసి శంకరు నారాధించి, సామములతో శివుని స్తుతించి లోక సృష్టికి తోద్పడుమంటిని. అతడు తీర్థరూపియైన పుష్కరుని నాకిచ్చెను. నేనాతనిని కమండలములో నుంచి సృష్టి చేయుచుంటిని.

ఇట్లుండగా ఒకప్పుడు అంగీరసుని కొడుకు బృహస్పతి తపస్సు చేసి నన్ను మెప్పించగా నీకేమి కావలెనో కోరుకొమ్మంటిని. అతడు 'నీవు నాకు ప్రసన్నుడవైనచో నాకు గ్రహాధిపత్యము, దేవతలలో గౌరవము, సర్వజ్ఞత్వమును ఇచ్చి, నీ కమండలములో నున్న తీర్థరాజగు పుష్కరుడు నా వశమగునట్లు చేయుమని కోరెను.

అట్లే అని పుష్కరుని పిలిచి 'నిన్ను బృహస్పతికిచ్చితిని, ఇంకిప్పటి నుండి అతని ననుసరించుమనెను. పుష్కరుడు 'నేను మిమ్ము విడువజాలను' అనగా బ్రహ్మ నేను నిన్ను బృహస్పతికిచ్చినాను. నీవు వెళ్ళక తప్పదనెను. అప్పుడు పుష్కరుడు నేను మీతోనే ఉందును. మీరెచ్చటికి వెళ్ళిన నేనక్కడికి వత్తుననెను. బ్రహ్మ 'ఓ పుష్కరా! బృహస్పతి మేషాది రాశులలో చేరిననాటినుండి పండైడు రోజులు రేయింబ వళ్ళును సంవత్సరమంతా మధ్యాహ్నవేళ రెండు ముహూర్తములున్నూ నీవా నదిలో ఉండవలెను. నేను నీతో కూడా ఉండెదను అనెను.

బృహస్పతి పుష్కరుని పిలుచుకొని మేషాది రాశులలో ప్రవేశించినపుడు గంగాది నదులలో పుష్కరుడు సార్థ త్రికోటి తీర్ధములతో సహా ఉండుచుండెను. ఆ సమయము సార్థ్మత్రికోటి తీర్ధములతో సహా ఉండు చుండెను. ఆ సమయము పుణ్యకాలము కనుక అప్పుడు చేసిన దానము లనంతకోటి ఫలములనిచ్చును. సమస్త నదులు, సమస్త తీర్థములున్ను, అక్కడికి వచ్చి చేరును. అప్పుడు బ్రహ్మరుడ్రుడు, విష్ణవు, ఇండ్రాదిదేవతలు, పితరులు, ఋఘలు అందరును స్నానముచేసి ఇక్కడనే ఉందురు. కాన అప్పుడు చేసిన స్నానము, దానము అక్షయ ఫలము నిచ్చును.

ධ ත්සපී බුබූර්බාබූ යා?

1.	కన్య	కృష్ణవేణి	7.	మీనం	ప్రణీత
2.	తుల	కావేరి	8.	మేషం	_{ഗ്രസ}
3.	వృశ్చికం	భీమనది	9.	వృశ్చికం	రేవానది
4.	ధనస్సు	పుష్కరవాహిని	10.	మిధునం	సరస్వతి
5.	మకరం	తుంగభద్ర	11.	కర్కాటకం	యమున
6.	కుంభం	సింధు	12.	సింహం	గోదావరి

ස පෙන්න කුරු පැරුත්

న్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్మ (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

కాశి, గయ, ప్రయాగ, హరిద్వారము మున్నగు పుణ్యక్షేత్రములలో తీర్థ మహాత్మ్యములుండగా పై చెప్పిన రీతిలో ఆయాకాలములందు సర్వతీర్థ మహాత్మ్యమును ఆ నదికి కల్గను. కాన ఆ సమయమున స్నాన, దానాదులు అక్షయ పుణ్యఫలమునిచ్చును. కాన చెప్పిన రీతిగా దశ దానములలో, షోడశ మహాదానములలో చేయుట మంచిది.

(ர்0119 නීඩ්,රි නදා්මා

స్వస్తిశ్రీ చాంద్రమాన శ్రీ శోభకృత్ నామ సంవత్సరము వైశాఖ మాసం శుక్ల పక్ష ద్వితీయ శనివారము అనగా ది. 22-04-2023 పగలు గం.5.14 ని10లకు దేవగురువు అయిన బృహస్పతి మేష రాశిలోనికి ప్రవేశించును. కావున గంగా నదికి పుష్కరములు జరుగును.

22-4-2023 నుండి 02-05-2023 వరకు 12 రోజులూ గంగా నదికి పుష్కరములు జరుగును. ఈ పుష్కర సమయములో పుణ్యస్నానాలు, చనిపోయిన పెద్దలకు పింద్రప్రదానం, గోదానములు చేయుట (శేయస్కరము.

గంగా నది ఉత్తరాఖండ్, ఉత్తర్థపదేశ్, బీహార్ మరియు పశ్చిమ బెంగాల్ రాష్ట్రములయందు ప్రవహించును. గంగానది పుష్కర సమయమునందు గంగాత్రి యందు, వేదప్రయాగ, హృషీకేశ్, హరిద్వార్, ప్రయాగ, కాశీ (వారణాశి) వంటి పుణ్యక్షేత్రాలలో పుష్కర స్నానము ఆచరించడం శుభప్రదము.

ఇతర దేశములనుండి వచ్చిన వారికి ఉపవాసము, క్లౌరము ముఖ్యము. కాని తీర్థవాసుల కక్కరలేదు. తీర్థవాసులనగా గంగకు రెండువైపులా 8 మైళ్ళు లోపల నున్నవారు. భార్య గర్భిణిగానున్నా, వివాహాదులు చేసి మూడు నెలలు దాటకున్నను హిరణ్య (శాద్ధాదులు చేయరాదు. గర్భిణి అనగా ఏడవమాసం వచ్చాక అని అర్థం.



స్నానాడులు : (ప్రాతఃకాలము ముఖ్యము. మధ్యాహ్నము మధ్యమము, అపరాహ్ణమున అధమము. పితరులనుద్దేశించి హిరణ్యశ్రాద్ధము చేయవలెను. దానిలో వరిపిండి లేక గోధుమపిండితో నల్ల నువ్వులు, బెల్లం కలిపి పిండములు పెట్టవలెను. షోడశ మహాదానములు చేయవచ్చును.

స్నానఫలము : పుష్కర దినములలో గంగానది స్నానము చేసినందున నిత్యము గంగలో ప్రాతః స్నానము చేసిన ఫలము, గంగా యమునా నదీ సంగమమున సంవత్సరము స్నానము చేసిన ఫలము, నర్మదా నదీ తీరమున తపస్సు చేసిన ఫలితము కలుగును.

සමජිතාවූ කුකුූගරේුත්

శ్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త, (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద



നഠന്നു പ്കൂള്യാ

ఆచి శంకరాచార్య విరచిత గంగా స్క్రేత్రము

ದೆವಿ! ಸುರೆಕ್ಸರಿ! భಗವತಿ! ಗಂಗೆ! (මුభාవన తారణి! తరల తరంగే! శంకర మౌళి విహారిణి! విమలే! మమ మతి రాస్తాం తవ పదకమలే! 1 భాగీరథి! సుఖదాయిని! మాత స్తవ జలమహిమా నిగమే ఖ్యాతః నాహం జానే తవ మహిమానం పాహి కృపామయి మా మజ్హానం పునరసదంగే! పుణ్యతరంగే! జయజయ జాహ్నవి! కరుణాపాంగే! ఇంద్రమకుట మణిరాజిత చరణే! సుఖదే! శుభదే! భృత్య శరణ్యే! 3 తవ జలమమలం యేన నిపీతం పరమపదం ఖలు తేన గృహీతం! మాతర్గంగే త్వయి యో భక్తః కిల తం ద్రమ్మం న యమశ్శక్తః 4 పతితోద్దారణి! జాహ్నవి! గంಗೆ! ఖండతగిరివర మండితభంగే! భీష్మజనని! హే మునివరకన్యే! పతితనివారిణి! త్రిభువనధన్యే! 5 కల్పలతామివ ఫలదాం లోకే ప్రణమతి యస్వాం న పతతి శోకే పారావారవిహారిణి! గంగే విముఖ యువతి కృత తరలాపాంగే! 6 తవ చేన్మాత స్ర్పోత స్ప్రాతః పునరపి జఠరే సోపి న జాతః నరకనివారిణి! జాహ్నవి! గంగే! 7 కలుష నివారిణి మహిమోత్తుంగే!

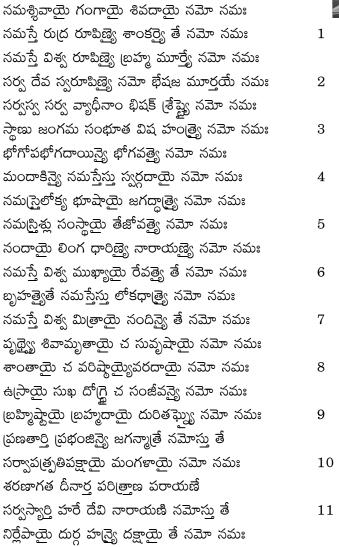
పునరసదంగే! పుణ్యతరంగే! జయజయ జాహ్నవి! కరుణాపాంగే! ఇంద్రమకుట మణిరాజిత చరణే! సుఖదే! ಕುభಧೆ! భృత్యశరణ్యే! రోగం శోకం తాపం పాపం హర మే భగవతి కుమతికలాపం (తిభువనసారే! వసుధాహారే! త్వమసి గతిర్మమ ఖలు సంసారే! అలకానందే! పరమానందే! కురు కరుణాం మయి కాతరవంద్వే తవతటనికటే యస్యనివాసః ఖలు వైకుంఠే తస్య నివాసః 10 వరమిహ నీరే కమఠోమీనః కింవా తీరే సుదృధః క్షీణః అధవా శ్వపచో మలినో దీన స్తవనహి దూరే నృపతి కులీనః 11 భోభువనేశ్వరి! పుణ్యే ధన్యే దేవి! (దవమయి! మునివరకన్యే! గంగాస్తవ మీమ మమలం నిత్యం పఠతి నరో య స్స జయతి నిత్యం యేషాం హృదయే గంగాభక్తి స్తేషాం భవతి సదా సుఖముక్తిః మధురాకాంతాపజటికాభిః పరమానంద కలిత లలితాభి: 13 గంగాస్త్మోత మిదం భవసారం వాంఛితఫలదం విమలం సారం శంకరసేవక శంకర రచితం పఠతి సుభీస్తవ ఇతి చ సమాప్తః 14

ස පෙන්නවූ කුකු,ගරේ_ම්

త్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త, (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.వీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

గంగా దశాహరా స్త్యేత్రం

స్కాంద పురాణం బ్రహ్మూవాచ





12

పరాత్పరతరే తుభ్యం నమస్తే మోక్షదే సదా

සිలకోమ్ లై ప్పేష్క్ దార్చేసే శ్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.వ్, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

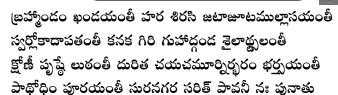
గంగా మమాగ్రతో భూయా గంగే మే దేవిం పృష్టతః	
గంగే మే పార్మ్వయోరేహి త్వయి గంగేస్తు మే స్థితిః	13
ఆదౌ త్వమన్తే మధ్యే చ సర్వం త్వాం గాంగ తే శుభే	
త్వమేవమూలం డ్రకృతిస్త్యం హి నారాయణ పరః	14
గంగే త్వం పరమాత్మా చ శివస్తుభ్యం నమశ్శివే	
య ఇదం పఠతి స్తోత్రం భక్త్యా నిత్యం నరోపి యః	15
శృణుయాడ్చ్రద్ధయాయుక్తః కాయ వాక్చిత్త సంభవైః	
దశధా సంస్థితైర్దో షైస్సర్వైరేవ (ప్రముచ్చ్యతే	16
సర్వాన్కామానవాప్నోతి (పేత్య బ్రహ్మణి లీయతే	
జ్యేష్టే మాసి సితే పక్షే దశమీ హస్త సంయుతే	17
తస్యాం దశమ్యామేతచ్చ స్తోతం గంగా జలే స్థితః	
యః పఠేద్దశ కృత్వస్తు దరిద్రో వాపి చాక్షమః	18
సోపి తత్ఫలమాప్నోతి గంగాం సంపూజ్య యత్నతః	
అదత్తానాముపాదానం హింసా చైవావిధానతః	19
పరదారోప సేవా చ కాయికం త్రివిధం స్మృతం	
పారుష్యమనృతంచైవ పైశున్యం చాపి సర్వశః	20
అసంబద్ధ (పలాపశ్చ వాఙ్మయం స్కా చ్చతుర్విధం	
పరద్రవ్యేష్వభిధ్భానం మనసానిష్ట చిన్తనం	21
వితథాభినివేశశ్చ మానసం త్రివిధం స్మృతం	
ఏతాని దశ పాపాని హర త్వం మమ జాహ్నవి	22
దశ పాప హరా యస్మాత్తస్మాద్దశపాప హరా స్మృతా	
త్రయస్త్రించ్ఛతం పూర్వాన్ పిత్సానథ పితామహాన్	23
ఉద్ధరత్యేవ సంసారాన్మంత్రేణానేన పూజితా	
నమో భగవత్త్యె దశ పాపహరాయై గంగాయై నారాయణ్త్యె	24
రేవత్త్యె శివాయై దక్షాయై అద్భుతాయై	
విశ్వరూప్రిణ్యై నందినైత్య తే నమో నమః	25

ස පෙන්නවූ කුකු,ගරේ_ම්

ర్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్య (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

ఆదావాది పితామహస్య నిగమ వ్యాపరపాత్రే జలం పశ్చాత్పన్నగశాయినో భగవతః పాదోదకం పావనం 26 భూయశ్యంభు జటా విభూషణ మణిర్జహ్నూర్మహర్నేరియం దేవీ కల్మష నాశినీ భగవతీ భాగీరథీ దృశ్యతే 27 గంగా దశాహరా స్తోత్రం సంపూర్ణం

ිරු නැති ක්කේ ක්කේ ක්ර



గంగ గురించి, గంగావతరణం గురించి ఆసక్తికరమైన పురాణ గాథలు ఎన్నో కలవు. భాగవతంలోను, బృహద్ధర్మ పురాణంలోను, దేవీ భాగవతంలోను కాశీఖండము లోనూ గంగ గూర్చి పెక్కు గాథలు కలవు.

యోసౌ సర్వగతో విష్ణు: చిధ్వరూపీ నిరంజను స ఏవ ద్రవ రూపేణ గంగాంభో నాత్ర సంశయు

ఒకమారు శంకరుడు రాగములాలాపించినపుడు నారాయణుడు ద్రవీభవించెను.ఆ పర్మబహ్మ ద్రవమును బ్రహ్మదేవుడు తన కమండలమును తాకించగా నిరాకారమైన ద్రవము గంగా జలమయమయ్యెను.

బ్రహ్హకమండలు సంభూతా

జగజ్జనని (అంతర్ధానాంశయై) నిరాకారయైన గంగ బ్రహ్మదేవుని కమండలము నందుండెను.

విష్ణు పాదాబ్జ సంభూతా

శ్రీ మహావిష్ణవు వామనావతారమున త్రివిక్రముడై ఎల్లలోకములను కొలిచినపుడు అ్రహ్మ తన కమండలములోని ఆ నీటితోనే విష్ణపాదమును కడిగెను. (అ్రహ్మ కడిగిన పాదము – అన్నమయ్య కీర్తన). ఆ పాదమునుండి త్రవహించునదే దివ్యగంగ విష్ణ పాదాబ్జ సంభూతా.

සමජිතාවූ කුකුූගරේුත්

న్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త, (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద



ಭಾಗಿರಥ

సూర్యవంశపు రాజైన సగరునకు వైదర్భి, శైబ్య అను ఇద్దరు భార్యలు. శైబ్యకు అసమంజసుదను కుమారుడు, వైదర్భికి 60వేల మంది కుమారులు

కలిగిరి. సగరుని అశ్వమేధ యాగాన్ని భంగము చేయుటకై ఇంద్రుడు యాగాశ్వమును పాతాళములో దాచినాడు. ఆ అశ్వాన్ని వెతకడానికి వెళ్ళిన సగరుని 60వేల మంది పుత్రులు కపిల మహాముని శాపమున భన్మమైపోయారు. వారికి ఉత్తమగతులు లభించాలంటే దివిజ గంగను పాతాళానికి తేవలసి ఉన్నది. సగరుడు, అతని కొడుకు అసమంజసుడూ తపస్సు చేసినా ప్రయోజనం లేకపోయెను. అసమంజసుని కొడుకు అంశుమంతుడు. అంశుమంతుని కొడుకు భగీరథుడు.

భగీరథుడు తన తాతలకు ఉత్తమ గతులు ప్రాప్తించాలని గంగకోసం తపస్సు చేశాడు. గంగ ప్రత్యక్షమై "నేను భూమి మీదికి దిగిరావడానికి సిద్ధముగా ఉన్నాను. కాని నా దూకుడు భరించగల నాథుడెవ్వరు?" అని అడిగింది. భగీరథుడు శివుని కోసం తపస్సు చేశాడు.

హరశిరసి జటా జూలముల్లాసయంతీ

అనుగ్రహించిన శివుడు దివిజయైన గంగను భువికి రాగానే తన తలపైమోపి, జటాజూటంలో బంధించాడు. భగీరథుని ప్రార్థనతో ఒక పాయను నేలపైకి వదలాడు. భగీరథుని వెంట గంగ పరుగులు తీస్తూ సాగింది.

హిమాలయముల నుంచి సాగర సంగమ మార్గములో గల జహ్నుముని ఆడ్రమమును ముంచెత్తినదని ఆగ్రహించిన జహ్నుముని మొత్తము గంగను ఆచమనము చేసెను. భగీరథుని ప్రార్థనకు ప్రసన్సుడైన జహ్ను మహర్షి కుడిచెవి నుంచి గంగను వదిలిపెట్టెను. జహ్నువుత్రి "జాహ్నవి" అయ్యెను. (జలాభావములో కుడిచెవిన తాకిన శుద్ది)

ఆపై సాగరంలో ప్రవేశించి, పాతాళానికి చేరి, సగరుని పుత్రులకు ఉత్తమ గతులను కలుగజేసెను.

త్రిపథగామినీ

స్వర్గంలో "మందాకిని"గా, భూలోకంలో "గంగ" లేదా "అలకనంద"గా, పాతాశంలో "భోగవతి"గా మూడు లోకాల్లో మ్రవహించినందున గంగను "త్రిపథగ" అంటారు.

ස වෙසි කිවු කුරු, ලබර් ුත්

ర్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ప్, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

ന്ഠനംപ്പൂര്ഠ, നഠനം ಮహిమలు

భారతంలో భీష్ముడు అంపశయ్య మీద ఉన్నప్పుడు ధర్మరాజు కోరికపై భీష్ముడు గంగానది మహిమలు వర్హించినాడు. అవి ఈ క్రింద వివరించబడినాయి.

- గంగా, యమున, సరస్వతులు కలసిన సంగమంలో స్నానం చేసినందు వలన కలుగు పుణ్యం యజ్ఞ యాగాది దానాదులు చేసిన దానికంటే అధికం.
- గంగాజలం కొంచమైననూ దేహమునకు సోకిన సకల పాపములు నశించును. స్వర్గం లభించును.
- నరుని ఎముక గంగానదియందు ఎన్ని సంవత్సరములు ఉండునో అతడు అన్ని సంవత్సరములు స్వర్గమున నివసించును.
- గంగా స్నానమాచరించినవారు పరిశుద్ధలగుటయేకాక ఏడు తరముల వారు పరిశు ద్దులగుదురు.
- 🕨 గంగా జలం త్రాగిన కలుగు ఫలితం నూరు చాంద్రాయణ ద్రతములు కంటే అధికము.
- శిరస్సు, ముఖము, ఇతర దేహభాగములందు గంగా మృత్తిక (మట్టి)ను రాసుకుని స్నానమాచరించిన గరుత్మంతుని చూచి పాములు పారిపోయినట్లు పాపములు దూరమగును.
- ఆధారం లేని జనులకు గంగ ఆధారమగును. దేవతలకు అమృతము వలె మునులకు గంగ ప్రియమైనది.
- గంగానది తరంగముల నుండి వచ్చిన గాలి దేహమునకు సోకిన పరమానందము కలిగించుచూ పాపములను దూరం చేయును.
- 🕨 మరణకాలమందు గంగను తలచిన వారికి మోక్షం లభించును.
- గంగానది మహిమలు చెప్పుకొను వారికి పాప భయం, రాజ భయం, చోరభయం, భూత భయం మొదలైన భయములు నశించును.
- గంగ ఎంతయో పుణ్యరాశి అయినందున ఆకాశము నుండి దిగి వచ్చినప్పుడు ఈశ్వరుడు తలమీద ధరించినాడు.
- 🕨 గంగ మూడు లోకములందు ప్రవహించి ముల్లోకములను పునీతం చేయుచున్నది.
- భగీరథుడు కపిలముని శాపం వలన భస్మమైన తన పితరులకు మోక్ష[ప్రాప్తి కలిగించ దానికి తపమాచరించి బ్రహ్మలోకం నుండి భూలోకానికి తీసుకు వచ్చినాడు.
- 🕨 గంగా నది బ్రహ్మలోకం నుండి మేరురూపుడైన విష్ణవు నుండి సూర్యునినుండి

త్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

చంద్రుని నుండి శివుని జటాజూటం నుండి హిమవంతం నుండి భూమి మీదకు ప్రవహించుచున్నది.

- గంగ తొలుత విష్ణ పాదం నుండి ఉద్భవించింది కనుక గంగను భక్తితో శరణు జొచ్చిన మోక్షము నిశ్చయం.
- గంగ మహిమను బ్రహ్మాది దేవతలు స్తుతించుచుందురు. నరులకు గంగానది మహిమ వర్ణించుట సాధ్యము కాదు.
- తన వర్ణాశ్రమ ధర్మములు నిర్వహించుచూ గంగానది మహిమలను మనోవాక్కాయ కర్మల స్మరించు వారికి సకల సౌఖ్యములు కలుగును.
- గంగాదేవి ఇతిహాసమును ద్రాసినను విన్ననూ చదివిననూ సకల వ్యాధులు నశించి పరమ శుభములు కలుగును.

సనాతన ధర్మానుసారము గంగానది చాలా పవిత్రమైనది. పావనము చేయునది. ఒకమారు గంగానదిలో స్నానం చేస్తే జన్మ జన్మల పాపములనుండి విముక్తి లభిస్తుంది. చనిపోయే ముందు గంగాజలమును మింగితే (సేవిస్తే) స్వర్గప్రాప్తి నిశ్చయము. తమ పితృదేవతల అస్థికలను గంగానదిలో నిమజ్జనము చేయుటకు సుదూర ప్రాంతముల నుండి వారణాసికి, ప్రయాగకు ఇతర గంగానదీ తీరాలకు వచ్చెదరు. గంగానది జలాన్ని ఒక చిన్న పాత్రలో గృహమునందు ఉంచి పూజించుట శుభప్రదము.

గంగానదీ తీరమున కుంభమేళ, ఛర్ పూజ వంటి ఉత్సవములు జరుగుతాయి. కుంభమేళ ద్రపంచములోనే అతి పెద్ద జనసమూహం కూడుకొనే ఉత్సవం. వారణాసి సనాతనులకు పరమ పవిత్ర స్థానము.

గంగ ఉద్దమ స్థానము: గంగోత్రి గంగానది పుట్టిన ప్రదేశము. గంగాదేవి ప్రతిష్ఠితమైన ప్రదేశము. హిమాలయములలోని చార్**ధా**మ్*లో ఒకటిగా* ప్రసిద్ధి.

ఇచ్చట గంగానది భాగీరథి పేరుతో పిలవబడుచున్నది. గంగానదిని భూమికి తీసుకు రావడానికి భగీరథుడు కారణం కనుక ఆ పేరు వచ్చినది. దేవ ప్రయాగ నుండి గంగానదిలో అలకనందా నది ప్రవేశించే ప్రదేశం నుండి గంగానదిగా పిలవబడుతున్నది. గంగానది పుట్టిన ప్రదేశం గౌముఖ్. ఇది గంగోత్రినుండి 40 కిలోమీటర్ల ఎగువలో పర్వతాలలో కలదు. హరిద్వారము నుండి గంగా సాగర సంగమము వరకు గంగాతీరము అంతయూ అత్యంత పవిత్రమైనది. పుష్కర స్నానములు చేయవచ్చును.

కాళేక్షేత్రము: భగీరథుడు గంగాసాగర సంగమ మార్గములో హిమాలయముల నుంచి సముద్ర మార్గములో కాశీక్షేత్రము లేనప్పటికి గంగా అమ్మవారు కాశీ క్షేత్రమును

සමජිකාවූ කුකුූලෘරුත්

త్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్య (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.పీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

స్పృశించి తరించవలెనని కాశీక్షేత్రము మీదుగా సముద్రమునకు చేరెను.

గంగాతీరమనుత్తమం హి సకలం త్రణాపి కాశ్బుత్తమా తస్యాం సా మణికర్ణికోత్తమతమా యత్రేశ్వరో ముక్తిదః దేవానామపి దుర్లభం స్థలమిదం పాపౌఘనాశక్షమం పూర్వోపార్జిత పుణ్య పుంజ గమకం పుణ్యెర్జనైః ప్రాప్యతే



గంగాతీరము అంతయూ ఉత్తమమైనది. అందున కాశీక్షేత్రము ఉత్తమోత్తమమైనది. కాశీక్షేత్రమునందు మణికర్ణికా తీర్థము అత్యుత్తమోత్తమము. సమస్త పాప పుంజములను నశింపచేయు శక్తి కలిగిన కాశీ క్షేత్రము, గంగానది, మణికర్ణిక ఈ మూదును దేవతలకు కూడా దుర్లభము. అనేక జన్మలలో సంపాదించిన పుణ్యరాశి కలిగిన పుణ్యాత్ములు మాత్రమే కాశీక్షేత్రమున గంగాస్నానము పొందగలరు.

పుష్కర మాహాత్ర్యము

శ్లో సారదు, భగవన్ దేవ దేవేశ, సర్వజ్ఞ కరుణాకర తత్తు శ్రతమేశషం హి గంగా మహాత్మ్మముత్తమం కథం వ్రత విధిు కార్యా–మేషయుక్తే బృహస్పతా.



శ్లోగి కస పుష్కరు? తీర్ధరాజు? కథంజాతు? కథంపాపానోదకు? ఏతత్సర్వమశేషేణవక్తు మర్హసి సాంప్రతం

భావము: నారద మహర్ని తన తండ్రియగు బ్రహ్మగారి ద్వారా గంగానది మహిమను విని, మరల తండ్రిగారిని పుష్కరమనగా ఎవరు? పుష్కరుడు తీర్థరాజు ఎట్లు అయ్యెను? పుష్కరములలో పాపము ఎలా నశించును? యీ విషయము పూర్తిగా వినవలెనని నారదుడు అడిగెను.

బ్రహ్మగారు పుత్రుడైన నారదునితో ఈవిధముగా చెప్పెను. పూర్వము తందిలుడను బ్రూహ్మణుడు పరమశివుని గురించి తపస్సానరించి, శివునియొక్క ఎనిమిది రూపములలో నౌకటియగు జలరూపమునొంది, పుష్కరుడను పేరు పొందెను. అనంతరము ఓ నారదా! నేను (బ్రహ్మ) పరమేశ్వరుని ప్రార్థించి, తీర్థరాజగు పుష్కరుని నాకమండల మందు యుండునట్లు వరము గోరితిని – ఆవిధముగా జలరూపమగు పుష్కరుని నాకమండలమం దుంచుకొని జగత్తులను సృష్టించు సామర్థ్యము పొందితిని.

తం పుష్కరం తీర్థరూపిణిం, అహంకమండలావాస్దాప్య జగత్కార్యం కరోమ్యహం.

ఓ నారదా! కాలక్రమమున అంగీరసమహాముని కుమారుడు బృహస్పతి తపస్సుతో నన్ను (బ్రహ్మను) మెప్పించి గ్రహాధిపత్యమును, జలరూపమగు పుష్కరుని బొందెను.

ස පෙන්න කුරු පැරුත්

త్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్మ (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.వీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

పుష్కరుడు బ్రహ్మను విడిచి వెళ్ళలేక దుఃఖముతో యుండగా "త్వద్వియోగః అతి దుస్సహః" అని గ్రహించిన బ్రహ్మ పుష్కరుని అనుగ్రహించి, బృహస్పతి ప్రతిరాశిలో ప్రవేశించిన సమయము నుంచి 12 రోజులు మరియు రాశిని విడుచు సంవత్సరములోని చివరి 12 రోజులు బృహస్పతితో యుండవలసినది. మిగతా సంవత్సరములో పగలు మధ్యకాలములో ప్రతిరోజూ రెండు ముహూర్తకాలము అనగా 11 గంటల నుండి 2 గంటల వరకు ఆ రాశిలో యుండి తిరిగి నాతోనే యుండవలసినదిగా పుష్కరునికి వరము ప్రసాదించెను.

శ్లోగి జన్మ ప్రభృతి యత్పాపం స్త్రియోవా పురుషస్యవా పుష్కర స్నాన మాత్రేణ సర్వం పాపం ప్రణశ్యతి

డ్రమాణము: మేషచగంగా 2) వృషభేచ నర్మదా 3) యుగ్మేచవాణి 4) యమునాకుళీరే 5) గోదావరి సింహగతేచ 6) కన్యాగతేచ 6) కన్మాగతేచ 6) కావేరి తౌళ్యా 8) ఆమళీ భీమరథి 9) చాపేచ పుష్కరిణి 10) మకరేచభద్ర (తుంగభద్ర) 11) ఘఠే గురౌ సింధు 12) మీనే గతే ప్రణీతా పుష్కరమాహుర్మనీషిణః

් పుష్కరములో చేయవలసిన విథ్త, క్రమము

పుష్కర యాత్రికులు పేర్కొన్న ద్రవ్యములనన్నింటిని సేకరించుకొని ప్రాతఃకాలమునందే మేల్కొని కాలకృత్యములను నదీ తీరమునగాక వేరొకచోట తీర్చుకొని పట్టబట్టలను గాని నూతన వస్ర్షములను గాని పూజాద్రవ్యములతో పాటు వెంట తెచ్చుకొని ముందుగా శ్రీ గంగా నదీ స్తోత్రముతో లేక గంగా ధ్యాన శ్లోకములతో (స్నాన విధిలో డ్రాయబడినవి) గంగను ప్రార్థించి బయటిమట్టిని కొద్దిగా పిప్పలాదాత్... అను శ్లోకముతో జలమునందు వేసి ఫలపుష్ప సహితముగా తాంబూలమును నదిలో వేసి ముందుగా సూర్యునికెదురుగా స్నానముచేసి పిమ్మట ప్రవాహమునకభిముఖముగా స్నానము చేయవలెను.

మహాసంకల్పము, ఆర్హ్హ (ప్రదానములయిన పిమ్మట నూతన వస్త్రములను గాని పట్టు వస్త్రములను గాని ధరించి విభూతి (లేక) తిలకధారణముచేసి, శుద్ధ (ప్రదేశమున మంటపము నేర్పరచి బృహస్పతి, భాగీరథీ పుష్కర పూజలను జరిపి మహాత్యములను చదివి, పిమ్మట మంటపమును పురోహితునకీయవలెను. తల్లిదంగ్రులు లేనివారు తదుపరి యజ్హ్హోపవీత ధారణముచేసి, హిరణ్య (శాద్ధము, పిండ (ప్రదానము, తర్పణము చేయవలెను. ఈవిధముగా పుష్కర (ప్రతమాచరించువారు ఆ (ప్రతమైన పిమ్మట భోజన నియమమును ముఖ్యముగా పాటించవలయును. వీలైనంత వరకు హూటల్, క్యాంటీన్లలో గాక స్వయముగా వందుకొని భుజించుట యుక్తము లేదా ఏదైనా (దవ్యమిచ్చి అన్న సత్రములో

ස පෙන්න කුරු පැරුත්

త్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్య (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.పీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

నియమముగా భుజించుట (కేష్ఠము. చాలామంది ఈ విషయమును గమనించుట లేదు. "అన్నశుద్ధి" అవసరము. స్వయముగా చేసుకొనిన పాకమునకు స్థలశుద్ధి, ద్రవ్యశుద్ధి, పాత్రాది శుద్ధి యుందును గాని మిగిలిన చోట్ల ఉండదు.

නගාකාකාමා කාවගාා පංක්වේ සුකුකාමා

నియమములు:-

- 1. నదిలో స్నానమునకు ముందు కొద్దిగా బయటి మట్టిని గాని, ఇసుకను గాని నదిలో వేయవలెను.
- 2. ఫలపుష్ప తాంబూలములను నదిలో వేసి నమస్కరించి స్నానమునకు దిగవలెను. నదిలో ఈతకొట్టరాదు. నదుమ లోతు లేక హృదయ ప్రదేశమునకు తగిన లోతునందే స్నానము చేయవలెను.
- 3. నీటిలో ఉమ్మి వేయరాదు. కనీసము 1కిలో మీటరు దూరములోపు కూడా మలమూత్రములు విసర్జించరాదు. అక్కడికి చేరే ముందే ఈ విషయమున తగు జాగ్రత్త తీసుకొనవలెను. చెప్పులతో నీటిలోనికి దిగరాదు.
- 4. గోచికట్టులేకుండ, పై బట్టలేకుండ స్నానము చేయరాదు. పూజాదులు కూడా చేయరాదు.
- 5. ప్రవాహమునకు ఎదురుగాగాని సూర్భునకెదురుగా గాని స్నానము చేయవలెను.
- 6. తడిబట్టలతో గాని నీరుకారుచూ గాని దీపారాధనము పూజాదికము జరుపరాదు.
- 7. పుష్కర తీర్థకాలము 12 రోజులు ఒక పూట భోజనము, ట్రహ్మచర్యము జరుపుట ముఖ్యము.
- 8. రాత్రి సమయమున స్నానముకూడదు, నదియందు బట్టలు ఉతుకుట, ముఖ్యముగా సబ్బులను ఉపయోగించకూడదు.
- 9. సమీపమున నున్నవారు ప్రతిదినము స్నానము, పూజయు (తర్పణము) తప్పనిసరిగా జరిపి హిరణ్యరూప తీర్థ (శాద్ధము, అన్నరూప తీర్థ రూప (శాద్ధము జరుపుట మంచిది.
- 10. ఈ సంవత్సరమున మరణించిన వారికి సంవత్సరములోపు పిండ ప్రదానము కూడదు. పితృ కార్యములకు 12 గంటల నుండి ముఖ్యకాలము.

కావలసిన ద్రవ్యములు :

- 1. పసుపు కుంకుమలు
- 2. తమలపాకులు వక్కలు
- 3. పుష్పములు ఫలములు
- 4. బియ్యము 2 1/4 కేజీలు
- (50 గ్రాముల బియ్యమును పసుపుతో, కుంకుమతో అక్షతలుగా చేయవలెను)

ස පෙන්නවූ කුකු,ගරේ_ම්

శ్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.వీ, జ్యోతిష్ఠమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

5. బియ్యపు పిండి 100 గ్రాములు 6. కర్పూరము

7. అగరువత్తులు 8. గంధపుపొడి పాకెట్

9. దీపారాధన సామాగ్రి (వత్తులు, నూనె, ప్రమిదలు, అగ్గిపెట్టె)

10. చెంబు, గ్లాసు, ఉద్దరిణె 11. చిల్లర డబ్బులు

12. కొబ్బరికాయలు – 3 13. ఆవుపాలు, నెయ్మి 100 గ్రా.

14. తేనె సీసా 15. కొత్త తువాలు – 1, జాకెట్లు ముక్కలు – 2

16. స్వయంపాకము లేదా దానము చేయదలచుకున్న వస్తువు

17. గంగా ప్రతిమ (బంగారు, వెండి లేక ఇత్తడి) బృహస్పతి, పుష్కర ప్రతిమలు

18. పట్టు పంచె – వస్త్రములు

ಮಹ್ ಸಂಕಲ್ಪಪೂರ್ಯಕ ಗಂಗಾನ್ವಾನ ವಿಥಿ

ప్రాతఃస్నానకాలము ఉదయం గం. 4–30 ని॥ల నుండి సుమారు గం. 9–00ల వరకు ఇందు గం. 4–30 ని॥ల నుండి గం. 5–30 ని॥ల వరకూ ఉత్తమము. నదీ తీరమున మలమూత్ర విసర్జనము సర్వదా నింద్యము. నదిలో దంతధావనము నిషిద్ధము. విడిగా నీరు పాత్రలో తెచ్చుకొని చేసుకొనవలెను.

స్నానమునకు ముందుగా గట్టుపైనున్న మట్టిని తీసుకొని, ఫలపుష్ప తాంబూలములను గైకొని ముందుగా క్రింది శ్లోకముతో మట్టిని నదిలో వేయవలెను.

క్షేత్రోపవాస సంకల్పము

ఉపవాసం కరిష్యామి ట్రీతయేతవ జాహ్నవి ప్రసాదం కురుమే దేవి నిర్విఘ్నం కురుమే ద్రతమ్

ဗဍညာဆု ကွဲနှင့်

తతః ప్రవాహాభిముఖ స్నానం కరిష్యే యన్మయాదురితంతోయం శారీరమల సంయుతం తస్యపాప విశుద్ధ్యర్ధం యక్ష్మ్మాణం తర్పయామ్యహం యేకేచఅస్మత్ములే జాతా అపుత్రా గోత్రిణోమృతాః తే గృహ్ణంతు మయాదత్తం.... వ్వస్త నిప్పీడనోదకం (కట్టుకుని ఉన్న వస్త్రము యొక్క ఎదుటి అంచులు గుప్పిళ్ళ బట్టి నీరు పిండుకొనవలెను)

స్మాన లక్షణం

శ్లో। సంకల్పయుక్త పఠనం మార్జనం ఛాఘ మర్షణం! దేవాది తర్పణం చైవ స్నానం పంచాంగముత్తమమ్॥

పిప్పలాదత్సముత్సన్నే కృత్యేలోక భయంకరీ

ස පෙන්වෙනු කුක්, ලබර් ුත්

త్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త, (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ప్, జ్యేతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

మృత్తికాం తే మయా దత్తమాహారార్థం ప్రకల్పయ గంగా గంగేతి యో బ్రూయాత్ యోజనానాంశ తైరపి ముచ్యతే సర్వ పాపేభ్యో విష్ణులోకం స గచ్చతి దృష్యా జన్మ శతం పాపం స్పృష్ట్వా జన్మ శతానిచ స్నానాజ్జన్మ సహ్యసాణి హంతి గంగా కలౌ యుగే అంబ త్వద్దర్శనాన్ముక్తిర్న జానేస్నానజం ఫలం స్వర్గారోహణ సోపానం మహా పుణ్య తరంగిణిం విశ్వేశం మాధవం ధుణ్దిం దణ్డపాణించ భైరవం వన్దే కాశీం గుహాం గంగాం భవానీం మణికర్ణికాం అతి తీక్ష్ణమహాకాయ కల్పాంత దహనోపమ భైరవాయ నమస్తుభ్యం అనుజ్హాం దాతుమర్హసి యోసౌ సర్వగతో విష్ణు: చిత్స్వరూపీ నిరంజనః స ఏవ ద్రవ రూపేణ గంగాభో నాత్ర సంశయః నందినీ నళినీ సీతా మాలినీ చ మలావహా విష్ణు పాదాబ్జ సంభూతా గంగా త్రిపథ గామినీ భాగీరథీ భోగవతీ జాహ్నవీ త్రిదశేశ్వరీ ద్వాదశైతాని నామాని యత్ర యత్ర జలాశయే స్నానకాలే పఠేన్నిత్యం మహాపాతక నాశనం గంగా తారయతే పుంసాం దశాపరం



పై శ్లోకములతో ప్రార్థించి పుష్పఫలములు సమర్పించి హృదయము వరకు దిగి, లేదా నడుములోతులో నదిలో దిగి స్నానము చేయవలెను. సువాసినీ (ముత్తయిదువలు) స్త్రీలు తలముంచరాదు. దోసిలి నీటితోనే శిరస్నానము చేయవలెను. ఇట్లు స్నానము చేసి పిమ్మట ఆచమనమొనర్చి ఈ క్రింది విధముగా సంకల్పము చేయవలెను.

కేశవాయ నమః నారాయణాయ నమః – మాధవాయ నమః (పురుషులు స్వాహాకారము, ఓం కారములతో ఉపదేశమునుబట్టి చేయవలెను) గోవిందాయ నమః, విష్ణవే నమః, మధుసూదనాయ నమః, (త్రివిక్రమాయ నమః, వామనాయ నమః, శ్రీధరాయ నమః, హృషీకేశాయ నమః, పద్మనాభాయ నమః, దామోదరాయ నమః, సంకర్షణాయ నమః, వాసుదేవాయ నమః, ప్రద్యుమ్నాయ నమః, అనిరుద్ధాయ నమః, పురుషోత్తమాయ నమః, అధోక్షజాయ నమః, నారసింహాయ నమః, అచ్యుతాయ నమః, జనార్దనాయ నమః, ఉపేంద్రాయ నమః, హరయే నమః, శ్రీ కృష్ణాయనమః

శ్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.వీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

ఉత్తష్ఠంతు భూత పిశాచాః ఏతే భూమిభారకాః ఏతేషామవిరోధేన బ్రహ్మకర్మ సమారభే (ప్రాణాయామముచేసి)

మమ ఉపాత్తదురితక్షయ ద్వారా శ్రీ పరమేశ్వర ట్రీతృర్థం శుభే శోభనే ముహూర్తే శ్రీ మహావిష్ణోరాజ్ఞయా ప్రవర్తమానస్య అద్య బ్రహ్మణః ద్వితీయపరార్గే శ్వేతవరాహకల్పే వైవస్వతమన్వంతరే కలియుగే ప్రథమపాదే జంబూద్వీపే భారతవర్నే భరతఖండే మేరోః దక్షిణదిగ్బాగే, వింధ్యస్యోత్తర ఆర్యావరైకదేశే అవిముక్త వారణాశీ క్షేతే ఆనంద వనే మహాశ్మశానే త్రికంటక విరాజితే విక్రమ శకే బౌద్ధావతారే గౌరీముఖే శ్రీ భాగీరథ్యాః పశ్చిమే తీరే బ్రహ్మనాళే ఆది మణికర్ణికాయాం అస్మిన్ వర్తమాన వ్యావహారిక చాంద్రమానేన శోభకృన్నామ సంవత్సరమే బార్హస్సత్సమానేన శోభకృత్ నామ సంవత్సరే (గంగాయము నయోః) మధ్యదేశే మహానద్యాం, గంగాయాం సకల జగత్ర్రష్ణః పరార్ధద్వయజీవినః, చతుర్ముఖ బ్రహ్మణః, ఏకపంచా శద్వత్సరే, ప్రథమమాసే, ప్రథమ పక్షే, ప్రథమే హని, ద్వితీయయామే, తృతీయే ముహూర్తే, ప్రథమ ప్రణవకాలే, యుధిష్ఠిర, విక్రమార్కాదిశకానాం, అంత్యే శాలివాహనశకే, స్వాయంభువ స్వారోచిష ఉత్తమోత్తమ తామస రైవత చాక్షుష వైవస్వత సూర్యసావర్ణిక, అగ్ని సావర్ణిక, ధర్మసావర్ణిక, బ్రహ్మసావర్ణిక, రుద్రసావర్ణాది చతుర్గశమన్వన్తరాణామ్మధ్యే సప్తమే వైవస్వతమన్వంతరే, చతుర్వింశన్మహాయుగేషు గతేషు ఇదానీ మష్టావింశతితమే మహాయుగే కృత్తతేతాద్వాపరయుగేషు ఇదానీం కలియుగే ప్రథమ పాదే, బ్రహ్మ పిత్ప దైవ మను సౌర సారస చాంద్ర నాక్ష్మత బార్హస్పత్య మానానామ్మధ్యే మేరోః దక్షిణ దిగ్బాగే సమస్తదేవతా ట్రాహ్మణ హరిహర గురుచరణ సన్నిధౌ అస్మిన్ వర్తమాన వ్యావహారిక చాంద్రమానేన శోభకృన్నామ సంవత్సరమే బార్హస్పత్యమానేన శోభకృత్ నామ సంవత్సరే వసంత ఋతౌ వైశాఖ మాసే శుక్లపక్షే - తిథౌ - వాసరే, శుభ నక్షత్రే శుభయోగే, శుభకరణే ఏవంగుణ, విశేషణ, విశిష్టాయాం, శుభతిథౌ శ్రీమాన్ - గోత్రః - నామధేయ (స్ర్రీలు శ్రీమతి - గోత్రా - నామధేయా సభర్తృకా అని చెప్పుకో వలయును) ధర్మపత్నీ సమేతః సకుటుంబస్య మమ సమస్తపాపక్షయార్థం మేషంగతే దేవగురౌ సార్ధ త్రికోటితీర్థరాజ సహిత గంగానదీ పుష్కరస్నానకాలే మహాసంకల్ప మంత్ర పఠనం కరిష్యే. (అని నీరు వదలవలయును.)

మహా సంకల్పము :-

అస్య శ్రీమదాదినారాయణస్య అచింత్యాపరిమితశక్త్ర్మాథియమాణానాం మహాజలౌఘ మధ్యే పరిభ్రమమాణానాం, అనేక కోటి బ్రహ్మాందానాం ఏకతమే వ్యక్తావ్యక్త డ్రకృతి మహదహంకారపృథివ్యప్రేజోవాయ్వాకాశాది ఆవరణైరావృతే అస్మిన్ మహతి బ్రహ్మాంద

ස පෙන්න කුරු පැරුත්

త్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త, (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

ఖండయోః మధ్యే ఆధారశక్తి శ్రీ వరాహ, కూర్మ, అనంతాది అష్ట దిగ్గజోపరి డ్రతిష్ఠితస్య, అతల, వితల, సుతల, తలాతల, రసాతల, మహాతల పాతాళ లోకానాం ఉపరితలే, భూర్భువస్స్పర్మహర్జనస్తపస్సత్యలోకానామథోభాగే, మహానాళాయమాన ఫణిరాజరాజశేషస్య సహాస్ట్రఫణామణిమండలమండితే, ఐరావత, పుండరీక, వామన కుముదాంజన పుష్పదన, సార్వభౌమ, సుప్రపతీకాఖ్య అష్టదిగ్దంతి శుందాదంతోత్తంభితే, లోకాలోకాచల వలయితే. వలయాకార, లవణేక్షు సరాసరిదధిక్షీరోదకార్ణవ పరివృతే, జంబూపక్షకుశ క్రౌంచశాక శాల్మలిపుష్కరాఖ్య ఉత్తరద్విగుణీ కృత సప్తద్వీపైర్దీపతే, అంగ, వంగ, కళింగ, కాశ్మీర కాంభోజ, శౌవీర, సౌరాష్ట్ర, మహారాష్ట్ర మగధ, మాలవ, నేపాల, బంగాల, ద్రవిడ, కర్నాట, పాంద్య, పుళింద, ఆంధ్ర, ద్రావిద, దాశర్ణ, విదర్భ, విదేహ, కేశయకోసల, టెంకట, కొంకణ, మత్బమైందవ, పారసీక, ఘూర్జర, యవన, సాల్వ చేది కురు పాంచాల, భోజ, కటకేత్యాది మధ్యదేశాద్యనేక దేశభాషావిశేషభూపాల విరాజితే, ఇంద్రద్వీప, కశేరు, తామ్ర, గభస్తి, నామ, సౌమ్య, గంధర్వ చారణ భారతాఖ్యనవ ఖందాత్మక, ప్రత్యేక నవ సహస్ర యోజన విస్తృత భారతే, కామ క్రోధ లోభ మోహ మాత్సర్య అరిషడ్వర్గరహితైః, యమ నియమాసన ప్రాణాయామ ప్రత్యాహార ధ్యాన ధారణ సమాధ్యష్ఠాంగయోగనిరత్రేకియుతే, మునిసేవిత దండక, వింధ్యక, చంపక, బదరిక, నహుష, గుహ, దేవ, దారుక, కదలీ, కేదార, అరణ్యాఖ్య దశారణ్యయుతే, భాగీరథీ, గౌతమీ, నర్మదా, యమునా, కృష్ణవేణి, బాహుదా, భీమరథీ, తుంగభద్రామలాపహారిణీ, కృతమాలా, తామ్రపర్జీ, చంద్రభాగా, వరుణా, వాపీ, గంగా, గండకీ, గోమతీ, పినాకినీ, వసిష్ఠ, డ్రవర, సరయూ, సరస్వతీ, కుశోద్వర్తి, ఫల్గునీ, సావిత్రీ, కరతోయా, పుణ్యవహీ, ప్రణీతాది అనేక పుణ్య నదీ విరాజితే. అయోధ్యా, మధురా, శ్రీరంగ, ధర్మపురీ, శ్రీ వేంకటాచల, సింహాచల, పాందురంగ, శ్రీశైల, రామేశ్వర, కాశీ, కాంచీ, అమరావత్యాదిపుణ్య దేవాలయవిరాజితే. మత్స్క, కూర్మ, వరాహ నారసింహ, వామన రామత్రయ, కృష్ణ, కల్కి అఖ్య దశావతారై: విరాజితే, సకల దేవతావాసభూతస్య మేరోర్దక్షిణదిగ్భాగే, వింధ్యస్యోత్తర ఆర్యావరైక అవిముక్త వారణాశీ ಕ್ಷೇತೆ ಆನಂದ ವನೆ ಮహ್ ತ್ಮಕಾನೆ ಡಿಕಂಟ ವಿರಾಜಿತೆ ವೀಕ್ಷಮ ಕತೆ ಪೌದ್ಧವತಾರೆ ಗೌರಿಮುಫೆ ಹ್ರಿ ဖှာဂ်ံပင်္ကား ဆံချွည်ာ မိဝီ (စည်းမှုလာဗို မေြ သေးရီးမြှု့ဗာဏာဝ မာည္မိုလ် သိပ္ပညာလ ဘျွဆဆံဝီန చాంద్రమానేన శోభకృత్ నామ సంవత్సరే బార్హస్సత్సమానేన పింగళనామ సంవత్సరే గంగాయమునవర్యోః మధ్యదేశే గంగా మహానద్యాం, సకల జగత్ర్షష్ట్రః పరార్ధద్వయజీవినః, చతుర్ముఖ బ్రహ్మణః, ఏకపంచాశద్వత్సరే, ప్రథమమూసే, ప్రథమపక్షే, ప్రథమే హని, ద్పితీయయామే, తృతీయే ముహూర్తే, ప్రథమ ప్రణవకాలే, యుధిష్టిర, విక్రమార్కాదిశకానాం,

සීමජිකාවූ කුකුූගැටුබ්

త్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త, (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.వీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

అంత్యే శాలివాహనశకే, స్వాయంభువ స్వారోచిష ఉత్తమోత్తమ తామస రైవత చాక్షుష వైవస్వత సూర్యసావర్ణిక, అగ్నిసావర్ణిక, ధర్మసావర్ణిక, బ్రహ్మసావర్ణిక, రుద్రసావర్ణాది చతుర్ధశమన్వన్తరాణామ్మధ్యే సప్తమే వైవస్వతమన్వంతరే, చతుర్వింశన్మహాయుగేషు గతేషు ఇదానీ మష్టావింశతితమే మహాయుగే కృత్రతేతాద్వాపరయుగేషు ఇదానీం కలియుగే ప్రథమ పాదే, బ్రహ్మ పితృ దైవ మను సౌర సారస చాంద్ర నాక్షత్ర బార్హస్పత్య మానానామ్మధ్యే అస్మిన్ వర్తమాన వ్యావహారిక చాంద్రమానేన శోభకృత్ నామ సంవత్సరే బార్హస్పత్యమానేన పింగళనామ సంవత్సరే వసంత ఋతౌ వైశాఖ మాసే.... పక్షే.... వాసరే శుభనక్షతే శుభయోగే, శుభ కరణే, ఏవంగుణ విశేషణ విశిష్టాయాం శుభతిథౌ మమ అనాది అవిద్యా వాసనయా ప్రవర్తమానే అస్మిన్ సంసార చక్రే విచిత్రాభిః కర్మగతిభిరనేకధా జనిత్వా ఇదానీం పుణ్య విశేషేణ గోత్ర సంభూతస్య (సంభూతాయాః) నామధేయస్య (నామ ధేయాయాః) మమ మనోగోచరైః ఆంతరైరపచారైః బాహ్బైరపచారైః సంభావిత సకలదోష నిర్హరణార్థం మహాపాతకో పపాతక సమస్త పాపక్షయార్థం గంగావాలుకాభి సప్తర్ని మండల పర్యన్తం కృతరాశేర్వర్న సహుస్రావసానే ఏకైకవాలుకాపకర్వ క్రమేణ తద్రాశి అపకర్వ సమ్మితకాలే బ్రహ్మలోకే నిత్య నివాససిద్ధ్యర్థం. తిలైస్సూర్యమందల పర్యన్తం కృత రాశేర్వర్న సహస్రావసానే ఏకైక తిలాపకర్నక్రమేణ సర్వరాశ్యపకర్వ సమ్మితకాలే బ్రహ్మలోకే నిత్యనివాస సిద్ద్మర్థం, యవైర్లహమండల పర్యన్తం కృతరావేర్వర్న – సహస్రావసానే ఏకైక యువాపకర్న క్రమేణ తద్రాశ్యపకర్వ సమ్మితకాలే బ్రహ్మలోకే నిత్యనివాస సిద్ధ్యర్థం. మాష్టైః ధృవ మండల వర్శన్తం కృతరాశేర్వర్న సహ్యసావసానే ఏకైక మాషాపకర్నక్రమేణ సర్వరాశ్యపకర్న సమ్మిత కాలే బ్రహ్మలోకే నిత్యనివాస సిద్ద్యర్థం అశ్వమేధాది శత(కతుపుణ్యఫలావాప్త్యర్ధం, మయా సహ దశపూర్వేషాం, దశాపరేషాం, నరకాదుతీర్య శాశ్వత్యబహ్మలోకే నిత్యనివాస సిద్ద్మర్థం. మాష్టై: ధృవమందల వర్యన్తం కృతరాశేర్వర్వ సహస్రావసానే ఏకైక మాషాపకర్నకమేణ సర్వరాశ్యపకర్న సమ్మిత కాలే బ్రహ్మలోకే నిత్యనివాస సిద్ధ్యర్ధం అశ్వమేధాది శతక్రతుపుణ్య ఫలావాప్త్మర్థం, మయా సహ దశపూర్వేషాం, దశాపరేషాం, నరకాదుతీర్య శాశ్వత బ్రహ్మలోకే నిత్యనివాస సిద్ద్యర్ధం మేషగంతే దేవ గురౌ సార్ధ త్రికోటి తీర్థరాజ సహిత గంగా పుష్కర స్నానమహం కరిష్యే (అని నీరు వదలి మూడుసార్లు మునిగి పిమ్మట ఆచమనము చేసి ఈ క్రింది శ్లోకములతో ఆయా దేవతల కర్ష్ట్యమీయవలెను) పవమాన సూక్తాదులతో లేదా అవిత్రః పవిత్రోవా అను శ్లోకముతో నీరు చల్లుకొని

అర్ష్య ప్రదానం :-

ఆచమ్య ఏవంగుణ విశేషణ విశిష్టాయాం శుభతిధౌ గంగా పుష్కర స్నానాం

ස පෙන්නවූ කුකු,ගරේ_ම්

త్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.వీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

గత్వేన అర్హ్మపదానాని కరిష్యే.

శ్రీ పుష్కర గంగానది స్నాన లఘు సంకల్పః ఆచమ్య (కేశవ నామములతో ఆచమనము చేసి)

శుద్ధ్యర్ధం ఉత్తిష్ఠంతు భూతపిశాచాః ఏతే భూమి భారకాః ఏతేషా మవిరోధేన బ్రహ్మకర్మ సమారభే

ప్రాణానాయమ్మ :- ఓం భూ: ... గాయత్రి

సంకల్పం: - ఓం మమోపాత్తదురితక్షయ ద్వారా త్రీమహావిష్ణో రాజ్ఞయా ప్రవర్తమానస్య అద్యబ్రహ్మణః ద్వితీయపరార్దే శ్వేతవరాహకల్పే వైవస్వత మన్వంతరే, కలియుగే, ప్రథమ పాదే, జంబూద్వీపే భరతవర్నే భరతఖందే మేరోర్దక్షిణ దిగ్భాగే వింధ్యస్యోత్తర ఆర్యావరైక దేశే అవిముక్త వారాణశీ క్షేత్రే ఆనంద వనే మహాత్మశానే త్రికంటక విరాజితే విక్రమ శకే బౌద్ధావతారే గౌరీముఖే శ్రీ భాగీరథ్యాః పశ్చిమే తీరే బ్రహ్మనాళే ఆది మణికర్ణికాయాం అస్మిన్ వర్తమాన వ్యావహారిక చాంద్రమానేన బార్హస్సత్సమానేన పింగళ నామ సంవత్సరే చాంద్రమాన శోభకృన్నామ సంవత్సరే ఉత్తరాయణే, వసంతఋతౌ వైశాఖమాసే.... పక్షే... తిథౌ... వాసరే, శుభనక్ష్మతే, శుభయోగే, శుభకరణే, ఏపంగుణ విశేషణ విశిష్ఠాయాం, శుభతిథౌ, శ్రీమాన్ (గోత్రము చెప్పుకొనవలెను).... గోత్రః (పేరు చెప్పుకొనవలెను).... నామధేయోహం, ధర్మపత్నీ సమేతస్య, సకుటుంబస్య.... శ్రీమాన్ గోత్రః శర్మ నామధేయః ధర్మపత్నీ సమేతోహం మమ (ౠవయోః) ఇహ జన్మని జన్మాంతరకృత మనోవాక్కాయ కర్మేన్జియ జ్ఞానేట్లియ మనో వ్యాపారైశ్చ సంభావితానం రహస్య కృతానాం ప్రకాశ కృతానాం సర్వేషాం పాపానాం సద్యః అపనోదనార్థం మమ ఇహజన్మని, జన్మాంతరేషు, బాల్య, కౌమార, యౌవన వార్ధకేషు, జాగ్రత్స్పప్న సుషుప్తాద్యవస్థాసు జ్ఞానతో జ్ఞానతశ్చ, కామతో కామతః స్వతః పర్రపేరణయావా, సంభావితానాం, సర్వేషాం పాపానా మపనోదనార్ధం, అఖంద చైతన్య సిద్ధ్యర్ధం, మేషంగతే దేవగురౌ సార్ధ్మతికోటి తీర్ధసహిత పుష్కర ప్రయుక్త మహాపర్వణి పుణ్యకాలే... అఖండ గంగాభాగీరథీ స్నానమహం కరిష్యే.

గమనిక : పుష్కర ప్రయుక్త మహాపర్వణి పుణ్యకాలేశరీర శుద్ధ్మర్థం కేశవపనం కరిష్యే క్రౌరము చేసుకొనువారు చేసుకొనవచ్చును.

(నదీ తీరమున ఉన్న మట్టిని తీసికాని)

శ్లోగి భూమి ధేనుద్దరణిలోకధారిణి..... పరమాంగతింగ

ముమ్మారు స్నానము చేసి, నీటితోనే మధ్యమ్మవేలి కొనతో ఊర్ద్వపుండ్రము పెట్టు

සමජිතාවූ කුකුූගරේුත්

త్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్య (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్యాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

కొనవలయును.

1) ఓం నందిన్హై నమః 2) ఓం నళిన్హై నమః 3) సీతాయై నమః 4) ఓం మాలిన్హై నమః 5) ఓం మహాపగాయై నమః 6) ఓం శ్రీవిష్ణు పాదాబ్జ సంభాతాయై నమః 7) ఓం గంగాయై నమః 8) ఓం త్రిపథగామిన్హై నమః 9) ఓం భాగీరథ్హై నమః 10) ఓం భోగవత్త్యై నమః 11) ఓం జాహ్నమ్హై నమః 12) ఓం త్రిదశేశ్వర్హై నమః

అను పన్నెండు నామములనూ తలచుకొనుచూ ఒక్కొక్క నామమునకు ఒక్కొక్క మునుక చౌప్తున 12 మునుకలు వేయుట విశేష ఆచారము.

శ్లో బేవగంగే శుభేపుణ్యే భాగీరథి నమోస్తుతే త్వయిస్నానంకరోమ్యద్య పుష్కరస్య సమాగమే విష్ణ పాదాజ్జ సంభూతే గంగే త్రిపధగామిని గృహాణార్థ్యం మయాదత్తం జలే సన్నిహితాభవ గంగాయై నమః ఇదమర్థ్యం సమర్పయామి. తపనస్య సుతే దేవి యమజ్యేష్ఠే యశస్వినీ శుద్ధా నౌ శుద్ధి దే మాతః గృహాణార్థ్యం నమోస్తుతే యమునాయై నమః ఇదమర్థ్యం సమర్పయామి దేవి మానస సంభూతే సర్వస్వత్య ఘనాశిని గృహాణార్థ్యం మయాదత్తం సరస్వతి సన్నిధిం కురు సరస్వత్తై నమః ఇదమర్హ్యం సమర్పయామి.



- శ్లోగి చతుర్ముఖ కరస్థాయీ, కమండలు జలోద్భవ గంగాది సర్వతీర్థానా మధీశ్వర నమోస్తుతే
- శ్లో బు పుష్కరాఖ్య మహాతీర్థ తస్మాత్ స్నానం కరోమహ్యం పాహిమాం నరకాద్హోత్ దేహి స్థానంచ శాశ్వతమ్ (అని మూడు మునకలు వేసి పిదప)
- శ్లో సురాచార్య నమస్తుభ్యం సర్వలోకైక పూజిత త్వయి మేషంగతే దేవగురౌ, భాగీరస్యాం స్నానమాచరేత్ (అని ఇంకొక 3 మునకలు వేయుదురు. పిమ్మట అర్హ్యము లీయవలెను.)

ස පෙන්නවූ කුකු,ගරේ_ම්

త్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త, (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.వీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా <u>విశారద</u>



ఆచమ్య, పూర్వోక్త ఏవంగుణ.... శుభతిధౌ శ్రీ పరమేశ్వర ట్రీత్యర్థం స్నానాంగ దేవర్ని పితృతర్పణం కరిష్యే, అత్ర బ్రహ్మాదయో యేదేవాః తాన్దేవాగ్ స్తర్పయామి ı సర్వాస్ దేవాగ్ స్తర్పయామి, సర్వాన్

దేవగణాగ్ స్తర్పయామి, సర్వాః దేవపత్నీ స్తర్పయామి, సర్వాన్ దేవ పుత్రాగ్ స్తర్పయామి, సర్వాన్ దేవ పౌత్రాగ్ స్తర్పయామి, భూర్దేవాగ్ స్తర్పయామి, భువర్దేవాగ్ స్తర్పయామి, సువర్దేవాగఃగ్ స్తర్పయామి, భూర్భువస్సువర్దేవాగ్ స్తర్పయామి

కృష్ణద్వైపాయనాదయోయే ఋషయః తానృషీగ్ స్తర్పయామి తర్పయామి। సర్వాన్ ఋషీగ్ స్తర్పయామి 2. సర్వాన్ ఋషి గణాగ్ స్తర్పయామి 2. సర్వాః ఋషి పత్నీ స్తర్పయామి 2. సర్వాన్ ఋషి ఫు్రతాగ్ స్తర్పయామి 2, సర్వాన్ ఋషి పౌడ్రాగ్ స్తర్పయామి భూర్ఋషీగ్ స్తర్పయామి 2, భువర్ ఋషీగ్ స్తర్పయామి 2, సువర్ ఋషీగ్ స్తర్పయామి 2, భూర్భువస్సువర్ ఋషీగ్ స్తర్పయామి 2.

(పాచీనావీతీ–సోమః పితృమాన్ యమాయోంగిరస్వాన్ అగ్నిషాత్వా అగ్నిః కవ్యవాహనాదయో యేపితరస్తాన్ పితృన్ స్వధానమస్తర్పయామి స్వధానమ స్తర్పయామి స్వధానమ స్తర్పయామి

భూః పిత్ఫూగ్ స్తర్పయామి 3, భువః పిత్ఫూగ్ స్తర్పయామి 3, సువః పిత్ఫూగ్ స్తర్పయామి 3, భూర్భువస్సువః పిత్ఫూగ్ స్తర్పయామి 3, సవ్యం అనేన దేవర్ని పితృతర్పణేన భగవాన్ నారాయణః సుటీణాతు పరమేశ్వరార్పణ మస్తు స్నాత్వా, ఆచమ్య ఏవంగుణ విశేషణ విశిష్టాయాం పుణ్యతిథౌ ప్రాచీనావీతీ – స్నానకాలే పితృపితామహ ప్రపితా మహానాం... గోత్రాణాం... శర్మణాం వసురుద్రాదిత్య రూపాణాం, మాతృపితామహీ ప్రపితామహీనాం.. గోత్రాణాం.... దాయీనాం వసురుద్రాదిత్య రూపాణాం, మాతృపితామహీ ప్రపితామహీనాం. గోత్రాణాం.... దాయీనాం వసురుద్రాదిత్య రూపాణాం, మాతా మహమాతుః పితామహ, మాతుః ప్రపితామహానాం సపత్నీకానాం సర్వేషాం పితృణాం అక్షయ్య పుణ్యలోకావాప్త్యర్థం గంగానదీ స్నానమహం కరిష్యే. ఇప్పుడు స్నానాంగ పితృతర్పణము చేయవచ్చును. స్నాత్వా ఆచమ్య, స్నానముచేసి ఆచనముచేసి సూర్యార్థ్య ప్రదానాని కరిష్యే.

ఓం ఉద్యన్నద్యమిత్ర మహః ఆరోహ స్నుత్తరాందివం৷ హృద్రోగం మమసూర్యం৷ హరిమాణం – చనాశయ శుకేషమే హరిమాణం రోపణాకాసు దర్మసి৷ అథో హారిద్రవేషమే৷ హరిమాణం నిదర్శసి৷ ఉదగాదయ మాదిత్యః విశ్వేన సహసాసహ ద్విషం తం మహ్యం రంథయన్ మోఅహం ద్విషతేరథం॥

සලපිකාලු කුකුූගරුත්

త్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త, (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.వీ, జ్యోతిష్ఠమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

అర్హ్మప్రదాన మంత్రములు

- శ్లో బానోభాస్కరమార్తాండ చందరశ్మి దివాకర ఆరోగ్య మాయుర్విజయం (తియంపుత్రాంశ్చ దేహిమే సూర్యాయ నమః ఇదమర్హ్యం సమర్పయామి (అర్హ్యమీయవలెను)
- శ్లో బినతాతనయోదేవః కర్మసాక్షీ సురేశ్వర ఆరోగ్యమాయుర్విజయం త్రియం పుత్రాంశ్చ దేహిమే భాస్కరాయ నమః ఇదమర్హ్యం సమర్పయామి (అర్హ్యం)
- శ్లో ఏహిసూర్య సహస్రాంశో తేజోరాశే జగత్పతే అనుకంపయమాం దేవ గృహాణార్హ్యం నమోస్తుతే మార్తాందాయ నమః ఇదమర్హ్యం సమర్పయామి.
- శ్లో ఆ చతుర్భుజ జగత్సష్ట సత్యలో కస్థితావ్యయ సరస్వత్యాచ సహితో గృహాణార్హ్యం నమోస్తుతే సరస్వతీ సహిత బ్రహ్మణే నమః ఇదమర్హ్యం సమర్పయామి.
- శ్లో అష్టమూర్తే మహేశాన గంగాధర కృపానిధే గౌర్యాసహ గృహాణార్హ్యం యథోక్త ఫలదోభవ గౌరీ సహిత ఈశానాయ నమః ఇదమర్హ్యం సమర్పయామి.
- శ్లో బుష్కరాక్ష జగన్నాథ లక్ష్మ్యాసహ జనార్దన అర్హ్హం గృహాణ గంగాయాం మేషస్తో బృహస్పతే లక్ష్మీ సహిత నారాయణాయ నమః ఇదమర్హ్యం సమర్పయామి.
- శ్లో బత్ధరాజ మహాభాగ పుష్కలాఘ వినాశన పుష్కరాఖ్య గృహాణేదం అర్హ్యం సర్వతీర్ధాభిపూజిత పుష్కరాయ నమః ఇదమర్హ్యం సమర్పయామి.
- శ్లో బృహస్పతే సురాధ్యక్ష సర్వదేవ సమస్కృత గృహణార్హ్యం మయాదత్తం మేషస్థోభార్యయాసహ తారాసహిత బృహస్పతయే నమః ఇదమర్హ్యం సమర్పయామి.
- శ్లో అందాద్యావసహో రుద్రా స్సాధ్యా విశ్వే తథాశ్వినౌ సానుగాశ్చసురా స్సర్వే గృహ్ణం త్వర్హ్యం మయోధృతమ్ ఇంద్రాది దేవతాభ్యో నమః ఇదమర్హ్యం సమర్పయామి.

සలకమల్ల పుష్కరార్మన

త్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్య (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.పీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

- శ్లో బునయో వాలఖిల్యాద్యాః సర్వేవైవ మహర్షయః మేషస్థితేగురౌ సర్వే గృహ్ణంతర్వర్హ్యం మయార్పితమ్ వాలఖిల్యాది ఋషిభ్యో నమః ఇదమర్హ్యం సమర్పయామి.
- శ్లో ఆ కశ్యపోత్రిర్భురద్వాజో విశ్వామిత్రోధ గౌతమః పరిష్ఠొజమదగ్నిశ్చ సపైతే ఋషయస్తథా కశ్యపాది సప్తఋషిథ్యో నమః ఇదమర్హ్యం సమర్పయామి.
- శ్లో అరుంధతి మహాదేవి వశిష్ఠ ట్రియభామిని దాంపత్య రక్షణార్ధాయ ఇదమర్హ్యం దదామ్యహమ్ అరుంధత్త్యై నమః ఇదమర్హ్యం సమర్పయామి.
- శ్లో అగ్ని ష్వాత్తా బర్హి షదః కవ్యవాహనచార్యమాః ఆజ్యపాః పితర స్వర్హ్యం గృహ్ణం త్వపిచ సోమపాః అగ్ని ష్వాత్తాది పితృభ్యో నమః ఇదమర్హ్యం సమర్పయామి.
- శ్లో సనకాద్యాస్తథాసింధుః కపిలాద్యామహౌజసః తేగృహ్ణంతు మయాదత్తమర్హ్యం మేషగతే గురౌ సనకాది మహర్షిభ్యో నమః ఇదమర్హ్యం సమర్పయామి.

(ఈ మంత్రంతో అర్హ్యము నిచ్చినట్లయితే పితరులందరికీ తర్పణం చేసిన ఫలం వస్తుంది. పితృతర్పణలు చేయలేనివారు ఈ మంత్రం జపించి ముమ్మారు అర్హ్యములు వదలవలెను.)

పై శ్లోకములతో అర్హ్యమిచ్చి ప్రవాహమునకు ఎదురుగా స్నానము చేయవలెను. ఉపదేశమైనవారిచట దేవర్ని పితృతర్పణమును చేసి హిరణ్య అఘమర్షణ పవమాన సూక్తములను పఠించి మార్జనమును చేసుకొనవలెను.

(తతః డ్రవాహాభిముఖ స్నానం కరిష్యే) పిమ్మట ఈ క్రింది శ్లోకమును చెప్పి గట్టుపై నీరు వదలవలయును. దీనిచే శరీరమాలిన్యమును నీటిలో వదలిన దోషము పోవును.

శ్లో। యన్మయా దూషితం తోయం శారీరమలసంయుతమ్ తద్దోష శమనార్ధాయ యక్ష్మాణం తర్పయామ్యహమ్ ॥

పిమ్మట పురుషులు సంధ్యావందనాదికము చేసి పూజ ప్రారంభించవలెను. స్నానమైన వెంటనే పురుషులు విభూతిని (స్త్రీలు కుంకుమను ధరించి పిమ్మట ఆరవేసిన బట్టలు గాని పట్టువ(స్త్రములు గాని ధరించి బృహస్పతి గంగానదీ పూజ, పుష్కరపూజ జరిపి (గట్టుపైన) ఆ తరువాత మనోవాంఛా ఫలసిద్దికై దానమీయవలెను.

ස පෙන්නවූ කුකු,ගරේ_ම්

త్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

పుష్కర పూజ

కర్నమాత్ర సువర్దేన తదర్ధార్ధేన వాపునః అచార్యం ప్రతిమాం కృత్వా యధా విభవ మర్చయేత్ II రజితే నవధామేషం యధాశక్త్యా వినిర్మితం గంగాయాః ప్రతిమాం కృత్యా రాజతీం వా స్వశక్తితః॥ అశక్తో హృదయేధ్యాత్వా తతః పూజాం సమాచరేత్ ఆగచ్ఛ విబుధాచార్య మేషస్థ సుర పూజిత II తవపూజాం కరిష్యామి భగీరథీ సహితస్యవై జీవేన జీవరూపోసి మేషస్థోసి సురార్చిత II తవపూజాం కరిష్యామి భగీరథీ సహితస్యవై విష్టరం పాద్యమర్థ్యం చ దాతవ్యం సురమంత్రిణే II చతుర్భుజం దండహస్తం వరదాభయ పాణినం గజసింహ సమారూధం గురుం ధ్యాత్వానమామ్యహం



ఆచమ్య.... కేశవాయ నమః.... శ్రీ కృష్ణాయనమః.... బ్రహ్మకర్మ సమారభే. సంకల్పము : – మమోపాత్తదురితక్షయద్వారా శ్రీ పరమేశ్వర (పీత్యర్థం.... శుభే శోభనే ముహూర్తే శ్రీ మహావిష్ణో...... శ్రీ పరమేశ్వర (పీత్యర్థం శ్రీమాన్........ గోత్రు.... నామధేయః...... శ్రీమతః..... గోత్యం.... నామధేయుస్య, శ్రీమతి.... గోత్రా... నామధేయా శ్రీమత్యాం.... గోత్రాయః....... నామధేయాయాః...... సహకుటుంబానాం క్షేమ స్టైర్య, విజయ, అభయ, ఆయురారోగ్పైశ్వర్యాభివృద్భర్థం మేషంగతే దేవగురౌ సార్ధత్రికోటి తీర్థరాజసహిత గంగా పుష్కరాంగత్యేన యథాశక్తి పుష్కర దేవతాపూజాం కరిష్యే. (నీరు వదలవలెను.)

ప్రాణట్రతిష్ఠా :- పుష్కరాఖ్య జగన్నాథ! యావత్పూజావసానకమ్। తావత్త్వం (ప్రీతిభావేన బింబేస్మిన్ సన్నిధింకురు ।।

శ్రీ పుష్కరరాజదేవతాభ్యోనమః ప్రాణప్రతిష్ఠాపనముహూర్తస్సుముహూర్తోస్తు అని పుష్పాక్షతలను మంటపమునకు ఉత్తరభాగములోనున్న తమలపాకునందు వక్కపైగాని పుష్కర ప్రతిమపైగాని వేయవలెను. స్థాపితోభవ, అవకుంఠితో భవ, సన్నిహితో భవ, సన్నిరుద్దోభవ, ప్రసీద ప్రసీద (అక్షతలు వేసి)

ధ్యానమ్ :– పుష్కరాఖ్య! జగన్నాథ! సర్వతీర్థనిషేవిత! ధ్యాయామి త్వాం సుర్వతేష్థ! సర్వలోకహితే రతు

සමජිතාවූ කුකුූගරේුත්

శ్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.వీ, జ్యోతిష్ఠమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

శ్రీ పుష్కరరాజాయ నమః ధ్యాయామి

ఆవాహనమ్ :- పుష్కరాఖ్యం జగన్నాథం సర్వతీర్ధనివాసినమ్ । ఆవాహయామి భక్త్యాత్వాం స్వపీతో భవసర్వదా ॥

శ్రీ పుష్కరరాజాయ నమః ఆవాహయామి.

ఆసనమ్: - శ్రీ పుష్కర రాజాయ నమః నవరత్న ఖచిత హేమ సింహాసనం సమర్పయామి.

పాద్యమ్: - శ్రీ పుష్కర రాజాయ నమః పాదయోః పాద్యం సమర్పయామి.

అర్హ్మమ్: - శ్రీ పుష్కర రాజాయ నమః హస్తయోః ఆర్ట్యం సమర్పయామి.

ఆచమనీయమ్: - శ్రీ పుష్కర రాజాయ నమః ముఖే ఆచమనీయం సమర్పయామి.

స్నానమ్ :- లసన్మకుటమాణిక్య శోభయాధ్వాంతనాశన । స్నాపయామి సురారాధ్య! శుద్ధ గంగాజలైశ్ముజైః ॥

శ్రీ పుష్కర రాజాయ నమః శుద్ధోదకస్నానం సమర్పయామి. స్నానానంతరం శుద్ధాచమనీయం సమర్పయామి.

వడ్డమ్: - శ్రీ పుష్కరరాజాయ నమః వస్త్రుయుగ్మం సమర్పయామి. వస్రార్థం పుష్పాక్షతాన్ సమర్పయామి. వస్రుధారణానంతరం శుద్ధాచమనీయం సమర్పయామి. (పుష్పాక్షతలు చల్లి, నీరు పశ్భెములో వదలవలెను)

గంధము: - శ్రీ పుష్కరరాజాయ శ్రీ గంధాన్ ధారయామి (గంధము వేసి) గంధ్యస్యోపరి అలంకరణార్థమక్షతాన్ సమర్పయామి. కుంకుమం సమర్పయామి.

అక్షతై: - పుష్పైశ్చ పూజయామి కేశవాయ నమః శ్రీ కృష్ణాయ నమః శ్రీ నమః నానావిధ పరిమళ పత్ర పుష్పాక్షతాన్ సమర్పయామి.

ధూపము :- శ్రీ పుష్కరరాజాయ నమః ధూపమాధ్రూపయామి (అగరుపుల్ల వెలిగించి చూపవలెను)

దీపము: - శ్రీ పుష్కర రాజాయ నమః దీపం దర్శయామి, ధూపదీపానంతరం శుద్ధా చమనీయం సమర్పయామి. దీపము చూపి నీరు పశ్భెములో వదలి నైవేద్యముగా అరటి పండు లేక, ఖర్మారపు పండును నివేదనముగా చేయవలెను.

డైవేద్యము: - అపవిత్రక... అభ్యంతరశ్యుచిః అని పదార్ధముపై నీరు చల్లి పరిషించామి చుట్టూ నీరు త్రిప్పి అమృతమస్తు అని పశ్భెములో నీరు వదలి శ్రీ పుష్కర రాజాయ నమః అమృత నైవేద్యం సమర్పయామి (అని చెప్పి 5మార్లు ప్రాణం నమః అపానం నమః వ్యానం నమః, ఉదానం నమః సమానం నమః) చూపి మధ్యే మధ్యే పానీయం సమర్ప

සමජිකාවූ කුකු,ගර්ුත්

ర్రీ చిలకమల్లి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్మ (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

యామి. (నీరు వదలవలెను) ఉత్తరాపోశనం సమర్పయామి. హస్తా ప్రక్షాళయామి, పాదౌ ప్రక్షాళయామి, శుద్ధాచమనీయం సమర్పయామి (నీరు వదలవలెను)

తాంబూలము : – శ్రీ పుష్కర రాజాయ నమః తాంబూలం సమర్పయామి. తాంబూలము పెట్టి నమస్కరించవలెను.

సీరాజనము: - శ్రీ పుష్కర రాజాయ నమః నీరాజనం దర్శయామి (కర్పూరము వెలిగించి చూపించి) నీరాజనానంతరం శుద్ధాచమనీయం సమర్పయామి. (నీరు వదలవలెను) మండ్రపుష్పము: - శ్రీ పుష్కర రాజాయ నమః సువర్ణ మండ్ర పుష్పం సమర్పయామి. ట్రదక్షిణము: - యాని కాని చ పాపాని... శ్రీ పుష్కర రాజాయ నమః మానసిక ట్రదక్షిణ నమస్మారాన్ సమర్పయామి.

ధారాదత్తం: – యస్యస్మృత్యాచ నామోక్త్యా తపః పూజాక్రియాదిషు న్యూనం..... సంపూర్ణతాం.... మంత్రహీనం క్రియాహీనం... తదన్తుతే అనయాధ్యానావాహనాది షోదశోపచార పూజయా భగవాన్ సర్వాత్మకః పుష్కరరాజస్సు ట్రీతస్సుప్రసన్నో వరదోభవతు. (అక్షతలతో నీళ్ళు వదలి) శ్రీ తీర్థరాజపుష్కరదేవతా[పసాదం శిరసా గృష్ణామి. (పూజించిన అక్షతలను శిరస్సున వేసుకుని (వేయించుకొని) ప్రష్కర (వత మాహాత్మ్మమును పఠించవలెను.



සලපිබාවූ බුබු,ගැරුත්

త్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

పుష్కర వ్రత కథ

పూర్వము సౌవీర దేశమును సుమతి అను రాజు పరిపాలించుచుండెను. అతనికి చాలాకాలము వరకు సంతతిలేకపోవుటచే శివుని ఆరాధించి, ఆయన అనుగ్రహముచే సర్వలక్షణ సంపన్నుడగు పుత్రరత్నమును పొందెను. శుక్లపక్ష చంద్రుడు వలే వృద్ధి చెందు ఆ కుమారునకు మహారాజు చిత్రరథుడను నామకరణముచేసి సకల విద్యలను నేర్పించెను. యవ్వనవంతుడైన చిత్రరథునితో మహారాజు నేనిక రాజ్యభారము వహించలేను నీవు పట్టాభిషిక్తుడవై ధర్మపరిపాలనము చేయమని ఆదేశించి అతని వెనువెంట చతురంగ సైన్యముతో తరలి వెళ్ళి అన్ని దిక్కులను జయించి అపార ధన సంపదతో రాజ్యమునకు తిరిగి వచ్చి కుమారుని పట్టాభిషిక్తుని కావించెను. తాను ప్రహంత జీవితమును గడుపుచుండగా గంగానదీ పుష్కర సమయము సమీపించుటచే ఆ రాజు వద్దకు పుష్కర తీర్ణయాత్రకై బయలుదేరి "గృత్న్నమదుడ"ను ఋషి వచ్చి ఆరాజుచే అతిథి మర్యాదలనందు కొని ఆసీనుదయ్యెను. ఆ మహారాజు కుశల్(పశ్నలయిన పిమ్మట మహర్షీ! మీరాకచే నా జన్మ చరితార్థమయినది ఊరకరారు! మహాత్ములు. మీరు విచ్చేసిన కారణమును తెలిపి నన్ను అనుగ్రహించుడని ప్రార్థించెను. ఆ మహర్షియు నేను గంగాపుష్కర యాత్రార్థమై వెడలుచున్నాను అందులకై ధనము కావలెను అని పలుకగా స్వామి! ఈ రాజ్యము మీది కాదా! అని సంభావంచి తన కుమారుని రావించి నమస్కరింపచేసి ఇతడు మహేశ్వర డ్రపాదలబ్దపు్రతుడు ఇతడు దీర్వాయుష్మంతుడే కదా. త్రికాలవేదులు మీకు తెలియని విషయము ఉండదు కాదా! అని పలుకగా ఆ ఋషి మహారాజా! నీవడిగితివి కాన చెప్పక తప్పదు. పూర్వజన్మమున ఇతడు చోళదేశమున సుదర్శనుడను ట్రాహ్మణుని కుమారుడు సుశర్మ ఇతని నామధేయము. ఇతని తండ్రి అనేక యజ్ఞములు చేసి అనుష్ఠాన తత్పరుడై వార్ధకదశలో భార్యను పుత్రునివద్ద ఉంచి తామ్రపర్ణీ నదీ తీరమున యోగనిష్ఠతో ముక్తిని పొందెను. ఇంటనున్న సుశర్మ ధర్మపరుడైననూ భార్యాలోలుడై తల్లికిని భార్వకును కలహము ఏర్పడుటచే భార్య గయ్యాళికాగా అత్తపై చాడీలు చెప్పుటతో ఇంటనేనైనా, తానైనా ఉందవలెనని పంతము పట్టుటచే భార్యాలోలుడై తల్లిని ఇంటినుండి వెదలగొట్టెను. ఆ తల్లియు దిక్కులేక వృద్ధ వయస్సులో అనేక కష్టములననుభవించి హీనముగా దిక్కులేనిదై మరణించెను. తల్లి అకాలమరణమునకు కారణమైన ఆ సుశర్మయే తన సుకృత విశేషముచే నీ కుమారుడుగా జన్మించినాడు. అతని ఆయుర్ధాయము నలుబది సంవత్సరములు. ఇక ఇతని ఆయుర్గాయము మూడు జాములు మాత్రమే మిగిలి యున్నది అని చెప్పగా మహారాజు నిశ్చేష్టుడై భగ్నహృదయుడై నాకు పుత్రభిక్ష పెట్టుమని బహువిధముల మహర్విని ప్రార్థించెను. కృపాశీలుడగు మహర్షి క్షణమాలోచించి మహారాజా! మీ కుమారుడు దీర్వాయుష్మంతుడగు

ස පෙන්න කුරු පැරුත්

త్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త, (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.వీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

టకు ఒక్కటియే మార్గము. ఇపుడు పుష్కర సమయము ఆసన్నమగుటచే వెంటనే మీ కుమారుని గంగా స్నానమాచరింపచేసి అపమృత్యు పరిహారార్గము జపముతో పాటు గంగా పుష్కర ప్రతమును ఆచరింపచేసినచో ఇతడు దీర్ఫాయుష్మంతుడగునని చెప్పగా సుమతి వెనువెంటనే తన కుమారునితో పాటు గంగానదికి వెళ్ళి ఆ మహర్వి చెప్పిన రీతిగా ఈ ప్రతమునాచరించుటచే అతడు దీర్ఫాయుష్మంతుడై ఆరువేల సంవత్సరముల దీర్ఫాయుర్దాయము కలిగి ధర్మపరిపాలన మొనర్చెను. ఈ ప్రతమునుపదేశించిన మహర్విని ఉచిత రీతిని సత్కరించి మహారాజు కృతకృత్యుడయ్యెను. కావున గంగా పుష్కర ప్రతమును ఆచరించువారు అపమృత్యువును తొలగించుకొని ఐహికాముష్మికములను పొందుదురని ట్రహ్మనారదునికి చెప్పిన వృత్తాంతమును సూతుడు శౌనకాదులకు బోధించెను. ఈ కథను చదివి అక్షతలను శిరసున పెద్దలచే వేయించుకొని పిమ్మట యథాశక్తిగా తనకు ఇష్టమైన వస్తువులను టాహ్మణునకు సంకల్పించి దానమిచ్చి మండపమును కూడా ఆయనకు దానమీయవలెను.

తర్మణము మలియు పిండప్రదానమునకు అవసరమగు వస్తువులు

పుష్కర ఘట్టములలో పురోహితుల వద్ద అన్నియు లభించును. మనము ఇంటివద్ద నుంచి తీసికొని వెళ్ళుటకు ఆసక్తి గలవారికి మాత్రమే.

తర్పణము: - గ్లాసులు - 2, ఉద్ధరిణె పళ్ళెము, నువ్వులు 50 గ్రా, దర్భ (కొసలుగా యుండునది), యజ్ఞోపవీతము (ధరించుటకు), యజ్ఞోపవీతము, చిల్లరడబ్బులు, తమలపాకులు, పక్కలు, పండు, గోమయము సంకల్పము చెప్పి తిలోదకములు ఇవ్వవలెను. పితృతర్పణం కరిష్యే

ఉదాహరణ : అస్మత్ పితరం... గోత్రం శర్మాణం వస్తురూపం స్వధానమస్తర్పయామి.

పిండ[పదానము: - గ్లాసులు - 2, ఉద్ధరిణె, పళ్ళెము, నువ్వులు 50 గ్రా, నెయ్యి, కొత్త తువాలు, గోమయము, గంధము పొడి డబ్బా, బియ్యంపిండి లేదా గోధుమపిండి, బెల్లము, తమలపాకులు, వక్కలు, పండ్లు చిల్లర రూపాయలు, విస్తళ్ళు, బియ్యము, కందిపప్పు, బెల్లము, చింతపండు, ఉప్పు, మిరపకాయలు, కూరగాయలు.

1. (కాద్ధము : (కాద్ధము మూడు విధములు. హీరణ్య (కాద్ధము (అనగా డబ్బు సర్వపదార్ధముల (ప్రత్యామ్నాయము (కింద పెట్టి (కాద్ధము చేయుట) అయన (కాద్ధాదుల వలె. ఆమ(కాద్ధము (అనగా బియ్యము, పప్పు మొదలగునవి యిచ్చుట) అన్న (కాద్ధము. పుష్కరాదుల యందు హీరణ్య (కాద్ధము చేయవచ్చును.అన్న (కాద్ధము చేసిన తప్పు లేదు. (బాహ్మణులు కూడ, హీరణ్య(కాద్దము చేయువలయునని కాస్తము, దేశాచారము గూడ

ස පෙන්නවූ කුකු,ගරේ_ම්

త్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

గలదు. దీనికి ప్రమాణములు కలవు.

ఫలం – డ్రాద్ధం కృత్వాతు ధర్మాత్మా – సంతానం లభతేనరః

పిండ్రప్రదానము: యవపిండి, గోధుమ, బియ్యపుపిండి, దీనిలో గాని నువ్వుపిండిగాని కలిపి, రేగుపంద్లవలెజేసి పిండములు వేయవలయును. పిలండములు వేయు క్రమము చక్రరూపముగా పైన చూపబడినది. ఆ ప్రకారముగా పిండములు పెట్టవలెను.

తర్వణమునకు - పిండప్రదానమునకు సంకల్పము ఒకటే

పింద్రపదానమునకు ఉదాహరణ : అపసవ్యముతో (పాచీనావీతి) ఏతత్తే అస్మత్ పి్రణే భరద్వాజ గోత్రాయ వేంకటనారాయణప్ప శర్మణే, వసురూపాయ, యేచత్వామను, అస్పత్రితే భారద్వాజస గోత్రాయ వెంకటనారాయణప్ప శర్మణే వసురూపాయ యేచత్వా మనుగచ్ఛన్తి తేభ్యశ్చాయం పిండు తస్పైతే స్వధానము గయాయాం దత్తమస్తు.

గమనిక : తర్పణములో డ్రాసిన క్రమము, ప్రకారము చనిపోయిన వారికి పింద్రపదానములో పైవిధముగా చెప్పి పిండదాన క్రమ పద్దతిలో పిండము పెట్టుట మంచిది.



ි ම්ර්ත්ත - භීරය්නු යන්නා ම්ර්ත්ත සිටුන් සිටුන්

మమ ఉపాత్త దురితక్షయ ద్వారా, శ్రీమహావిష్ణో రాజ్ఞయా ట్రవర్తమానస్య అద్య బ్రహ్మణః ద్వితీయ పరార్ధే, శ్వేతవరాహ కల్పే – వైవస్వత మన్వంతరే – కలియుగే ప్రథమపాదే జంబూద్వీపే – భారతవర్నే – భరతఖండే, మేరోర్ధక్షిణదిగ్భాగే వింధ్యస్యోత్తర ఆర్యావరైకదేశే అవిముక్త వారాణశీ క్షేతే ఆనందవనే మహాశ్మశానే త్రికంటక విరాజితే విక్రమ శకే బౌద్ధావతారే గౌరీముఖే శ్రీ భాగీరధ్యాః పశ్చిమే తీరే బ్రహ్మనాళే ఆది మణికర్ణికాయాం అస్మిన్ వర్తమాన వ్యావహారిక చాంద్రమూనేన బార్హస్సత్సమానేన పింగళ నామ సంవత్సరే (గంగాయమునయోః) మధ్యదేశే, మహానద్యాం గంగాయాం సకల జగత్సమ్టః పరార్ధద్వయజీవినః చతుర్ముఖ బ్రహ్మణః, ఏకపంచా శద్వత్సరే, ప్రథమమాసే, ప్రథమ పక్షే, ప్రథమే హని, ద్వితీయే ముహూర్తే, ప్రథమ ప్రణవకాలే, యుధిష్ఠర, విక్రమార్కాదిశకానాం, అంత్యే శాలివాహనశకే, స్వాయంభువ స్వారోచిష ఉత్తమోత్తమ తామసరైవత చాక్లుష వైవస్వత సూర్యసావర్ణిక, అగ్ని సావర్ణిక, ధర్మసావర్ణిక, బ్రహ్మసావర్ణిక, రుద్రసావర్ణిక చేతుర్ద శమన్వన్తరాణామ్మధ్యే సవ్తవేపే వైవస్వతమన్వంతరే, చతుర్వింశన్మహాయుగేషు గతేషు ఇదానీ మష్టావింశతితమే మహాయుగే కృతత్రతాద్వాపర యుగేషు ఇదానీం కలియుగే ప్రథమ పాదే, బ్రహ్మ పితృ దైవ మనుసౌర సారస చాంద్ర నాక్షత్ర బార్హస్పత్య మానానామ్మధ్యే సమస్త దేవతా బ్రాహ్మణ హరిహర గురుచరణ సన్నిధౌ

සමජිතාවූ කුකුූගරේුත්

త్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్య (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.పీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

అస్మిన్ వర్తమాన వ్యావహారిక చాంద్రమానేన శోభకృత్ నామ సంవత్సరే ... ణాయనే.... బుతౌ, మాసే.... పక్షే.... తిథౌ...... వాసరే శుభనక్ష్మతే శుభ యోగ, శుభ కరణ ఏవంగుణ విశేషణ విశిష్టాయాం పుణ్య తిథౌ, మేషంగతే దేవగురౌ సార్ధ త్రికోటి తీర్థ సహిత పుష్కర ప్రయుక్త గంగా నదీ తీరే తీర్థ (శాద్ధ / తిలోదక / పింద్రపదానాని కరిష్యే.

శుభ్రమైన ప్రదేశమందు ఆవుపేదతో అలికి, కొసలు దక్షిణముగా యుండునట్లు దర్భలు పరచి, వానిపై తిలోదకములు వదలి క్రింద చెప్పిన విధముగా పిందములు పెట్టవలయును.

శ్లోగి సక్తు భిస్తల మిడ్రైశ్చ, పిందదానంతు వాగ్యతౌ కృతోభయేభ్యో, వర్గేభ్యో, మంత్రెరేభి రుదీరయన్

(బియ్యము పిండి + (గోధుమపిండి) నూగులు కలిపి పిండములు చేసి ప్రతి దానికి అంగుళము ఖాళీ వదలి ఒకదానికొకటి తగలకుండ పెట్టవలయును.)

- శ్లోగి ఆదౌ పితా తథామాతా, సాపత్నీ జననీ తధా, మాతా మహస్సపత్నీకా, ఆత్మపత్నీస్వనంతరమ్
- శ్లో 11 సుత, బ్రాతృ పితృవ్యాళ్ళ మాతులా స్సహభార్యకాః దూహితా భగినీవైవ దౌహిత్రో భాగినేయకః
- శ్లో11 పితృష్వసా, మాతృష్వసా జామాతా భావుకస్నుషాః శ్వశుర శ్యాలకశ్షైవ, స్వామినో, గురు, రిక్థినః



తాత్కాలిక పింద ప్రధాన విధి: – సోలెదు పిండిని ముప్పైమూదు పిందములుగా మలచి ఎవరెవరికి పింద ప్రదానం చేయదలచామో వారినందరినీ స్మరించి ఆవాహనచేసి అవసర నైవేద్యముగా బెల్లంముక్కను వుంచాలి. కర్మానంతరం రెండు దర్భపుల్లలూ, నాలుగు నువ్వులతో సహా పిందాలను గంగానదిలో కలిపివేయవలెను.

పొత్తరలు :- పొయ్యి బెట్టదం వండటం వగైరాలు చేయదానికి అవకాశం లేనివారు, పొత్తరలను ఇస్తారు. అది కూడా (శాద్ధ (తిథి) తుల్యమైన పుణ్యాన్నిస్తుంది. యథాశక్తిగా ఈ పొత్తరలు ఇవ్వవచ్చును. పుష్కర సమయములో ఆ పన్నెండు రోజులలో ఏ రోజు పొత్తరలిచ్చినా, పిండ్రప్రదానాదులు చేసినా తప్పులేదని శాస్త్రకారులు చెబుతున్నారు.

తీర్థశ్రాబ్దీయ పిండ విభి::-

శ్లో। పితృాణాం పశ్చిమేభాగే మాతృపిందం విధీయతే, మాతా మహాశ్చ తతూకపర్పే ఆత్మపత్నీ తదుత్తరే ।।



ස පෙන්නවූ කුකු,ගරේ_ම්

శ్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్య (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.పీ, జ్యోతిష్యమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

సుత్యభాతృపితృవ్యాశ్చ మాతాపిత్రో శ్చ మధ్యమే మాతా మహమహీ మధ్యే మాతులా స్సహభార్యకాః శ్వకూశ్వశుర యోర్మధ్యే శ్యాలకస్స విధీయతే, దుహిత్రాది తతోన్యేషాం శేషం దక్షిణతో విధిః ॥ పుంపిందం వామత ట్రీణాం తత్పుతం సముపస్థితం అంగుష్ఠ పరిమాణంతు గోత్రం మన్యం నసంస్పృశేత్ ॥ నిరాశాః పితరో యాంతి విపరీతో భవేద్యది ॥

ఎవరెవలకి తీర్థ విభి పెట్టాలి?

పవిత్రమును ధరించి దక్షిణాభిముఖుడై పూర్తిగా సంకల్పము చెప్పి ప్రాచీనావీతిగా తర్పణము చేయవలయును. (కింద వ్రాసిన విధముగా పిండములు పెట్టవలయును. మరియు తర్పణములు వదలవలయును.

తండ్రి – అస్మత్ పితరం... గోత్రం ... శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమస్తర్పయామి။ తాత – అస్మత్పితామహం... గోత్రం ... శర్మాణం – రుద్రరూపం స్వధానమస్తర్పయామి။ ముత్తాత – అస్మత్పపితామహం... గోతం... శర్మాణం – ఆదిత్యరూపం స్వధాన మస్తర్పయామి။

తల్లి – అస్మత్ మాతరం... గోత్రాం ... దాం వసురూపాం స్వధానమస్తర్పయామి။ నాయనమ్మ –అస్మత్పితామహీం... గోత్రాం... దాం రుద్రరూపాం స్వధానమస్తర్పయామి။ ఈమె అత్త – అస్మత్ పితామహీం.. గోత్రాం.. దాం ఆదిత్యరూపం స్వధానమస్తర్పయామి။ సవతి తల్లి– అస్మత్ సాపత్నీమాతరం.. గోత్రాం.. దాం వసురూపాం స్వధాన మస్తర్పయామి။

దత్తుతండ్రి – అస్మత్ పాలకపితరం... గోత్రం.. శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమస్త ర్పయామి။

దత్తుతల్లి – అస్మత్ పాలకమాతరం... గోత్రాం... దాం వసురూపాం స్వధానమస్తర్పయామి။ తల్లియొక్క తండ్రి – అస్మత్ మాతామహం.. గోత్రం.. శర్మాణం – వసురూపాం స్వధాన మస్తర్పయామి။

ఆయన తండ్రి – మాతాఃపితామహం... గోత్రం... శర్మాణం – రుద్రమాపం స్వధానమ స్తర్పయామి။

ఆయన తండ్రి – మాతుః ప్రపితామహం.. గోత్రం.. శర్మాణం – ఆదిత్యరూపం స్వధాన మస్తర్పయామి။

తల్లియొక్క తల్లి మాతామహీం.. గోత్రాం.. దాం వసురూపాం స్వధానమస్తర్పయామి။

ස පණිතු කුකු, ලංජු බ

శ్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.వీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

ఆమె అత్త – మాతుఃపితామహీం... గోత్రాం.. దాం రుద్రరూపాం స్వధానమస్తర్పయామి॥ ఆమె అత్త – మాతుః(పపితామహీం.. గోత్రాం.. దాం ఆదిత్యరూపాం స్వధాన మస్తర్పయామి॥ తన భార్య – ఆత్మపత్నీం.... గోత్రాం.. దాం వసురూపాం స్వధానమస్తర్పయామి॥ కుమారుడు – సుతం గోత్రం... శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమస్తర్నయామి॥ అన్న – జ్యేష్ఠ బ్రాతరం గోత్రం... శర్మాణం... వసురూపం స్వధానమస్తర్పయామి॥ తమ్ముడు – కనిష్ఠ జ్రాతరం గోత్రం... శర్మాణం– వసురూపం స్వధానమస్తర్పయామి။ పెద్ద తండ్రి – జ్యేష్థ పితృవ్యం గోత్రం... శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమస్తర్పయామి॥ మేనమామ – మాతులం గోత్రం ... శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమస్తర్పయామి॥ కూతురు – దుహితరం... గోత్రం – దాం వసురూపం స్వధానమస్తర్నయామి။ అక్క – జ్యేష్టభగినీం.. గోత్రం – దాం వసురూపం స్వధానమస్తర్పయామి။ చెల్లెలు – కనిష్ఠ భగినీం... గోత్రాం – దాం వసురూపం స్వధానమస్తర్నయామి॥ కుమార్తెకొడుకు – దౌహిత్రోం – గోత్రం... శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమస్తర్పయామి॥ మేనల్లుడు – భాగినేయకం... గోత్రం... శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమస్తర్పయామి॥ మేనత్త – పితృభగినీం... గోత్రం – దాం వసురూపం స్వధానమస్తర్పయామి॥ తల్లిసోదరి – మాతృభగినీం... గోత్రం – దాం వసురూపం స్వధానమస్తర్నయామి။ సభర్తృకాం.. గోత్రం.. శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమస్తర్నయామి॥ సపుత్రకాం.. గోత్రం.. శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమస్తర్పయామి॥ అల్లుదుజామాతరం.. .. శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమస్తర్నయామి။ తనతోబుట్తువు భర్త – భావవుకం... గోత్రం ... శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమ స్తర్పయామి। కోడలు... స్నుషాం.. గోత్రం.. శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమస్తర్భయామి॥ తన భార్య తండ్రి – శ్వశురం గోత్రం.. శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమస్తర్పయామి॥ భార్యతల్లి – శ్వశూరం గోత్రం.. దాం – వసురూపం స్వధానమస్తర్పయామి॥ భార్య సోదరుడు – స్యాలకం గోత్రం.. శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమస్తర్పయామి॥ గురువు – గురుం గోత్రం... శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమస్తర్భయామి॥ తనను ఆశ్రయించిన వారు ఆర్థినం గోత్రం... శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమ స్తర్పయామి। తనను పోషించినవాడు – స్వామినం గోత్రం.. శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమ స్తర్భయామి।। విద్యనేర్పినవారు – ఆచార్యం గోత్రం... శర్మాణం – వసురూపం స్వధానమస్తర్పయామి॥

శ్లో။ యే కే చాస్మత్కులే జాతా అపుత్రా గోత్రిణో మృతాః తే గృహ్హంతు మయాదత్తం సూత్రనిష్పీదనోదకం ။

అని చెప్పి యజ్హోపవీతము ముదులను నీటిలో ముంచి కళ్ళకు అద్దుకొనవలయును.

ස්පූජිකාව මුණු පැරදි

శ్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త, (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

(12 రోజులు వరసగా చేయవలసినవి) ఒకటవ దినము

ಬಂಗಾರಮು

శ్లోగి స్వర్ణం పవిత్రమమలం, స్వర్ణం పాప్రప్రణాశనమ్, స్వర్ణం హిశంకరయస్మా దతశ్శాంతిః ప్రయచ్చమే



ఈ శ్లోకము చెప్పి అస్మైబ్రాహ్మణాయ అని పై విధముగా చెప్పి దానమీయవలయును "అనుభూత్వా సర్వభోగాన్ సూర్యలోకమవాప్పుయాత్"

బంగారము దానము చేసినవారు సర్వసౌఖ్యములు యిచటననుభవించి సూర్య లోకమునకు చేరుదురు. ప్రతి దానమునకు శ్లోకము చదివి దక్షిణతో కూడ దాసమిచ్చి నీళ్ళు విడిచిపెట్టవలయును.

ವಂದಿ

శ్లో బితృణాం వల్లభం యస్మాద్విష్ణోర్వై శంకరస్య చ రజితం పాతుమేనిత్యం, శోకసంసార సాగరాత్ II వెండి దానమిచ్చిన రాజలోకము చేరు.



శ్లో స్వాంకరోషి దాతారం, ఇహలోకే పరత్రచ, యస్మా త్తస్మాచ్చివంమేస్యా, సాతశ్వాంతిం డ్రయచ్ఛమే II ధాన్యదానము చేసినారు కుబేరునివలే ధనవంతులగుదురు.



భూదానం

శ్లో। సర్వసప్యాతయా భూమిః, వరాహేణస ముద్ధుతా అనంతసస్య ఫలదామతశ్శాంతిం ప్రయచ్ఛమే ।। భూమిదానము చేసినవాడు రాజుగా జన్మించును.

ටිරයක් ඩත්කා

ద్వితీయదినే అర్యష్ణరూపిణీ, పరమాత్మపతీయే, వస్త్ర, లవణ, గో, రత్న దానానికరిప్యే ఉప్పు, వస్త్రము, ఆవు, రత్నములు, దానములు చేయవలయును.

සමජිතාවූ කුකුූගරේුත්

న్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

వస్త్ర దానం

శ్లోగు శీతవాతోష్ణ సంత్రాణం లజ్జయాఃరక్షణంపరం, దేహాలంకరణం వస్త్రమతశ్శాంతింద్రయచ్ఛమేగి (వసులోక ప్రాప్తి)

වක්ස වෙර

శ్లో బయస్మాదన్నరసాస్సర్వే, స్రపంతి స్వాదుతాం సదా, లవణంత్వాస్యదాస్యామి, భీతోహం భవసాగరాత్ ॥ (లావణ్య ప్రాప్తి)



గోదానం

శ్లోు। గవామంగేషుతిష్ఠంతి, భువనాని చతుర్దశ, యస్మాత్తస్మాచ్ఛివంమేస్యా, దతశ్శాంతిం ట్రయచ్ఛమే ు (గోలోకం, అఖిలైశ్వర్య ట్రాప్తి)



ರತ್ನದಾನಮು

శ్లోగి యస్మాత్స ర్వేషు రత్నేషు, దేవాస్సర్వేవసంతిచ, రత్నదానేన మేశాంతిం, సంప్రయత్నంతుమే సదా గి (సామ్రాజ్య ప్రాప్తి)

කාංයත් ධන්කා

బెల్లము, కూర, గుఱ్ఱము, ఫలము, దానము చేయవలయును. తృతీయే దినే, త్వష్టాత్మక, పరమాత్మ ప్రతీయే. గుడ, శాక, అశ్వ, ఫలదానాని కరిష్యే.

గుడదానం

శ్లో। రసానామపిసర్వేషాం, (శేష్ఠమిక్షురసం స్కృతం, యస్మాత్తస్మాత్పరాం[పీతి, అతశ్శాంతిం ప్రయచ్ఛమే ॥ (కుబేరునివలె ఐశ్వర్యవంతులగుదురు)

శాకదానం

శ్లో। శక్యతేన్నమనేనాత్తుం, తేనశాక ముదాహృతం, దదామి బ్రాహ్మణాయైత చ్ఛాకం శోకవినాశనం ॥ (ఇంద్రసమత్వ ప్రాప్తి)



అశ్వదానం

శ్లోగు అశ్వోహి వాహనం భానోః, శరణంహి శతక్రతోః త్వత్పసాదేనమే భూయాల్లక్ష్మీసౌఖ్యం నిరంతరం గు (అశ్వినీలోక ప్రాప్తి)

ස පෙන්නවූ කුකු,ගරේ_ම්

న్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

ఫలదానం

శ్లోగి ఫలం మనోరథఫలం, పుత్రపౌత్ర ప్రవర్ధనం సత్సంతాన సమృద్ధ్యర్ధం, అతశ్శాంతిం ప్రయచ్ఛమే గి (బృందావన ప్రాప్తి)

నాల్గవ దినము

నెయ్య, నూనె, తేనె, పాలు దానము చేయవలయును.

ఆజ్యదానం

శ్లోగి కామధేనోస్సముద్భాతం, సర్వ త్రుషు సంస్థితం. దేవనామాజ్య మాహార మతశ్శాంతిం ప్రయచ్చమే 11 (దీర్వాయుప్రాప్తి)

తైలదానము

శ్లోగు తిలతైలసముద్భాతం, సర్వారిష్టనివారణం తుష్టిదం బలదం యస్మాదతశ్వాంతి మ్రామచ్చమే గా (నరకము చూడదు)

మధుర దానం

శ్లో । నానాపుష్పరసోద్భుతం, శత్రూణామరి వల్లభం దానేన మధునాసమ్మక్, మమపాపం ప్రణశ్యతు ॥ (వైకుంఠ ప్రాప్తి)

క్షీరదానం

శ్లోగి ప్రాణినాం జీవనం క్షీరం, పితృ దేవ ప్రియంసదా, శాంతిదం పుష్టిదం యస్మా దతశ్శాంతిం ప్రయచ్చతు గి (సుఖహెఖ్యములు ప్రాప్తి)

అయిదవ దినము

ధాన్యపు బండి, దున్నపోతు (లేక గేదె) ఎద్దు, నాగలి, దానములు చేయవలయును. 5. పంచమదినే, వివస్వుదూపీ. పరమాత్మ (ప్రీతయే, ధాన్య శకట, మహిష వృషభహలదానాని కరిష్యే.

ధాన్య శకట దానం

శ్లో။ వాహయోగ్యం రథంభుక్తియు ముక్తి[పదమభీష్టదం దదామి ధాన్యసంపూర్ణ మహం విష్ణో: సుతుష్టయే ৷৷ (స్వర్గ సుఖములు [పాప్తి)

మహిషదానం

శ్లో। యమవాహీచమహిషీ, మృత్యురూపేణసంస్థితా, సర్వవ్యాధిహరానిత్య మతశ్శాంతిం ప్రయచ్ఛమే ॥ (గంధర్వ లోకము చేరుదురు)



ස ලජිකාල කුකු ලැරු

త్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్య (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్యాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

వృషభదానం

శ్లో। వృషభోధర్మ ఏవస్యా న్మహాదేవ ట్రియస్సదా ప్రదానే నాస్యపాపానాం శాంతిరస్తు సదామమ ।। (కైలాసప్రాప్తి)

హలదానం

శ్లో। యుగరజ్జు సమాయుక్తం, లాంగలంజీవనం స్మృతం, బలరామయుతం యస్మాత్రప్రయచ్ఛామి ద్విజాతయే ।। (ఈశ్వరుదీకి ప్రియుడు అగును)

ಆರವ ದಿನಮು

ఔషధము, కర్పూరము, కస్తూరి, మంచిగంధము, దానములివ్వవలెను. షష్టే అరుణరూపే, పరమాత్మ, ట్రీతయే, ఔషధ, కర్పూర కస్తూరీ హరిచందన దానానికరిష్యే.

ఔషధదానం

శ్లోగి ప్రాణినాం జీవనోపాయం, సోమేనోత్సాది తాపురా, ఔషధంత్వాం ప్రదాస్వామి. తేనాహంస్యాన్నిరామయఃగి (ఆరోగ్య ప్రాప్తి)

కర్నూరదానం

శ్లోగు కర్పూరం రుచిరం విడ్రగృహాణేమం సుపూజితం పుణ్యగంధఫలం, మేస్యాలక్ష్మీ సంప్రియతాంసదాగి (లక్ష్మీలోక ప్రాప్తి)

కస్తూలీదానం

శ్లోగు కస్తూరీ భాగ్యదోభవ్యా – దేవమర్త్య ట్రియంసదా దానేన సుఖదం భాగ్యం శాంతి శ్చాస్తుసదామము గు (గంధర్వలోక ప్రాప్తి)

చందనదానం

శ్లో। గంధం హృష్టంమృదుసదా తాపఘ్నం హర్షవర్ధనం – సర్వదేవట్రియంయస్మా దతశ్శాంతిం ప్రయచ్ఛమే ।। (చంద్రలోక ప్రాప్తి)

බ්යක් ඩත්කා

ఇల్లు, పీట, పక్క పల్లకీలు దానము చేయవలయును. శయ్యాందోళికా దానాని కరిష్యే.

గృహదానం

శ్లో।। దేవాదీనాం నివాసంత్వం – ప్రాణినాం శరణం తథా తదామే (శమవిశ్రాంత్ర్య గృహం సోపస్కరం భవ ।। (దీర్వాయుప్రాప్తి)





සමජිතාවූ කුකුූගරේුත්

శ్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్య (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.పీ, జ్యోతిష్యమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

గృహదానము చేయునపుడు ఇంటి ముందర దానము చేయవలయును. అలంక రించిన యింట్లో మ్రవేశ పెట్టవలయును.

శ్లో సోపస్కరం గృహం ట్రవేశయేత్-దేహళీ సమీపే దానం కుర్యాత్.

పీఠదానం

శ్లోగా విష్టరం అ్రహ్మదైవత్యం యోగసాధన ముత్తమం పీఠం త్వాహం ప్రదాస్వామి సుఖమస్తు సదామమ గా (సింహాసన ప్రాప్తి)

శయ్యదానం

శ్లో బాస్మాద శూన్యం శయనం – కేశవస్య శివస్యచ తథా మయాప్యశూన్యం స్యాచ్ఛయనం జన్మజన్మని ॥ (సర్వకామ్యములు తీరును) తెల్లని కంబళి దుప్పటి పరచి శయ్యాదానము చేయవలయును.

බතිබාර්ත් ධත්තා

గంధపుచుక్క, పువ్వులు, దుంపలు, అల్లము దానము చేయవలయును.

గంధ (దారు) దానం

శ్లోగి మలయాద్రి సముద్భాతం – సరంభూరుహ నాయకం గంధదారు ప్రదాస్యామి – విష్ణు [ప్రీతికరం శుభం గి (గాంధర్వలోక ప్రాప్తి)

పుష్పదానం

శ్లో। మనోహరాణి పుష్పాణి, సర్వదేవ ప్రియానిచ అతస్తేషాం ప్రదానేన సౌమనస్యం భవేన్మమ ॥ (ఇంద్రుడితో కలసి ఉందుట)

මී කූ ඩක් ඩක්කා

డ్రాద్ధము, పిండదానము, దాసీదానము, కన్యాదానము చేయవలెను. నవమేదినే, ఇంద్రరూపీ – పరమాత్మ – ప్రీతయే – డ్రాద్ద పిండదాన, దాసీదాన కన్యాదానాని కరిష్యే..

కన్యాదానము

శ్లోగు త్వంగౌరీ శంకరాయాస్త్మెవరాయ విని వేదితా దేవసంతతి వృద్యర్థం కన్యేవాంఛిత మస్తుమే. (స్వర్గలోక ప్రాప్తి)

ත්රක් ධන්නා

హరిహరపూజ లక్ష్మీపూజా, నదీపూజా, గౌరీపూజ చేయవలయును. దశమదినే, పర్జన్యాత్మక పరమాత్మ (ప్రీతయే హరిహరపూజా లక్ష్మీగౌరీ నదీ పూజాచ కుర్యాత్, శాక

ස පෙන්නවූ කුකු,ගරේ_ම්

త్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్య (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.పీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

సాలగ్రామ పుస్తక దానాని కరిష్యే.

లక్ష్మీ గౌరీ నదీ ప్రతిమలు చేయించి వానిని పూజించి బ్రాహ్మణునకు పూజా ప్రతిమను దానమీయవలయును.

శాకదానం

శ్లో। శక్యతేస్నమసేనాత్తుం తేన శాకము దాహృతం దదామి బ్రాహ్మణాయైతచ్చాకం శోనవినాశనం ॥ (ఇంద్రలోక ప్రాప్తి)

పుస్తకదానం

శ్లోగి బ్రహ్మా వక్త్రస్థితాదేవి స్మృతిరూపీ మహేశ్వరీ మద్వాచి సర్వదానాట్యం కురుపద్మాసన స్థితా గి (సర్వసుఖ (పాప్తి)

ත්රපිංරයක් ධන්කා

ఏనుగు, అశ్వము దాసి సర్వదానములు చేయవలయును. ఏకాదశదినే విష్ణరూపీ పరమాత్మాస ముద్దిశ్య గజాశ్వాది సర్వదానాని కరిష్యే. ఫలం – గజాశ్యరథదానంచ దాసీదానం విశేషతః దానం కృత్వాతు ధర్మాత్మా రాజరాజో భవిష్యతి.

්රලුරයක් ඩත්කා

తిలలు షోడశమహాదానములు చేయవలయును. మేకదానం చేయవలయును.

తిలదాన ఫలం

శ్లో బ్వాదశదినే పరమాత్మ బ్రీతయే తిలాజాది షోదశమహాదానాని కరిష్యే ఫలం – తిలదానేన సర్వాపద్విని వారయతిద్దువం



(బంగారము, వెండి, ధాన్యము, భూదానము) **భూదాన మహిమ** (సంక్షిప్తముగ) నారద మహర్షి భీష్ముల వారికి వినిపించిన విషయము



పూర్వము ఒక ట్రాహ్మణ అగ్రహారమునకు దుర్మార్గుడు, నిర్దయుడు, కామాంధుడైన గ్రామాధికారి యుండెను. అతడు తన దుర్మార్గముతో ట్రాహ్మణుల భూములను అవహరించి, స్ర్మీలను మానభంగపరచుచూ, తనకెదురు లేదని దుర్మార్గముతో చరించుచుండెను. ఆ

ස පෙන්න කුරු පැරුත්

న్రీ చిలకమల్లి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్య (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

మంటలలో పడికాలిపోయెను.

దుర్మార్గముతో సజ్జన, ట్రాహ్మణుల ద్రవ్యము, భూమి మొదలైనవి కొనుటయే భయంకరమైన విషము. వాస్తవముగా విషము ఒకరినే చంపును. సజ్జన, ట్రాహ్మణ ద్రవ్యము అపహరించినవాని ముందు మూదు తరములవారు, తర్వాత మూదు తరములవారు నరకములోబడి యాతనలు అనుభవించెదరు, చనిపోయిన గ్రామాధికారి నరకములో అనేక యాతనలు అనుభవించుచుండెను.

కొంతకాలమునకు ఆ గ్రామాధికారి వంశములోని పురుషుడు గంగానది పుష్కర సమయములో భూదానము చేయుట వలన ఆ గ్రామాధికారి వారి ముందు తరముల వారు నరకము నుండి విముక్తి పొందిరి.



ටිරයක්රි සං ජර්

(ఉప్పు, వస్త్రము, ఆవు, రత్నములు) గోదాన మహిమ (సంక్రిప్షముగ)

ఓ భీష్మా! పూర్వము కల్యాణకటకమును వరేణ్యుడను రాజు పరిపాలించు సమయంలో గంగాపుష్కరములు వచ్చినవి. మహారాజుగారు సపరివారముగా గంగా పుష్కరస్నాన మొనరించి నిర్దేశించిన దానములతో బాటు ఒక బ్రాహ్మణుడికి పాద్రపక్షాళనాది కృత్యములనంతరము గోదానము చేసెను. గోవుతోబాటు కుడితికి గంగాళము, చెంబు సంవత్సరమునకు సరిపడు గడ్డి, ధాన్యము గూడ ఇచ్చెను. ఆ సమయములో దెబ్బతిని కొసప్రాణములతో యున్న పావురము మహారాజుగారి ఒడిలో పడెను. మహారాజుగారు పళ్ళెములో "గోదానం తుభ్యమహం సంప్రదదేనమమ" అని నీరును పావురము నోటిలో పోయుచూ, పాద్రప్రక్షాళన మొనర్చిన నీటితో పావురమును కడిగి సేద తీర్చెను. జాతస్య హిద్రువోమృత్యుః సృష్టిలోని యదార్ధము, రాజుగారి చేతులలోనే పావురము దేహము చాలించెను. పావురము యాతనా శరీరమును యమకింకరులు తీసుకొని వెళ్ళుచుండగా, గోలోక దూతలు వారిని ఎదిరించి పావురము యాతనాశరీరమును తమ లోకమునకు తీసుకొని వెళ్ళెను. పావురము క్రితం జన్మలో ఒక స్ర్మీగా జన్మించి అధర్మవృత్తిలో అనేక పాపములొనర్చి దేహానంతరము నరకములో కొన్ని సంవత్సరములు వివిధరకముల నరకములనుభవించి పావురముగా జన్మనుబొంది, గంగాపుష్కర సమయములో గోదానము కొరకు వదలిన నీరు త్రాగి, ప్రక్షాళన నీటితో శరీరము తడిసినందున ఉత్తమగతి బొందెను. "గవామంగేషు తిష్టన్తి భువనాని చతుర్ధశ" గోవు శరీరములో పదునాలుగు లోకములు ట్రతిష్టింపబడినవి.

සలకమేల్ల పుష్కరార్మన్

త్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద



් කාං**ශ්**ක්රි ්ස ජ්රා

(బెల్లము, కూరలు, గుర్రము, ఫలములు) **ఫలదాన మహిమ** (పండ్లు)

శ్రీ నారద మహర్షి భీష్ముల వారితో ఫలదాన మహిమను వినిపించెను.

పూర్వము భద్రముఖుదను బ్రాహ్మణుడు గలడు. సత్యము పలుకుచూ సనాతన ధార్మిక ప్రవృత్తితో కాలము గడుపుచుండెను. ఒకసారి గంగా పుష్కరములు 3వరోజు విధివిధానముగా చింతామణి అను పేరు గల బ్రాహ్మణునికి గుమ్మడిపండ్లు దానము చేసెను. అనంతరము సమారాధనలో భోజన సందర్భమున గుమ్మడిపండ్లు కూర చేసి వడ్డించిరి. ఒక బ్రాహ్మణుడు రుచిగా యున్నదని గుమ్మడిపండు కూర అమితముగా తిని చేతులు కడుగుకొను సమయమున కూరతో సహా వాంతి చేసుకొనెను.

ఆ సమయమున ఒక కుక్క వాంతిలో పడిన ఎంగిలి గుమ్మడి పండుకూర ముక్కలను తిని, దైవ యాగమున అచటనే మృతినొందెను.

వెంటనే ఆ కుక్క శరీరము నుండి ఒక దివ్యకాంతి వెలువడి, గుమ్మడిపండు దానమొనర్చిన భద్రముఖనితో, ఆర్యా నేను మీ ఫూర్వీకుల తరములో 18వ పురుఘడను. ఒక అన్నస్థతమునకు అధికారిగా యుంటూ, తెలియక పొరబాటున స్థతము ద్రవ్యము గ్రహించినందు వలననేమో, ఒకవెయ్యి సంవత్సరములు నరకమనుభవించి తదుపరి ఐదువందల జన్మలు గాడిదగా, నూరు జన్మలు పురుగులుగా, నాలుగు వందలు కుక్క జన్మలుగా బొంది, నేడు నీవు చేసిన గుమ్మడి పండు దానము వలనను, ఆ గుమ్మడిపండు ముక్కలు రసమును రుచి చూచినందున దివ్యదేహము నొందితినని చెప్పి స్వర్గలోకమునకు వెళ్ళెను.

నాల్గవరోజు కథ

(నెయ్మి, నూనె, తేనె, పాలు) తిలతైలదాన మహిమ (నువ్వులనూనె)

శ్రీ నారద మహర్షి, శంతనపుత్రా తిలతైలదాన మహిమ శ్రద్ధగా వినవలసినది. పూర్వకాలమున కృష్ణమిశ్రుడను పండితుడు గంగా నదీతీరమున గల ఒక గ్రామములో యుంటూ, పురోహిత ధర్మము నెరవేర్చుచూ గౌరవముగా కుటుంబము గడుపుకొను చుండెను. కాలక్రమమున వయస్సు పెరుగుచున్నది. గానీ వీరికి సంతానము కలగలేదు. కొన్నాళ్ళకు కృష్ణమిశ్రునికి భార్యావియోగము కలిగినది. భార్యావియోగము ఆయనకు దుర్బర జీవితముగా యున్నది.

"భార్యావియోగశ్చ వినాగ్నినాదహతికాయమ్" అని శాస్త్రవచనము. సంతానా

త్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

పేక్షబలీయముగా నున్నందున 13 సంవత్సరములు వయస్సు గలిగిన చంద్రముఖి అను పేరు గల అందమైన అమ్మాయిని వివాహము చేసుకొని, ఎక్కువ సమయము ఇంటియందు భార్యతో గడుపుచూ, తన పురోహిత పనులకు వామనుడను సన్నిహిత బంధువును సహాయకునిగా యుంచుకొనెను. అనుకోకుండా ఆ గ్రామములో కలరా వ్యాధి వచ్చెను. కలరా సోకి కృష్ణమి(శుడు కాలము చేసెను. యౌవనములో యున్న చంద్రముఖికి, తన ఇంటిలో పురోహితకార్యములలో సహాయకునిగయున్న యౌవనములోయున్న వామనుడే అన్ని విధముల దిక్కయ్యెను. కొన్ని దినములకు వామనుడు వివాహము చేసుకొని తన భార్యతో వేరుగా కాపురముండెను. యౌవనములో యున్న చంద్రముఖి వామనుని వియోగము భరించలేకపోయెను. ఇంతలో గంగా పుష్కరములు వచ్చినవి నాల్గవరోజు చంద్రముఖీ వామనుని పిలిచి (పేమతో పాలు యిచ్చి, సమంత్రకముగా కొత్తపాత్రలో నువ్వులనూనెపోసి, దానము యిచ్చెను. దైవయోగమున కొద్ది కాలమునకే ఆమె మరణించెను. పాలు, నువ్వుల నూనె దానమహిమచే దేవదూతలు యమకింతకరులను ధిక్కరించి స్వర్గలోకమునకు చంద్రముఖి సూక్ష్మ శరీరమును (యాతన) తీసుకొని వెళ్ళిరి.



(శకటము, వృషభము, మహిషము, హలము) వృషభదాన మహిమ (సంక్రిప్తముగ)

నైమీశారణ్యములో రోమహర్షణుని కుమారుడైన సూతమహర్షిని శౌనకాది మహర్నులు అర్హ్య పాద్యాదులతో గౌరవించిన పిదప, ఓ సూతమహర్షి వృషభదాన మహిమ వినిపింపమని గోరెను. సూతమహర్షి వారి కోరికను మన్నించి ఓ శౌనకాదిమునులారా పూర్వము ఛందుడు అను రాజు కర్నాటక దేశములో సింహనగరమును రాజధానిగా చేసుకొని పాలన చేయుచుండెను. పేరుకు తగినట్లు చందుడు హంతకులు, దొంగలు, త్రాగుబోతులు, జూదరులకు ప్రాపకమిచ్చి అనేక చిత్ర, విచిత్ర హింసలలో సజ్జనులను, స్త్రీలను బాధించు చుండెను. కాలాంతరమున చందుడు చనిపోగా, యమకింకరులు వాని యాతనాశరీరమును రౌరవాది నరకములలో బడ్మదోసిరి, వేల సంవత్సరములు గడిచినవి దైవయాగమున చందుని వంశములో ప్రతీపుడను పేరు గల పురుషుడు జన్మించి తన పూర్వీకుల చరిత్రలను ఆసక్తిగా తెలుసుకొనగా, చందుని దుష్పరిపాలనబాధగా దోచి అతను ఏ రూపములో ఎచట యున్నను శాంతిని కలిగింప సంకల్పించెను. అనుకోని విధముగా గంగా పుష్కరములు వచ్చినవి 5వరోజు సమ్మస్షకముగా వృషభదానము చేసెను. వెంటనే వృషభ దానమహిమచే నరకములో యున్న చందుడు విముక్తి పొంది దివ్య రూపముతో కైనాలసమునకేగెను

සමජිතාවූ කුකුූගරේුත්

త్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.వీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద



ఆరవరోజు కథ

(ఔషధము, కర్పూరము, కస్తూరి, చందనము) కర్పూరదాన మహిమ

అగస్త్య మహర్షి ద్వారా వశిష్ట మహర్షి కర్పూరదాన మహిమను విని, గంగా పుష్కరములో 6వరోజు కర్పూరదానము చేసెను. ఆ సమయమున అచటికి వచ్చిన శిబి చక్రవర్తి వశిష్ట మహర్షి ద్వారా కర్పూ దానమహిమను విని, ఆచరించెను.

పూర్వము గంగానదీ తీరమున, మలయవతి అను గ్రామములో రామదీక్షితుడను పండితుడు గలడు. ఆ పండితుడు ఒక పర్యాయము గంగాపుష్కరములలో 6వరోజు ఒక బ్రూహ్మణునికి విధివిధానముగా కర్పూరదానము చేసెను అనంతరము పళ్ళెములోని నీటిని బయటకు దెచ్చి చల్లగా (పాదములు కడిగిన నీరు, దత్తము చేయుచు వదలిన నీరు) కొంత నీటి బిందువులు, బయట పందిరిగుంజతొర్రలో, పాముచే ముంగబడుచున్న చిట్టెలుక నోటియందు శరీరము పైబడెను. ఎలుక వెంటనే మరణించుట వలన విష్ణదూతలు వచ్చి, యమకింకరులనెదిరించి ఎలుక యాతనా శరీరమును తమరథముపై పెట్టుకొని వెళ్ళిరి. ఆ సమయములో విష్ణదూత అగు విజయునితో చిట్టెలుక వినయముతో నాకీ యోగము ఎట్లు వచ్చినది నా పూర్వజన్మ వృత్తాంతము తెలిసిన తెల్పమని గోరెను.

నీవు నాలుగు జన్మల క్రితము, మలయవతిగ్రామములో రామదీక్షితుని వంశములోని ఆదపడుచువు. చిన్న వయసులో భర్త చనిపోవుటచే పుట్టినింటిలో యుంటూ వదినెలు, మరదళ్ళపై లేనిపోని చాడీలు సోదరులతో చెప్పచూ, రాత్రులందు శయన గృహములందున్న దంపతులను, వారి క్రీడలను రహస్యముగా చూచుచూ, గృహముందలి సుగంధ ద్రవ్యములు అత్తరు పన్నీరు లాంటివి దొంగిలించి ఇతరులకు రహస్యముగా ఇచ్చెడిదానవు. కాలక్రమమున దేహముచాలించి నరకములో అనేక రకముల నరకములనుభవించి, తర్వాత ఎలుక జన్మ బొందితివి. నేడు గంగాపుష్కరముల 6వరోజుల కర్ఫూరదాన సందర్భమున పాద్రప్రక్షాళన చేసిన నీరు, దానము కొరకు వదలిన నీరు అవసాన దశలో నీనోటిలో, శరీరము పైబడినందున నీకు ఇటువంటి యోగము కలిగినదని విష్ణ దూత విజయుడు ఎలుకతో చెప్పెను.



ඛ්යක්රි ස ජූණු

(గృహ, పీఠ, శయ్య అందోళి $\overline{\mathsf{s}}$) గృహదానము

శ్రీ నారద మహర్ని త్రిలోక సంచారి. ఒక పర్యాయము భూలోకములో సంచారము జేయుచు మాల్యవంత ప్రాంతమున ఒక విచిత్ర సంఘటన చూచెను.

సాయంసమయమున ఒక తాటిచెట్టు సమీపమున దివ్యవిమానము వచ్చెను. దేవదూతలు విమానము నుండి ఒక దివ్యపురుషునిదించి, అతని శరీరము నడుము,

త్రీ చిలకమల్లి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త, (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

శరీరము ముద్దగాచేసి, అచటగల ఒక తాటిచెట్టు తొర్రలో ఇరికించి, దేవదూతలు విమానముపై ఎక్కి వెళ్ళిరి. తిరిగి సూర్యోదయ సమయములో దివ్యవిమానము అచట దిగెను. అందున్న దేవదూతలు, తాటిచెట్టు తొర్రలో యిరికించిన దేహము ముద్దను బయటకు లాగి అమృతరసం చిలికించిరి. ఆశ్చర్యము! ముద్దగా యున్న ఆ దేహము దివ్య పురుషునిగా మారెను, తిరిగి విమానములోనికి వెళ్ళి బయలుదేరు సమయములో నారద మహర్షి అచటికి వచ్చెను. దూతలు, దివ్యపురుషుడు నారదమహర్షికి నమస్మారములు చేసిరి. అప్పుడు నారదమహర్షి రాత్రి సంఘటన, ఉదయము జరిగిన సంఘటన నేను చూచితిని. ఈ విధముగా చేయుటకు కారణమేమని దేవదూతలనడిగెను. దేవదూతలు ఇట్లు చెప్పిరి. ఈ దివ్యపురుషుడు భూలోకములో విశ్వావసు మహారాజు నత్యవాక్పరి పాలకుడు, జితేంద్రియుడు నిరంతర దానధర్మశీలి, శ్రీదత్తాత్రేయ మహర్షి శిష్యుడు, అన్ని దానములు చేసినప్పటికి గృహదానమెవ్వరికి చేయ ఆసక్తి చూపలేదు. కాలక్రమేణా అతను గతించి స్వర్గలోకములో అన్ని సుఖములు అనుభవించుచు గృహాదానలేమిచే స్వర్గమందు శయనించుటకు అవకాశము లేనందున నీవిధముగ జేయుచుంటిమి అని దేవదూతలు మహర్షితోచెప్పి, దివ్యపురుషునితో విమానములో వెళ్ళిరి.

లోకోపకారపారీణులగు నారదమహర్షి, విశ్వావసు మహారాజు వంశములో 16వ పురుషుడైన చంద్రచూడ నరేంద్రుని దగ్గరకు వెళ్ళితాను చూచిన వృత్తాంతము చెప్పి, గంగాపుష్కరములలో 7వరోజు విశ్వావసు మహారాజు పేర గృహదానము జేయంచెను.ఈ గృహదాన మహిమ వలన విశ్వావసు మహారాజు రాత్రియందు స్వర్గములో యథేచ్ఛగా నుండెను.

ಎಸಿಮಿದವ ರಿ⁸ಜ್ ಕಥ

(గంధము, పువ్వులు, దుంపలు, అల్లము) ఆర్థకదానమహిమ (అల్లము)

కైలాసాధిపతి తన అర్ధాంగియగు పార్వతి మరియు వీరభద్ర భద్రకాళి దంపతులకు వినిపించిన ఆర్ధకదాన ఫలము. పూర్వము దండకారణ్య ప్రాంతమున శృంగబేరమను గ్రామములో భద్రవతి యను వనిత గలదు. ఆ వనిత తన జీవితమంతయు చెడు నడతతో విహరించెను. పుణ్యవశమున గంగానది పుష్కరములో 8వరోజు అనారోగ్యముతో యున్న ఒక యాత్రికునికి వైద్యం నిమిత్తము అల్లము దానము చేసెను. దైవయోగమున కొద్ది కాలమునకే ఆ వనిత కాలధర్మము నొందెను. అల్లము దానము చేసినందున ఆ వనిత గంధర్వలోకము బొందెను.

ිණිකූත් හිස ජග්

ස පෙන්න කුරු පැරුත්

త్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్య (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.వీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

విద్యాభ్యాసము చేయుచుండిరి. విద్యాభ్యాస కాలములో ద్వాదశ వర్ష క్షామము ఏర్పడెను.పశు పక్ష్యాదులు, గోవులు సైతము ఆహారము, నీరు లేక వరునగా ప్రాణములు పోగొట్టకొను చున్నవి. చివరకు సుతపమహర్షి ఆశ్రమములో సోమధేనువులలో ఒక్క గోవు మాత్రము చిక్కి శల్యావస్థలో అవసాన దశకు చేరినది. సుతప మహర్షి శిష్యులు నలుగురు హూమమునకు క్షీరమునిచ్చే ఆ గోవును మోసుకొని ఎచటనైనా గడ్డి గల చోటకు తీసుకొని పోయివచ్చుచుండిరి. అనుకోని విధముగా పుష్కరములు 9వరోజు అడవిలో ఆ గోవు కొన ప్రాణములో యున్న సమయములో ఆపద్ధర్మముగా ఆ నలుగురు సోదరులు (శిష్యులు) ఆ గోవు మాంసముతో పితృదేవతల (ప్రీతిగా విశ్వదేవతల (ప్రీతిగా శాస్త్రీయముగా డ్రాద్ధము నిర్వహించిరి. (వారేకర్త భోక్తలుగా) తాము చేసిన పని మహాపాతకమని పశ్చాత్తాపముతో గూడినవారై గురువుగారి యొద్దకు వెళ్ళి గోవు మరణించినదని సంస్కారము చేసి వచ్చుచుంటిమని బొంకిరి. కాలచక్రములో కొంతకాలమునకు ఆ నలుగురు సోదరులు కాల ధర్మము బొందిరి. ఆ నలుగురొనర్చిన పాతకమునకు వారు.

దశార్ణ దేశములో 7 జన్మలు కిరాతులుగా బుట్టి, లోకహితార్థముగా పింద్రపదానము చేసినందున పూర్వజ్ఞానస్మృతితో ధర్మబద్ధముగా జీవితము గడిపిరి.

అనంతరము కాలాంజన పర్వతమందు జింకలుగా పుట్టిరి. పింద్రప్రదాన మహిమ వలన పూర్వజ్ఞాన స్మృతితో ధర్మమార్గములో చరించిరి.

అనంతరము శరద్వీపమందు చక్రవాక పక్షులుగా బుట్టిరి. ధర్మమార్గముతో పూర్వ జ్ఞానము పెంపొందెను.

పిండ ప్రదాన మహిమవలన పూర్వజన్మస్మృతి ఉత్తమజన్మలు చివరకు బ్రహ్మెక్యము బొందగలరు.



పదవరోజు కథ

(ప్రతిమలదానము, శాకము, సాలగ్రామము, పుస్తకదానము)

సాలగ్రామదాన మహిమ

గంగానదీ తీరమున ఒక దురాచారుడు దుర్మార్గ వృత్తితో ద్రవ్యము సంపాదించు చుండెను. ఒకనాడు ఒక బ్రాహ్మణునికి యిచ్చిన బాకీ రాబట్టుకొనుటకు వెళ్ళెను. ఆ బ్రాహ్మణుడు ఒక నెల రోజులలో తప్పక యిచ్చెదను అని వేడుకొనెను. అయినను ఆ దుర్మార్గుడు ఆ బ్రాహ్మణుని తన్ని తన చేతియందు గల కత్తితో ఝుళిపించెను. దురదృష్టవశాత్తు ఆ కత్తి తగిలి ఆ బ్రాహ్మణుడు అచటనే చనిపోయెను. ఆ సమయములో అచట ఎవరు లేనందున ఆ దుర్మార్గుడు ఇంటికి వెళ్ళి నిర్భయముగా తిరుగుచు కొన్నాళ్ళకు చనిపోయెను. అనంతరము యమదూతలు అతని యాతనా శరీరమును వివిధ రకముల

සలకమ్ల పుష్కరార్మన్

శ్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్మ (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్టమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

నరక కుండలములలో ద్రోసిరి. కాగుచున్న సీసములో, కాగుచున్న నూనెలో, కాలుచున్న స్తంభమునకట్టుట అసిప్రత వనములో పడవేయుట మొదలగునవి.

ఆ దుర్మార్గుని కుమారుడు ధర్మవీరుడు మంచి పేరు తెచ్చుకొనుచుండెను. ఒకసారి నారద మహర్షి అచటికి వచ్చి ధర్మవీరునితో మీ తండ్రి నరకలోకములో బాధపడుచున్నాడు. గాన వెంటనే సాలగ్రామము దానము చేయవలసినది.

విధి వక్రించింది. ధర్మవీరుడు సాలగ్రామశిలాదానములో ఏమున్నది... భోజ్యం నచ భక్షణం తినే పదార్ధము గాదు శిలాదానం వృథామన్యే సాలగ్రామ శిలాదానము వృర్ధము అని నారదుల వారితో చెప్పెను. కొంతకాలమునకు ధర్మవీరుడు కాలధర్మము నొంది నారదమహర్షి మాట విననందున సాలగ్రామదానమును దూషించినందున నరకమందు అనేక బాధలు పడి తర్వాత మూడుసార్లు పులి జన్మగాను, మూడుసార్లు కోతిగాను, ఐదుసార్లు ఎద్దుజన్మ, పదిసార్లు స్ర్మీగా జన్మించి గత భర్తయై వైధవ్యము బొందెను. అనంతరము ఒక బ్రూహ్మణ పండితునికి కుమార్తెగా జన్మించి, వివాహ వేదికపై వివాహము అయిన వెంటనే భర్త చనిపోయెను. ఆ అమ్మాయి తండ్రి ఇష్టదైవమును తలచుకొని దివ్యదృష్ట్రాతయాకృతం దివ్యదృష్టితో సాలగ్రామ శీలాదానమును దూషించినందున ఇట్లు జరిగినదని తెలుసుకొని వెంటనే అమ్మాయితో సాలగ్రామ శిలాదానము చేయించెను. ఆ మహిమ వలన వివాహ వేదికపై చనిపోయిన భర్త బ్రతికెను. ఈ సాలగ్రామ దానము వలన నరకములో యున్న ధర్మవీరుని తండ్రి గూడా ముక్తిబొందెను.



పదకొండవరోజు కథ (ఏనుగు, గుర్రము, రథము, దాసి)

ఫలం : గజాశ్వరథ దానం దాసీదానం విశేషతః దానం కృత్వాతు ధర్మాత్మా రాజరాజో భవిష్యతి



(పన్మెండవ రోజు కథ

(ನಾಗುಲು, ಮೆಕ, ಫ್ರೆ ಜಕದಾನಮುಲು)

ఫలం: తిలదానేన మహాపాపం వ్యపోహతు

దానము ఇవ్వవలసిన సమయములో ఇచ్చిన నూరు రెట్లు ఫలము కలుగును.

ఇచ్చెదనని చెప్పినప్పుడు తాను అనుకున్న ద్రవ్యమును ఇయ్యవలయును.

ఇచ్చెదనని చెప్పి మరునాడు యిచ్చువాడు అనుకున్న ద్రవ్యమునకు రెట్టింపు ఇయ్యవలయును.

ఇచ్చెదనని మూడవరోజు ఇచ్చువాడు మూదురెట్లు అధికముగా ఇవ్వవలయును.

ස වෙසි කිවු කුරු, ලබර් ුත්

్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.వీ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద



హలిద్వార్

భారతదేశంలో అతి పవిత్రస్థలాల్లో ఒకటిగా పేర్కొనబడింది. శివాలిక్ పర్వత పాదాల వద్ద పావనగంగా కుడివైపు తీరంలో అమరి యున్న పుణ్యస్థలం. సప్త మోక్షదాయక పురాణాల్లో ఒకటి. దీనినే మాయాపురి, గంగాద్వారం అనే నామాంతరాలతో పిలుస్తారు. శైవులు హరద్వార మనీ, వైష్ణవులు హరిద్వారమనీ భక్తిమేర పిలుచుకుంటూ ఉంటారు. మొత్తం మీద హిందువులకు అతి పవిత్రస్థలం ముఖ్య యాత్రాస్థలం. సముద్ర మట్టానికి 1000 అడుగుల ఎత్తు జాతీయ, అంతర్జాతీయ స్థాయిల్లో గొప్ప సుందర నగరంగా ప్రశస్తి పొందింది. మహామహుడైన కపిలస్థాన్ పురాతన ప్రసిద్ధి ఒకప్పుడు ఎంతో విశాలమై మైళ్ళ పొడవున వ్యాపించియున్న మహాపట్టణంగా కీర్తించబడింది. ఈ విషయ అబుల్ఫోజల్ తన గ్రంథంలో రాశారు. ఈయన అక్బరు కాలంలో ఈ పట్టణ సందర్శనం చేశారు. పావన గంగానది హిమాలయ పర్వత లోయల గుండా తన మార్గం సుగమం చేసికొని హరిద్వారా వద్ద సమతల ప్రదేశంలో ప్రవేశిస్తూ (హరి) హరద్వారంగా తన నామాన్ని సార్ధకం చేస్తుంది. ప్రపంచ ప్రసిద్ధి చెందిన కుంభమేశా ప్రతి పన్నెండు సంవత్సరాలకు అవతరించే గంగా పుష్కర సమయంలో విశేషంగా జరుగుతుంది.

బ్రహాక్ష్మికుండు: గంగా తీరస్నాన ఘట్టాలలో అతి పవిత్రమైనది, ముఖ్యమైనది, పావనగంగ శ్రీ మహావిష్ణువు పాద స్పర్శచే పునీతమైన స్వచ్ఛ జలాలు ఇక్కడ ప్రవహించటం ఒక గొప్ప విశేషం. శ్రీహరి పాదాలను నిక్షేపం చేస్తూ ఒక ఆలయం కూడా ఉంది. బిర్లా సంస్థ ఈ రేవును అతి సుందరంగా తీర్చిదిద్ది యాత్రికుల మనో హ్లాదానికి మరింత చేరువ చేశారు. ఈ స్వచ్ఛ జలాల్లో చేపలు తండోప తండాలు, యాత్రికులు వాటికి ఆహారాన్ని వేస్తూ ఆనందిస్తారు. శ్రీ మహావిష్ణువు అవతారాల్లో మత్స్యావతారం కూడా విశేషమే కదా! చనిపోయినవారి ఆస్తికలు ఇక్కడ నిమజ్జనం చేస్తుంటారు. 10-15 సొగసైన ఆలయాలు దర్శనీయాలు. ఇక్కడి ఈ జలాలను పట్టుకుని పవిత్రంగా తీసుకెళ్తారు యాత్రికులు. గంగాతీరంలోని కుశావర్తం దగ్గర (శాద్ధ విధులను యాత్రికులు నిర్వహిస్తారు ముఖ్య మందిరాలు: గంగ, గాయత్రి, లక్ష్మీనారాయణ, ట్రహ్మ, సత్యనారాయణస్వామి, గణేశ ఆలయాలు వగైరాలు. అన్నింటిలోనూ మరీ ముఖ్యమైనవి మయాదేవి, వల్వకేదారు బహాదేవు ఆలయాలు చాలా ముఖ్యం. ఇక్కడ కాషాయ వస్తాలు ధరించిన సాధు పుంగవులు, మునివరులు విశేషంగా దర్శనమిస్తారు.

සමජිකාවූ කුකුුටෘරුක්

త్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

హలిద్వార్ దగ్గరతో చూడదగిన దర్శనీయ స్థలాలు

కన్ఖాల్: హరిద్వార్ స్టేషనుకు 4 కి.మీ. దూరంలో ఉన్నది. చాలా పురాతనమైనది, పురాణ ట్రసిద్ధమైనదిగా ప్రాచుర్యం పొందినది దక్ష యజ్ఞం జరిగిన చోటు, ఇక్కడ దక్ష ట్రజాపతి ఆలయం కూడా ఉంది. పక్కనే సతీకుండం కూడా ఉంది. వీటికి తోదు దక్షిణేశ్వర, మహావీరాంజనేయ ఆలయాలున్నవి. ఇక్కడి గంగా స్నానఘట్టాన్ని అగ్నికుండమంటారు. ముఖ్యమైనది రామఘాట్ చాలా పవిత్రమైనదిగా భావించబడుతోంది.

భీమగోడా: హరిద్వారానికి ఉత్తరంగా సుమారు 2 కి.మీ. దూరంలో ఉన్నది. ఇక్కడి నుంచే పాండవులు మహాడ్రవస్థానం (అంతిమయాత్ర) గావించారని ద్రపతీతి. ప్రాణాయామంతో తమ స్వర్గారోహణం చేశారని భారతకథ చెప్తుంది.

జిల్వకేశ్వరాలయం: ఊరికి పదమరగా చిన్న కొండమీద బిల్పవనాంతరంగా ఉన్న ఆలయం. పక్కనే గౌరీకుండం ఉన్నది. రమణీయమైన ప్రకృతి శోభతో నిండి ఉంది. ఈ చోటనే గృహాంతరంలో దుర్గాదేవి ఆలయం ఉన్నది. దగ్గరిలోనే గంగానదికి ఆవలితీరంలో చండీ పర్వతం ఉన్నది. భయంకరమైన అదవి ప్రాంతం. క్రూరమృగ సంచారం హెచ్చుగా గల ఈ కొండమీదనే చండీ ఆలయం, నీలేశ్వరాలయం, మానసాదేవి ఆలయాలున్నాయి చూదవచ్చు.

ఇంకా ఈ డ్రుదేశంలో దర్శనీయమైనవిగా గంగాజీ మందిర్, గోవూఘాట్, చౌబీస్ అవతార్, మాయాదేవి, ఆశాదేవి, మాయాపూర్, సప్తసరోవర్, నహర్గంగ మొదలయినవి వాసికెక్కాయి





සలకమల్ల పుష్కరార్భస

ලී එව සින්වූ ప్రభాకర చక్రవల్తి අරු (හට చాంగ కర్త)

యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్కమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద









प्रकृति से जुड़ी हुई है गणेशजी की पूजा, मिट्टी से बनी गणेश गूर्ति की पूजा कर विसर्जन करने से मिनता है पुण्य : पॉडित प्रभाकर चक्रवर्ती शर्मी

Engineer-cum-astrologer scripts ʻpanchangam' in English





සිවපිබාවු බාබ්දුටටේ ුබ් ලී එවපිනවු ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

















සිවපිකාවු කිාක්, ගර්ුත් ලී එවපිකවු ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) ගාකි.සිම්, ගාකි.සකි, ණ්‍රීමකුකාලයේ, තත්හු කලු බණරය

















සිවපිතාවු බාබෑ, පැට් ුත් ලී එව පිහවු ప్రభాకర చక్రవల్తి අරු (పంచాంగ కర్త) ගාකි. සිම්, ගාකි. සම්, ණ්ණියු කලුංය, කත්යු කියලු කිෂරය

















చెలకోమ్లై ప్రేష్క్**రెంర్చేసే** శ్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద



සිවපිබාවු බාබ්ූටටේ ුබ් ලී එවපිනවු ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జివ్, జ్యోతిష్ఠమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద

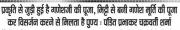


చెలకోమ్ లై ప్పేష్క్ దార్చేసే శ్రీ చిలకమర్తి ప్రభాకర చక్రవర్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.బి.ఏ, జ్యోతిష్ఠమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద



ස පෙන්වලු කුකු, ලංජු ත්

శ్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త్మ (పంచాంగ కర్త)





अब अंग्रेजी में भी धर्मधानी उज्जयिनी का पंचांग

दक्षिण भारतीय विद्वान कालगणना की नगरी पर कर रहे शोध

Book on Godavari Pushkarams released

Highlights significance of 'Puskara Snanam'

ĤANS@INDIA







Engineer-cum-astrologer scripts 'panchangam' in English

युवाओं को ज्योतिष विज्ञान से जोड़ने के लिए अंग्रेजी भाषा में की रचना

दक्षिण भारतीय युवा ने उज्जैन की गणना से बनाया अंग्रेजी भाषा का पहला पंचांग



చెలకోమ్ లై ప్పేష్క్ రార్చేసే శ్రీ చిలకమల్తి ప్రభాకర చక్రవల్తి శర్త (పంచాంగ కర్త) యమ్.టెక్, యమ్.జి.ఏ, జ్యోతిష్మమార్తాండ, వాస్తు విద్యా విశారద







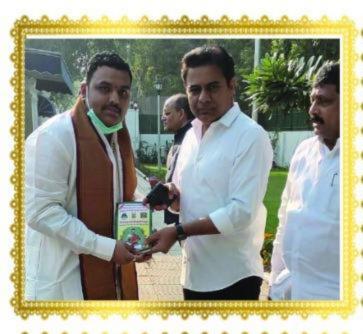






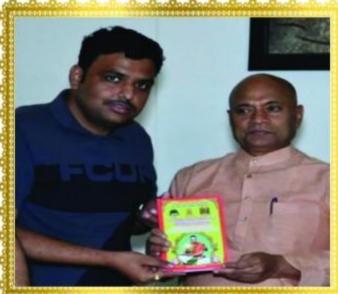


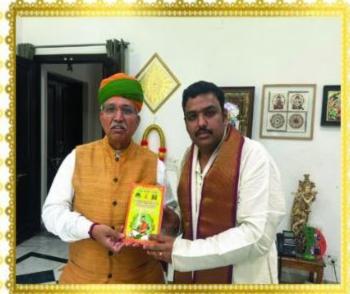




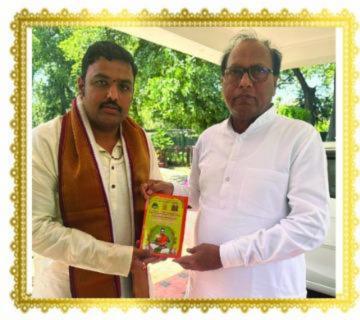




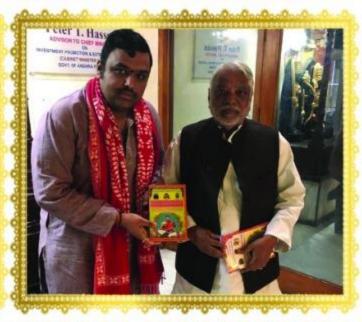






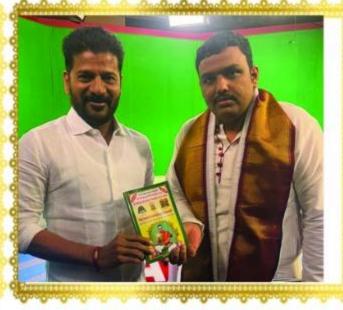


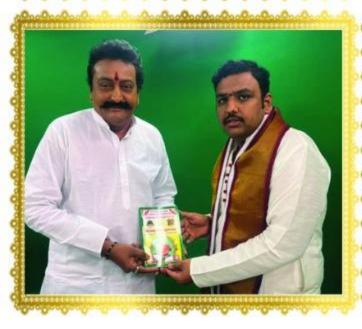






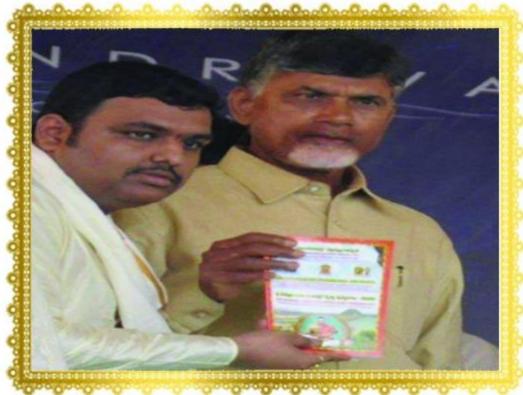




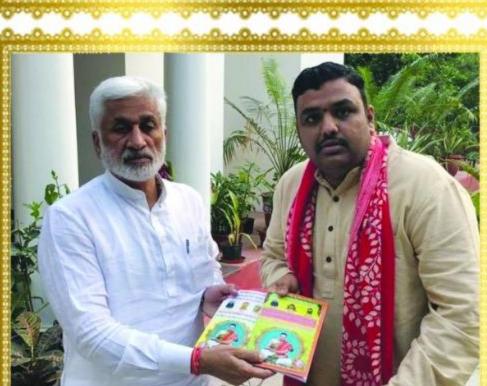


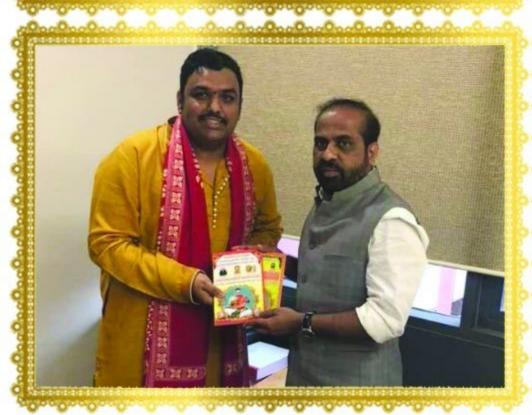










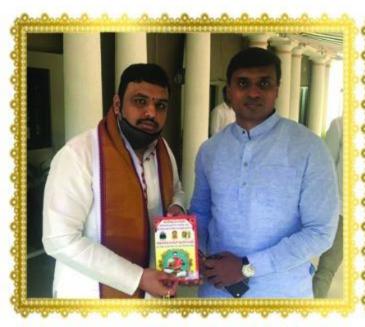




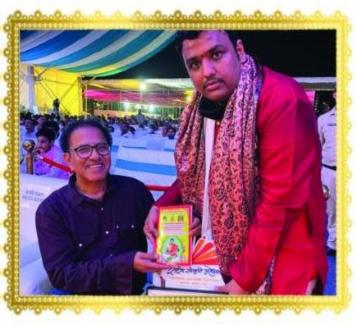




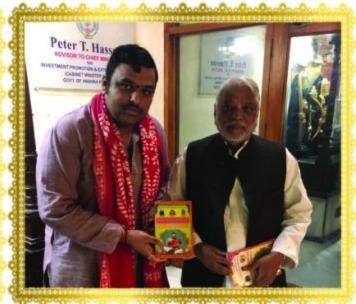








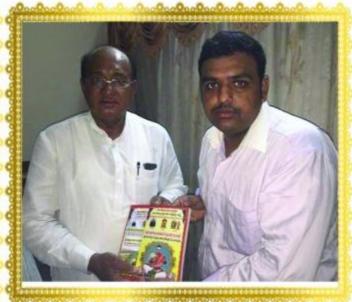














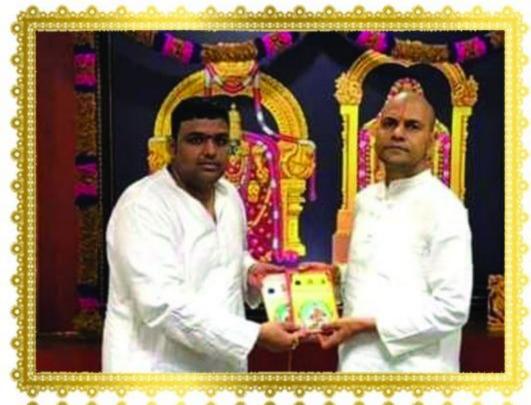








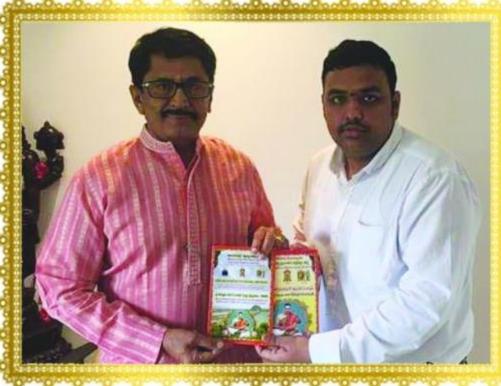


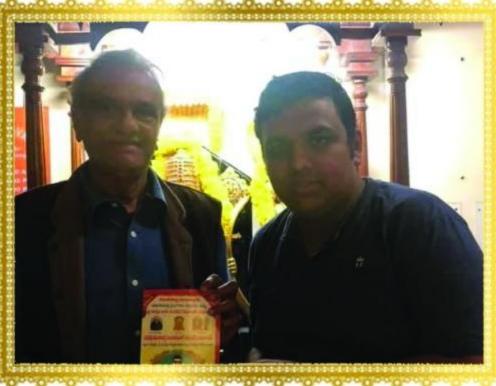






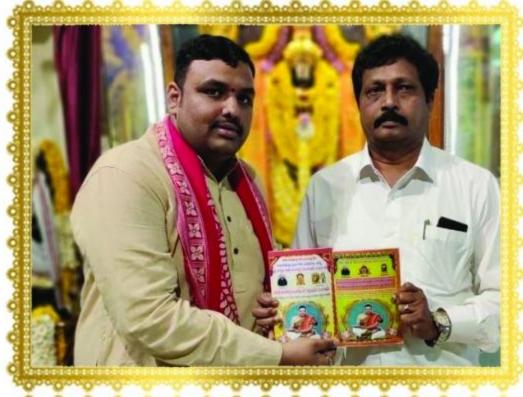


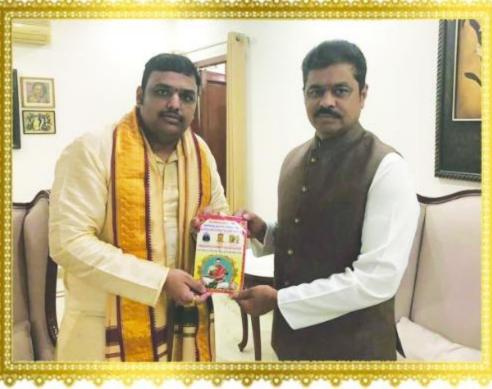




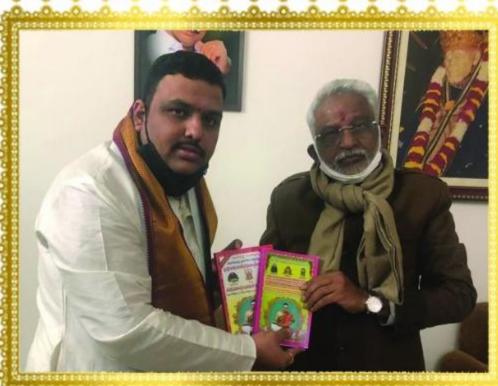


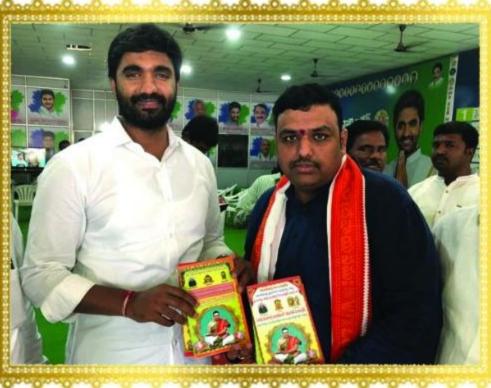






















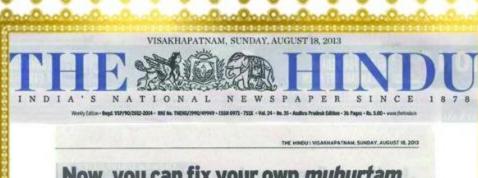












Now, you can fix your own muhurtam



ტიიტიიტიიტი — — — ეიიტიიტიიტიიტიიტიიტიიტიი

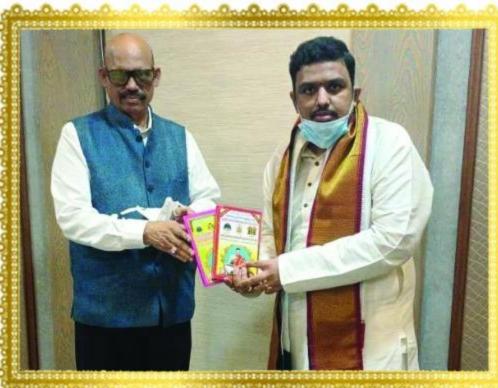
















The property of the property o

of Trements and Sumphian
developments. Weight of
the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of the second sumphian
development of th